

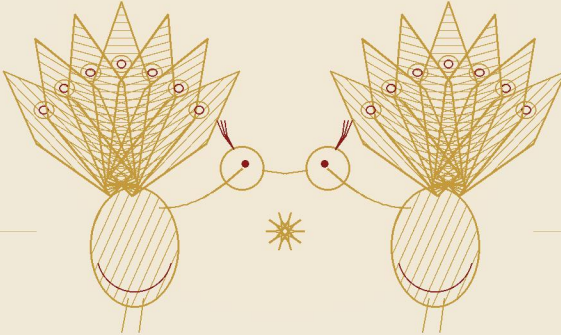
वि दे ह प्र का श न

अकुलाइत सुर



किशोर गीत-गजल संग्रह

किशोर मनक बेचैनी, गीत आ गजलक स्वरमे



गजेन्द्र ठाकुर

ISSN 2229-547X

अकुलाइत सुर

खण्ड १ (किशोर गजल)

खण्ड २ (कविता-गीत)

गजेन्द्र ठाकुर



अकुलाइत सुर

किशोर गीत-गजल संग्रह

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६

गजलकार / कवि / गीतकार: गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन-सन्दर्भ: विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

६ × ९ इञ्च हार्डबैक संस्करण

विषय-सूची

खण्ड १ — किशोर गजल	10
गजल १ — बार्बी.....	11
गजल २ — चान मामा	13
गजल ३ — सात रंग	15
गजल ४ — दादीक कथा.....	16
गजल ५ — तरेगन गनी	17
गजल ६ — बाटक खेल	18
गजल ७ — चिड़ैक गीत.....	19
गजल ८ — हँसीक आँगन	20
गजल ९ — कागजक नाव	21
गजल १० — दादीक चान	22
गजल ११ — पतंगक पाँखि	23
गजल १२ — मेहक खेल	24
गजल १३ — निन्नक कथा.....	25
गजल १४ — अपन सपना	26
गजल १५ — खेलक मैदान	27
गजल १६ — पोथीक पाँखि.....	28
गजल १७ — परीक्षाक बिहान	29
गजल १८ — मीतक संग	30
गजल १९ — पर्दासँ बाहर.....	31
गजल २० — अपन राह.....	32
गजल २१ — तुलना नहि	33
गजल २२ — जालजगतसँ बाहर.....	34
गजल २३ — विषय अपन.....	35
गजल २४ — लाइकसँ बाहर	36
गजल २५ — बात फरिछाउ.....	37
गजल २६ — फेर प्रयास	38
गजल २७ — अपन रूप	39
गजल २८ — अपन बात.....	40
गजल २९ — अपन गति.....	41
गजल ३० — ना कहू.....	42
गजल ३१ — निन्न बचाउ	43
गजल ३२ — समयक हिस्सा	44
गजल ३३ — बाट चुनैत	45
गजल ३४ — ना कहू.....	46
गजल ३५ — अपन गति.....	47
गजल ३६ — ना कहू.....	48

गजल ३७ — निन्नक समय	49
गजल ३८ — प्रश्न पूछू	50
गजल ३९ — मीत चुनू	51
गजल ४० — हारक बाद	52
गजल ४१ — परीक्षाक बाद	53
गजल ४२ — अपन विषय	54
गजल ४३ — अपन निर्णय	55
गजल ४४ — अपन ताल	56
गजल ४५ — तुलना छोड़ू	57
गजल ४६ — भरोसा	58
गजल ४७ — भूलसँ सीखू	59
गजल ४८ — कने आराम	60
गजल ४९ — सोझाँ बाजू	61
गजल ५० — अपन सुर	62
गजल ५१ — पर्दासँ परे	63
गजल ५२ — मीतसँ बात	64
गजल ५३ — ध्यानक डोर	65
गजल ५४ — मदद माँगू	66
गजल ५५ — भविष्यक बाट	67
गजल ५६ — निर्णय	68
गजल ५७ — एक परिणाम	69
गजल ५८ — स्क्रीनक बाहर	70
गजल ५९ — पहिल कमाइ	71
गजल ६० — प्रश्नक साहस	72
गजल ६१ — टीमक खेल	73
गजल ६२ — पहिल कमाइ	74
गजल ६३ — प्रश्नक साहस	75
गजल ६४ — टीमक खेल	76
गजल ६५ — कौशल	77
गजल ६६ — खराब दिन	78
गजल ६७ — टोली	79
गजल ६८ — निर्णयक समय	80
गजल ६९ — पहिल खर्च	81
गजल ७० — प्रश्न करू	82
गजल ७१ — समाचार	83
गजल ७२ — पहिल यात्रा	84
गजल ७३ — पहिल भाषण	85
गजल ७४ — पहिल असफलता	86
गजल ७५ — समूहक दबाव	87
गजल ७६ — डिजिटल विराम	88
गजल ७७ — समय बाँटू	89

गजल ७८ — पहिल जिम्मेदारी	90
गजल ७९ — साँच जाँचू	91
गजल ८० — अपन आवाज	92
गजल ८१ — परीक्षा बाद	93
गजल ८२ — मीतक सीमा	94
गजल ८३ — अपन लय	95
गजल ८४ — मीतक पहिचान	96
गजल ८५ — डरक पार	97
गजल ८६ — आरम्भ	98
गजल ८७ — रुचिक बाट	99
गजल ८८ — साँचक जाँच	100
गजल ८९ — नब मीत	101
गजल ९० — भूल स्वीकार	102
गजल ९१ — एखन करू	103
गजल ९२ — प्रश्न पुछू	104
गजल ९३ — काज बाँटू	105
गजल ९४ — अपन गति	106
गजल ९५ — नब हुनर	107
गजल ९६ — बात जाँचू	108
गजल ९७ — लिखि कऽ बुझू	109
गजल ९८ — एक काज	110
गजल ९९ — रिसक बेर	111
गजल १०० — अपन माप	112
गजल १०१ — मीत चुनू	113
गजल १०२ — कने-कने सीखू	114
गजल १०३ — अपन स्वर	115
गजल १०४ — भूलसँ सीखू	116
गजल १०५ — बेर बाँटू	117
गजल १०६ — साँच लिखू	118
गजल १०७ — सुनि कऽ बाजू	119
गजल १०८ — कौड़ी बचाउ	120
गजल १०९ — गाछ रोपू	121
गजल ११० — प्रश्न लिखू	122
गजल १११ — मीतक मान	123
गजल ११२ — सपन सँ काज	124
गजल ११३ — बेर बाँटू	125
गजल ११४ — पहिने सुनू	126
गजल ११५ — हुनर निखारू	127
गजल ११६ — सीमा राखू	128
गजल ११७ — पढ़ि बुझू	129
गजल ११८ — बाट चुनू	130

गजल ११९ — निज बात	131
गजल १२० — प्रश्नक साहस	132
गजल १२१ — दिनक क्रम	133
गजल १२२ — दबावमे निर्णय	134
गजल १२३ — मीतक गोपन बात	135
गजल १२४ — अपूर्णतासँ सीख	136
गजल १२५ — अपन सीमा	137
गजल १२६ — प्रमाण देखू	138
गजल १२७ — धीरे बहू	139
गजल १२८ — थाकल मोन	140
गजल १२९ — संग काज	141
गजल १३० — सहायता माँगू	142
गजल १३१ — अपन सीमा राखू	143
गजल १३२ — काजक क्रम	144
गजल १३३ — साँच जाँचू	145

खण्ड २ — कविता-गीत146

ट्रेनक गाड़ी	147
के छथि	148
राजा श्री अनुरन्वज सिंह	149
सूतल	151
अखण्ड भारत	152
मोनक जड़िमे	154
पुनः स्मृति	156
कलम गाछी	157
हाथीक मुँहमे लागल पाइप	158
बानर राजा	160
चिड़ियाखाना	162
जमबोनी	164
बौआ ठेहुनिया मारि	166
ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग	168
भोरक बसात	171
छाहक करतब	173
सपन	175
कोइरीक कूकू	177
शितलपाटी	179
मकड़ीक जाल	181
वायुगोलक	183
हाथीक सूप सन कान	185
छुट्टी	187
बौआ गेल सुनि	189

मिथिला.....	192
बादुर सोंस	195
की? किए? कोना? के?.....	198
फेर आएल जाइ	200
अंध विश्वास	202
अभ्यास	203
आँखिक चश्मा	205
तीने टा अछि ऋतु	207
दरिद्र	209
रौह नहि नैन	211
जूताक आविष्कार	213
बूढ़ वर	215
रिपेयर	217
नोकर	219
क्लासमे अबाज	221
एस.एम.एस.	223
टी.टी.	225
खगता	227
क-ख सँ दर्शन.....	229
चोरकें सिखाबह.....	231
नरक निवारण चतुर्दशी	232
नौकरी	234
मरकरी डिलाइट	235
दीयाबाती.....	237
फ्रैक्चर.....	239
बापकें नोशि नहि भेटलन्हि.....	241
दहेज	243
बेचैन नहि निचैन रहू.....	245
थल-थल.....	247
क्रिकेट-फील्डिंग	249
मैट्रिक प्लक	251
काँकड़ु	253
कैप्टन.....	255
दूध	257
अटेंडेंस	259
शो-फटक्का	261
भारमे माटि	263
कंजूस.....	265
पाइ.....	266
असत्य.....	269
समुद्री.....	271

गाम	273
लोली	275
तकलाहा दिन	277
बिकौआ	279
गद्दरिक भात	281
एकटा आर कोपर	283
महीस पर वी.आइ.पी.	285
गप्प-सरक्का	287
फलनाक बेटा	289
ट्रांसफर	291
मजूरी नहि माँगह	293
दोषी	295
लंदनक खिस्सा	296
प्रथम जनवरी	297
ऑफिसमे भरि राति बन्द	299
नानीक पत्र	301
केवाड़ बन्द	303
जेठांश	304
सादा आकि रंगीन	305
जोंकही पोखरिमे भरि राति	306
गैस सिलिण्डरक चोरि	307
फैक्स	309
दीया-बाती	310
इटालियन सैलून	311
शव नहि उठत	312
अतिचार	313
रबड़ खाऊ	314
बाजा अहाँ बजाऊ	316
पिण्डश्याम	318
पाँच पाइक लालछड़ी	320
चोरुक्का विवाह	322
भ्रातृद्वितीया	323
नव-घरारी	325
रिक्त	327
प्रवासी	329
वेद	331
चोरि	332
होली	334
बुद्ध	336
कोठिया पछबाड़ टोल	339
बुच्ची-बाउ	341

आकक दूध	343
केसर श्वेत हरित त्रिवर्णिक	345
बेसी छुट्टी कम इसकूल	347
कोनो सजाए नै	350
बरखा भीजी	352
बरखा गीत	353
भरि दिन खेली-धूपी	355
लवनचूश चूसी भरि दिन	357
जे मोन भावे से करब	359
सभ दिन जनमदिन मनाबी	362
बानर	364
दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी	366
खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल	368
नीक चित्र बनाउ छाप्	370
आउ खेलाउ कनियाँ पुतरा	372
बरफ खाउ जाड़मे	374
रातिमे अबेर धरि जागू भोर उठू देरीसँ	376
सुरुज जेकाँ बरहम घूमै छथि	378
सरस्वती मेधा	380
बाजू मैथिली	382
हम्मर माए	384
अमृत पुत्री	385
हे नाह चल आगाँ	386
ध्येय पथिक साधक	387
मेघ बरसि गेल	388
स्वागतम	389
बड़द करैए दाउन ने यौ	391

अकुलाइत सुर

खण्ड १ (किशोर गजल)

गजेन्द्र ठाकुर

गजल १ — बाबीं



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १७—२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -नू • रदीफ: बाबीं

कनियाँ पुतरा छोडू आनू बाबीं
जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बाबीं
बोने-बोने फिरैए जे दैता सभ
वनसप्तो लऽ घूरलि मानू बाबीं
सात रंग लऽ भोर भेले गाममे
परी रहैए गाम अकानू बाबीं
कननी दूर हेतै बच्चा सभमे
भरल आँखि बिसरी ठानू बाबीं
पानि अकास धरती जा-जा घूमी
पंख लगा टिकुली अकानू बाबीं
धम्म गुड़िया संग खेलू कूदू

राति सपनाउ निन्न आनू बाबीं
सुता दियौ ऐ गुड़ियाकें आ सुतू
चढ़ि ऐरावत दिन गानू बाबीं



गजल २ — चान मामा



बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुङ्गी

मात्रा-क्रमः १५-२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार

काफियाः —आर • रदीफः आउ ने

चान मामा हमर दुआर आउ ने
तरेगन लेने कने बहार आउ ने
कागजक नाव बनौने बैसल छी
मेह बनि पोखरिक पार आउ ने
चिड़ै सभ निन्नक घर जा रहल अछि

सपनासँ दऽ हँकार आउ ने
सात रंगक धनुष अकास चढ़ल
ओहि रंगक संसार आउ ने
आँखि मुनिते परी सभ नाचए
धीरे-धीरे झंकार आउ ने

गजल ३ — सात रंग



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १६-१९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —आर • रदीफ: देखू ने

फूल-फूलमे बहार देखू ने
पात-पातक संसार देखू ने
चानक गला तरेगन चमकैए
झिलमिल ओकर हार देखू ने
कागजक नाव पानिमे छुटल
हँसैत जाइत ओ पार देखू ने
भगजोगनी राति दीप जरबैए
अन्हरियाक सिंगार देखू ने
भोर भेल तँ चिड़ै गीत उठेलक
खुलल अकासक दुआर देखू ने

गजल ४ — दादीक कथा



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -आर • रदीफ: सुनाउ ने

अँचर भरल दुलार सुनाउ ने
परी बसल संसार सुनाउ ने
जाहि कथामे चिड़ै मनुख सन बाजए
बोनक मीठ बहार सुनाउ ने
पीपर पात हवा लगिते गुनगुन करए
ओकर धीम हँकार सुनाउ ने
नेना निन्नक बाट तकैत बैसल अछि
सपनाक एक उपहार सुनाउ ने
चान खिड़की पर चुपचाप सुनि रहल
फेर ओही संसार सुनाउ ने

गजल ५ — तरेगन गनी



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: २३-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -आर · रदीफ: कहू ने

परी संग कनी खेल, कतेक तार कहू ने
गगन बीच उगल चान, ककर हार कहू ने
चिड़ै संग उगल भोर, खिलल फूल पवन संग
नदी नीर चलत नाव, नदी पार कहू ने
कनी खेल हमर गाम, उगल भोर जली दीप
परी संग कनी बात, ककर द्वार कहू ने
पवन संग उगल मेघ, गिरत मेह खिलल फूल
गगन बीच कतेक रंग, जगत सार कहू ने
सगर रात गगन बीच, उगल चान रहत साथ
सगर रात उगल चान, कतेक तार कहू ने

गजल ६ — बाटक खेल



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: २३-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

काल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -आट · रदीफ: चलै छी

परी संग कनी खेल, कनी बाट चलै छी
चिड़ै संग उगल भोर, नदी घाट चलै छी
पवन संग खिलल फूल, सगर गाम हँसल गाम
हमर गाम कनी दूर, अपन बाट चलै छी
उगल मेघ गिरत मेह, नदी नीर चलत नाव
पवन संग धरू हाथ, नदी पाट चलै छी
गगन बीच उगल चान, कतेक तार रहत साथ
परी संग सगर रात, ककर बाट चलै छी
उगल भोर जली दीप, चिड़ै संग जतन गीत
हमर गाम हँसल फूल, कनी बाट चलै छी

गजल ७ — चिड़ैक गीत



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुङ्गी

मात्रा-क्रम: २३-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय • यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ीत • रदीफ: गबै छी

चिड़ै संग उगल भोर, जतन गीत गबै छी
परी संग सगर रात, हमर मीत गबै छी
कनी खेल अपन स्कूल, हँसल फूल पवन संग
कनी खेल अपन स्कूल, बनी जीत गबै छी
पवन संग खिलल फूल, चिड़ै संग जतन गीत
कमल फूल पवन संग, तकर प्रीत गबै छी
नदी नीर चलत नाव, कनी खेल रहत साथ
नदी पार उगल भोर, जतन गीत गबै छी
गगन बीच उगल चान, कतेक तार सगर रात
परी संग हमर मीत, जतन गीत गबै छी

गजल ८ — हँसीक आँगन



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७—२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —आर · रदीफ: हँसू ने

फूल खिलल अछि बहार, हँसू ने
भोर खोललक दुआर, हँसू ने
कागजक मुकुट माथ पर राखि लिअ
तरेगनक पहिरू हार, हँसू ने
चिड़ै कहैए आकाश छोट नहि अछि
पाँखिमे भरू संसार, हँसू ने
हारि गेल खेलमे तँ नोर किएक
फेर खेलब एक बार, हँसू ने
दादी जे कथा राति सुनौलनि
सपना बनल उपहार, हँसू ने

गजल ९ — कागजक नाव



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —आर • रदीफ: आउ खेली

मेह खेललक पानिक दुआर, आउ खेली

कागजक नाव पठाबी पार, आउ खेली

मेंढक बाजल ढम-ढम, चिड़ै पाँखि झाड़लक

पोखरिक कातक बहार, आउ खेली

माटिक हाथी, पातक घोड़ा बना लिअ

अपन बनाबी संसार, आउ खेली

इन्द्रधनुष सात रंगक सीढ़ी टाँगि देलक

चानकें दी पुकार, आउ खेली

साँझ भेल तँ माय दुआरसँ हँसि बाजल

आब अन्तिम एक बार, आउ खेली

गजल १० — दादीक चान



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —आर • रदीफ: दादी कहैए

चानक ऊपर एक संसार, दादी कहैए
ओतऽ फूलक सदा बहार, दादी कहैए
राति जखन चिड़ै सभ निन्नमे घर जाए
तरेगन दैए हँकार, दादी कहैए
परी जँ आबए तँ डरब नहि बच्चा
ओकर पाँखिमे प्यार, दादी कहैए
सपना कोनो बजारमे बिकैत नहि अछि
निन्नक मीठ उपहार, दादी कहैए
भोर भेल तँ कथा कतऽ चलि जाइत अछि
मोनमे रहत संसार, दादी कहैए

गजल ११ — पतंगक पाँखि



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —आर • रदीफ: उड़ि चलू

नील अकासक ओहि पार, उड़ि चलू
बादलक बीच बहार, उड़ि चलू
पतंग कहैए डोर कने ढील करू
देखी ऊपरक संसार, उड़ि चलू
चान दुपहरिमे नुकायल कतऽ गेल
खोजी ओकर दुआर, उड़ि चलू
चिड़ै सभ पाँखि पसारि बाट देखबैत
सुनि ओकर हँकार, उड़ि चलू
साँझ होएत तँ फेर घर घुरि आएब
एखन एक बेर आर, उड़ि चलू

गजल १२ — मेहक खेल



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —आर · रदीफ: दौडू ने

मेह खोललक पानिक दुआर, दौडू ने
आँगन बनल चमचम धार, दौडू ने
कागजक नाव हाथमे सजि तैयार अछि
छोड़ि दिअ ओकरा पार, दौडू ने
मेंढक ढम-ढम गाबए पोखरिक कात
देखू केहन बहार, दौडू ने
पातक टोपी माथ पर राखि हँसैत
बनाउ अपन संसार, दौडू ने
माय जखन दुआरसँ हँसि कऽ बजौती
कहब—बस एक बेर आर, दौडू ने

गजल १३ — निन्नक कथा



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -आर · रदीफ: कथा सुनू

आँखि मूनू, खुलत संसार, कथा सुनू
परी लऽ आएत बहार, कथा सुनू
जाहि बोनमे चिड़ै मनुखक भाषा बाजए
ओहि बोनक मीठ हँकार, कथा सुनू
चान खिड़की पर बैसि चुपचाप सुनत
तरेगन देत उपहार, कथा सुनू
दादीक अँचर रातिक बादल जकाँ अछि
ओकर भीतर दुलार, कथा सुनू
भोर होएत तँ सपना धीरे उड़ि जाएत
मोनमे बाँचत संसार, कथा सुनू

गजल १४ — अपन सपना



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-१९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —आह · रदीफ: आगाँ चलू

अपन चुनल राह, आगाँ चलू
मोनमे साँच चाह, आगाँ चलू
लोक बहुत कहत—ई बनू, ओ बनू
अपन राखू निगाह, आगाँ चलू
गुरु-मीतक बात ध्यानसँ सुनू
बुझि कऽ नीक सलाह, आगाँ चलू
पोथीक बाहर दुनिया पैघ अछि
ज्ञानक सागर अथाह, आगाँ चलू
हार एकटा पाठ, अन्त नहि होइ
फेर चुनू नव राह, आगाँ चलू

गजल १५ — खेलक मैदान



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —आर • रदीफ: खेलू ने

हारि गेलहुँ तँ की हार, खेलू ने
फेर भेटत नब बार, खेलू ने
मीत आगाँ निकलि जाए तँ ताली दिअ
ईहो खेलक संस्कार, खेलू ने
धक्का नहि, छल नहि, नियमक संग
राखि नीक व्यवहार, खेलू ने
दौड़मे सभसँ पहिल होएब जरूरी नहि
सुनू अपन पुकार, खेलू ने
जीत-हार दुनू दिन बदलैत रहैए
हाँसि कऽ फेर एक बार, खेलू ने

गजल १६ — पोथीक पाँखि



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —आर · रदीफ: पढ़ू ने

पन्ना-पन्नामे संसार, पढ़ू ने
हर अक्षर खोलै दुआर, पढ़ू ने
कथा अहाँकेँ अपन गामसँ दूर लऽ जाए
कल्पनाक नदीक पार, पढ़ू ने
प्रश्न उठए तँ पोथीसँ झगड़ू सेहो
जगाउ अपन विचार, पढ़ू ने
अंक लेल मात्र पढ़ब पढ़ाइ नहि होइ
ज्ञान बुझू उपहार, पढ़ू ने
जे पढ़लहुँ से जीवनमे जँ काम अबै
तखने खुलत संसार, पढ़ू ने

गजल १७ — परीक्षाक बिहान



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: डरू नहि

पोथीक एतेक भार, डरू नहि
एक परीक्षासँ हार, डरू नहि
जे पढ़लहुँ से शान्त मोनसँ याद करू
राति भरि नै तैयार, डरू नहि
अंक अहाँक पूरा मोल नहि कहैए
राखू साफ विचार, डरू नहि
प्रश्न कठिन हो तँ दोसर दिस बढ़ू
फेर लौटि होएब पार, डरू नहि
जीवनमे एहन परीक्षा आर बहुत आएत
सीखि कऽ बढ़ू हर बार, डरू नहि

गजल १८ — मीतक संग



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ग • रदीफ: संग चलू

मीत अछि तँ हँसीक संग चलू
दुख पड़ए तँ ओही संग चलू
जीत एकर, हार ओकर—एना नहि सोचू
खेलमे सभ रंग संग चलू
ककरो सपना छोट कहि हँसू नहि
ओकर आँखिक उमंग संग चलू
मत अलग हो तँ मीतक नेह नहि टूटए
बातक नब तरंग संग चलू
मीत वही जे रोकए गलत बात पर
एहन साँचक ढंग संग चलू

गजल १९ — पर्दासँ बाहर



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुजी

मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: देखू ने

पर्दासँ बाहर संसार देखू ने
खिड़की खोलि दुआर देखू ने
दिन भरि अँगुरी चलैत रहए तँ आँखि थाकत
गाछ तरे कने बहार देखू ने
जे देखलहुँ जालजगतमे सभ साँच नहि
अपन लगाउ विचार देखू ने
मीतक फोटोपर हँसी आसान बहुत अछि
सोझाँ ओकर व्यवहार देखू ने
यंत्र उपयोगी अछि, मुदा जीवन ओतबे नहि
धरती-अकासक संसार देखू ने

गजल २० — अपन राह



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १६—२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —ह · रदीफ: अपन चुनू

लोक कहत बहुत राह, अपन चुनू
मोनमे जे साँच चाह, अपन चुनू
गुरु-मीतक बात ध्यानसँ सुनू अवश्य
बुझि कऽ नीक सलाह, अपन चुनू
सभकेँ खुश करब सम्भव नहि जीवनमे
राखि साफ निगाह, अपन चुनू
ज्ञान पोथीक भीतर बन्द नहि रहैए
दुनिया अछि अथाह, अपन चुनू
हारि गेलहुँ तँ राह बदलि सकैत छी
फेर नबका राह, अपन चुनू

गजल २१ — तुलना नहि



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुङ्गी

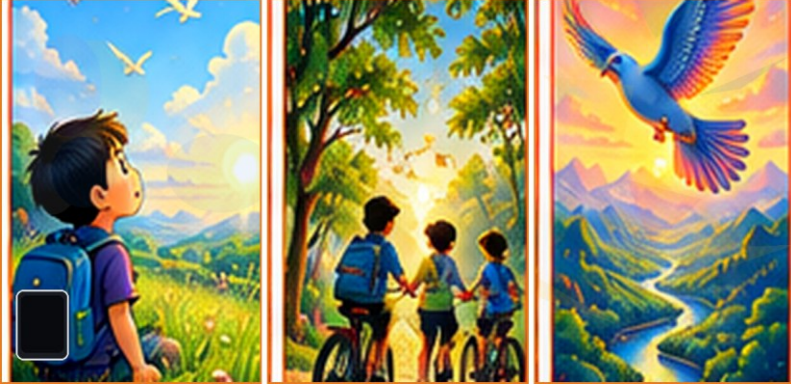
मात्रा-क्रम: १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: तुलना नहि

दोसराक जीतसँ अपन हार—तुलना नहि
अंकसँ जीवनक पूरा भार—तुलना नहि
ककरो बाट तेज, ककरो बाट धीरे चलैए
सभक गति पर एक विचार—तुलना नहि
मीतक सफलता देखि मन छोट नहि करू
नेहमे एहन व्यवहार—तुलना नहि
जालजगतमे देखल जीवन पूरा जीवन नहि
ओतबे नहि संसार—तुलना नहि
अपन गुण, अपन भूल, अपन सीख चिन्हू
आत्ममोलक बाजार—तुलना नहि

गजल २२ — जालजगतसँ बाहर



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: बाहर चलू

जालजगतसँ संसार बाहर चलू
खोलि घरक दुआर, बाहर चलू
दिन भरि चित्र देखिते आँखि थाकि जाइत
गाछ तरे कने बहार, बाहर चलू
जे देखलहुँ ओतऽ सभ सत्य हो, जरूरी नहि
लेने अपन विचार, बाहर चलू
मीतक चिन्ह केवल सन्देशमे नहि रहैए
देखि ओकर व्यवहार, बाहर चलू
यन्त्र उपयोगी अछि, मुदा जीवन पैघ अछि
धरती-अकासक संसार, बाहर चलू

गजल २३ — विषय अपन



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुङ्गी

मात्रा-क्रम: १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ह • रदीफ: सोचि चुनू

सभ देखाओत राह, सोचि चुनू
मोनमे जे साँच चाह, सोचि चुनू
केवल एहि लेल विषय नहि लिअ जे सभ लैत
गुरुक नीक सलाह, सोचि चुनू
अंक जरूरी अछि, मुदा रुचि सेहो जरूरी
अपन राखू निगाह, सोचि चुनू
ज्ञानक क्षेत्र एक-दूटा नाम धरि नहि
दुनिया बहुत अथाह, सोचि चुनू
बाट बदलि सकैत छी, ई हार नहि होइ
फेर अपन राह, सोचि चुनू

गजल २४ — लाइकसँ बाहर



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १५-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ोल · रदीफ: याद रखू

लाइक नहि कहै पूरा मोल, याद रखू
चित्र नहि कहै सभ बोल, याद रखू
सोशल जाल पर हँसी सभ दिन साँच नहि होइ
मोनक खिड़की खोल, याद रखू
ककरो रूपसँ अपन रूपक फैसला नहि करू
अपन देह अनमोल, याद रखू
टिप्पणी एक दिन मनकै कने चोट दऽ सकैए
तइयो नहि डोल, याद रखू
स्क्रीनक बाहर मीत, गाछ, खेल, घर सभ अछि
जीवनक असली मोल, याद रखू

गजल २५ — बात फरिछाउ



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुङ्गी

मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ात • रदीफ: बात फरिछाउ

मीत रूसल तँ बात, बात फरिछाउ
चुप्पी बढल रात, बात फरिछाउ
सन्देश पढ़ि कऽ अर्थ गलत बुझि सकैत छी
सोझाँ मिलि आघात, बात फरिछाउ
ककरो कहल बात दोसरासँ सुनि निर्णय नहि
पहिने करू मुलाकात, बात फरिछाउ
क्षमा माँगब हार नहि, सम्बन्धक बल अछि
नेहक ई सौगात, बात फरिछाउ
मीत जँ साँच अछि तँ मतभेदो रहि सकैए
मनमे नहि राखू बात, बात फरिछाउ

गजल २६ — फेर प्रयास



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी

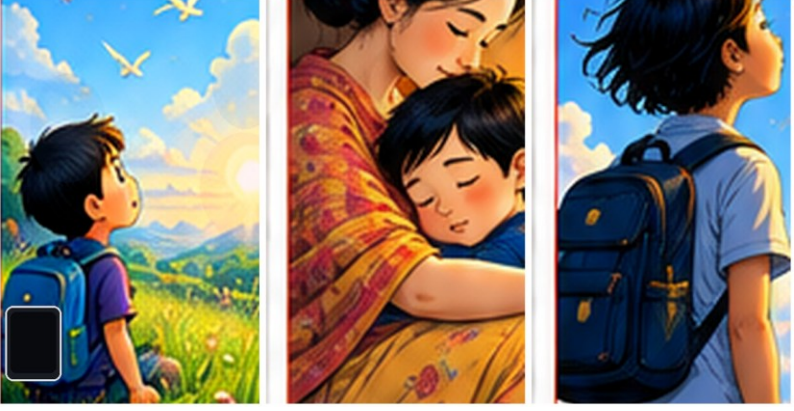
मात्रा-क्रम: १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ास · रदीफ: फेर करू

हारि गेल प्रयास, फेर करू
टूटल नहि विश्वास, फेर करू
एक अंकसँ पूरा जीवन तय नहि होइ
सीखबाक नव प्यास, फेर करू
गलती देखू, मुदा अपना पर रोष नहि
राखि कने आस, फेर करू
जतऽ चूकलहुँ ओतऽ कारण बुझि लिअ
नब ढंगक प्रयास, फेर करू
आजुक हार काल्हिक परिचय नहि होएत
अपन नब इतिहास, फेर करू

गजल २७ — अपन रूप



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: २०-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: मोन छोट नहि करू

आरसिमे देखल आकार, मोन छोट नहि करू
रूपक चलैत बजार, मोन छोट नहि करू
ककरो फोटो चमकदार अछि, तकर अर्थ ई नहि
ओतबे धरि विचार, मोन छोट नहि करू
टिप्पणी कियो सहज कहि देत, भूलि जाएत
तकरा बनाउ नहि व्यवहार, मोन छोट नहि करू
देह बदलत, उमेर बदलत, चेहरा बदलत
भीतर पैघ संसार, मोन छोट नहि करू
अपन गुण, अपन हँसी, अपन ढंग चिन्हू
बाहरक माप हजार, मोन छोट नहि करू

गजल २८ — अपन बात



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -त · रदीफ: खुलि कहू

जे अखरैए ओ बात, खुलि कहू
जे जगबैत अछि रात, खुलि कहू
मीत जँ दबाव दे कि मन नहि मानै
होएत कतेक आघात, खुलि कहू
सन्देशमे अर्थ कखनो बदलि सकैत अछि
सोझाँ कऽ मुलाकात, खुलि कहू
ना कहबो अपन सीमा बचबैत अछि
ईहो नेहक सौगात, खुलि कहू
साँच मीत मतभेदसँ टूटि नहि जाइत
मनमे नहि राखू बात, खुलि कहू

गजल २९ — अपन गति



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ह • रदीफ: रहय अपन-अपन

सभक चलबाक राह रहय अपन-अपन

मोनक साँच चाह रहय अपन-अपन

मीत आगाँ निकलि गेल तऽ हार नहि भेल

जीवनपर निगाह रहय अपन-अपन

गुरु-मीतक बात ध्यानसँ सुनब नीक

बुझल गेल सलाह रहय अपन-अपन

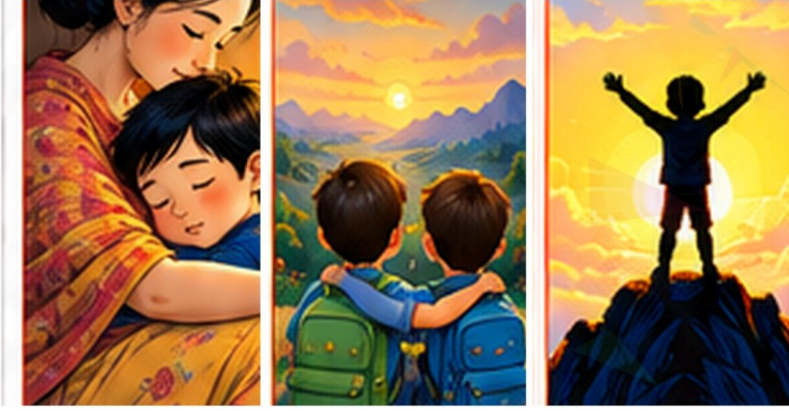
ज्ञानक दुनिया एक-दू विषय धरि नहि

सीखबाक उत्साह रहय अपन-अपन

दौड़ सभ दिन सभक लेल एके नहि होइ

चुनल गेल राह रहय अपन-अपन

गजल ३० — ना कहू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १८-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ात · रदीफ: स्पष्ट कहू

मन नहि मानै ओ बात, स्पष्ट कहू
किएक जागल ई रात, स्पष्ट कहू
मीत जँ गलत काजक दबाव दऽ रहल अछि
चाही नहि एहन साथ, स्पष्ट कहू
सन्देशमे अर्थ कखनो गलत भऽ सकैए
करू सोझाँ मुलाकात, स्पष्ट कहू
ना कहबो अपन सीमा बचबैत अछि
ईहो नेहक सौगात, स्पष्ट कहू
साँच मीत मतभेदसँ टूटि नहि जाइत
मनमे नहि राखू बात, स्पष्ट कहू

गजल ३१ — निन्न बचाउ



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: निन्न बचाउ

स्क्रीनसँ बाहरो अछि संसार, निन्न बचाउ

रातिमे थमाउ विचार, निन्न बचाउ

सन्देश काल्हियो देखल जा सकैए

आइ रोकू ई व्यवहार, निन्न बचाउ

पढ़ाइ जरूरी अछि, मुदा थाकल मस्तिष्क

नहि सहि पाबत भार, निन्न बचाउ

फोन कने दूर राखि आँखि मूनि लिअ

रातिक बन्द दुआर, निन्न बचाउ

भोरक साफ मन बहुत काज सहज करैत

सपनाक अपन संसार, निन्न बचाउ

गजल ३२ — समयक हिस्सा



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -म • रदीफ: समय बाँटू

पढ़ाइ लेल कने काम, समय बाँटू
देह लेल सेहो आराम, समय बाँटू
सभ दिन केवल अंकक पाछाँ दौड़ब नहि
अपन लेल कने नाम, समय बाँटू
लक्ष्य पैघ हो, मुदा साँस थकए नहि
धीरे चुनू मुकाम, समय बाँटू
बैसल-बैसल देह सेहो बोझिल भऽ जाइत
खेल आ व्यायाम, समय बाँटू
मीत, घर, पोथी, सपना—सभ जीवनक भाग
एक्के नहि काम, समय बाँटू

गजल ३३ — बाट चुनैत



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

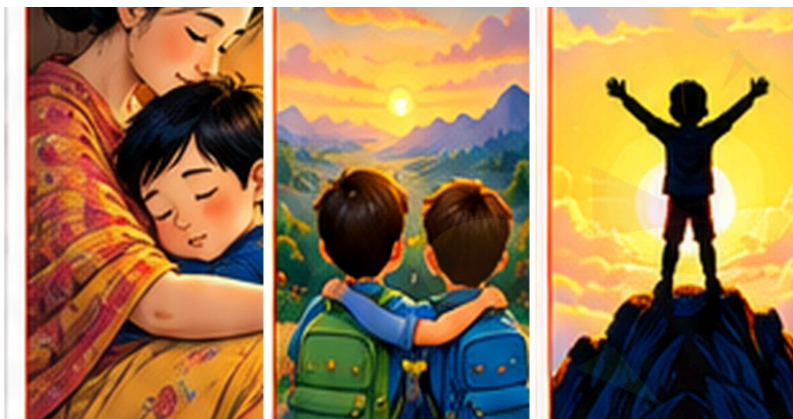
मात्रा-क्रम: १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ाह · रदीफ: घबराउ नहि

एक्के नहि अछि राह, घबराउ नहि
मन बदलि सकै चाह, घबराउ नहि
घरक सलाह सुनू, मुदा प्रश्न सेहो करू
बुझि लिअ सलाह, घबराउ नहि
मीत सभ अलग दिशा चुनि आगाँ बढ़त
राखू अपन निगाह, घबराउ नहि
करियरक दुनिया दू-चार नाम धरि नहि
अवसर बहुत अथाह, घबराउ नहि
बाट बदललासँ सपना छोट नहि होइ
फेर चुनू नव राह, घबराउ नहि

गजल ३४ — ना कहू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: ना कहू

मोनपर जँ बेसी भार, ना कहू
जे बनै अपन दीवार, ना कहू
मीत जँ मीत अछि, अहाँक सीमा बुझत
जे छीने अधिकार, ना कहू
मजाक जँ बेर-बेर हृदय दुखबैत रहए
एहन व्यवहार, ना कहू
संग रहब नेह, दबाव मानब नेह नहि
बनए जँ व्यापार, ना कहू
ना कहब दुश्मनी नहि, अपन सीमा अछि
जतऽ घटए सम्मान, ना कहू

गजल ३५ — अपन गति



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी

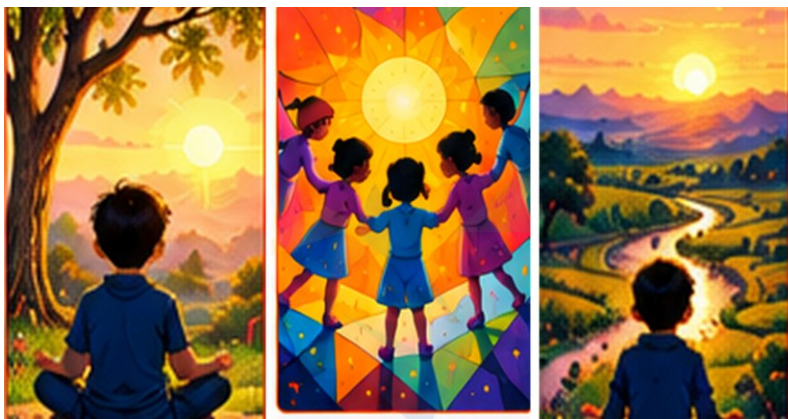
मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -रे · रदीफ: अपन गति

दोसरासँ भेल जँ देर, अपन गति
रुकि कऽ उठू एक फेर, अपन गति
सभ मीत एके दिन एके ठाम नहि पहुँचत
हर ककरो अपन बेर, अपन गति
अंकक घेरा जीवनक पूरा सीमा नहि
तोड़ू तुलना-घेर, अपन गति
कखनो बाट धूमिल होए, मोन नहि हारू
कटि जाएत अन्हेर, अपन गति
धीरे चलब हार नहि, बुझि कऽ आगाँ बढ़ब
फेर चुनू एक बेर, अपन गति

गजल ३६ — ना कहू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १४-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: ना कहू

जे घटाबए अपन मान, ना कहू
जे डगमग करए ईमान, ना कहू
मीत कहए तँ सभ बात मानब जरूरी नहि
राखि अपन पहिचान, ना कहू
हँसीक नामपर ककरो चोट पहुँचाबए जे
बचाउ ओकर सम्मान, ना कहू
दबावमे निर्णय अपन नहि छोडू कखनो
राखि कने अपन जान, ना कहू
साँच मीत 'ना' सुनि सेहो संग रहैत अछि
नेह रखि सम्मान, ना कहू

गजल ३७ — निन्नक समय



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

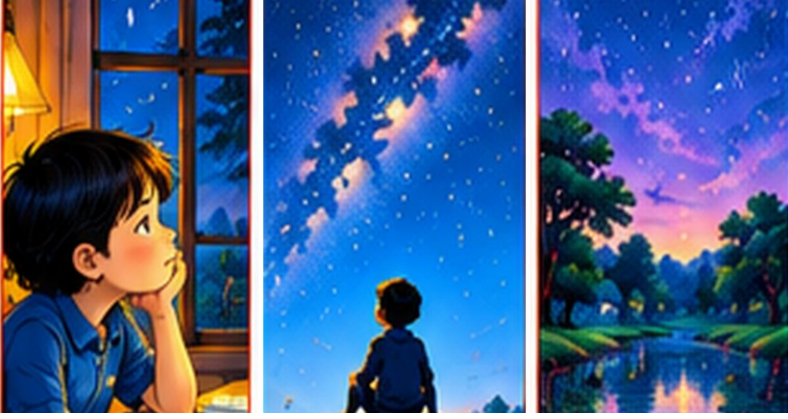
मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -रे • रदीफ: एखन सुतू

बहुत भेल ई शोर, एखन सुतू
खिड़की बाहर अछि भोर, एखन सुतू
पर्दापर एक चित्रसँ दोसर चित्र चलैत अछि
छोड़ि कने ओ डोर, एखन सुतू
काल्हि पढ़ब, खेलब, मीतसँ फेर बात करब
निन्नकैँ दिअ जोर, एखन सुतू
मोनमे उठैत प्रश्न सभ काल्हियो रहत
थमि जाए कने हिलोर, एखन सुतू
देहक आराम आलस नहि, जीवनक अंश अछि
बन्द करू ई शोर, एखन सुतू

गजल ३८ — प्रश्न पूछू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ात · रदीफ: प्रश्न पूछू

जे नहि बुझलहुँ ओ बात, प्रश्न पूछू
जे जगबैत अछि रात, प्रश्न पूछू
पोथीमे लिखल सभ बात अन्तिम नहि होइ
तर्कसँ करि मुलाकात, प्रश्न पूछू
ककरो वचनसँ मोनमे चोट जँ लगाए
दबल नहि राखू आघात, प्रश्न पूछू
गुरु सिखबैत छथि, मुदा सोचब अहाँक काज
ज्ञानक एहि सौगात, प्रश्न पूछू
साँच खोजब डरक बात कहियो नहि
खुलि अपन बात, प्रश्न पूछू

गजल ३९ — मीत चुनू



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ग • रदीफ: बुझि चुनू

के रहत दुखमे संग, बुझि चुनू
के बढ़ाओत जीवनक रंग, बुझि चुनू
जे केवल जीतक दिन अहाँ लग आबए
ओकर नेहक ढंग, बुझि चुनू
जे अहाँक सपना छोट कहि हँसए
ककरो एहन उमंग, बुझि चुनू
मतभेद हो तऽ बातक डोर नहि टूटए
मीतक ओ तरंग, बुझि चुनू
जे गलत बाटपर रोकि दे निर्भय भऽ
साँच मीतक संग, बुझि चुनू

गजल ४० — हारक बाद



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: फेर उठू

आइ भेटल जँ हार, फेर उठू
मोनपर बढ़ल भार, फेर उठू
एक परीक्षा पूरा जीवनक निर्णय नहि
राखि साफ विचार, फेर उठू
कखनो एक दुआर बन्द भऽ सकैए
खोजि दोसर दुआर, फेर उठू
बाट कठिन हो, गति कने धीमी भऽ जाए
एक दिन होएब पार, फेर उठू
अपन भूलसँ सीखब हारक सबसे नीक फल
लेने नबका विचार, फेर उठू

गजल ४१ — परीक्षाक बाद



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: छोड़ि दिअ

परीक्षाक एतेक भार, छोड़ि दिअ
एक दिनक भेल हार, छोड़ि दिअ
अंक अहाँक पूरा मोल नहि कहि सकैए
मनक एहन विचार, छोड़ि दिअ
एक दुआर नहि खुलल तँ दुनिया समाप्त नहि
खोजू दोसर दुआर, छोड़ि दिअ
जे पढ़लहुँ से अनुभव बनि संग रहत
डरक पुरनका पार, छोड़ि दिअ
फेर प्रयासक दिन नव साँस लऽ कऽ आएत
आइक एहन हार, छोड़ि दिअ

गजल ४२ — अपन विषय



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ाह · रदीफ: बुझि चुनू

सभ देखाओत अलग राह, बुझि चुनू
मोनमे जे साँच चाह, बुझि चुनू
मीत सभ जे विषय लैत अछि से अहाँ लेल हो
ई जरूरी नहि—सलाह, बुझि चुनू
गुरु-बापक बात ध्यानसँ सुनब नीक अछि
तइयो राखू अपन निगाह, बुझि चुनू
ज्ञानक दुनिया दू-चारि पेशा धरि नहि
ओ सागर अछि अथाह, बुझि चुनू
बाट बदलि सकैत छी, ई हारक चिन्ह नहि
फेर खोजू अपन राह, बुझि चुनू

गजल ४३ — अपन निर्णय



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: अपन रहू

मीतक बीचो मान अपन रहू
दबावमे ईमान अपन रहू
सभ कहए जे करू, से करब जरूरी नहि
निर्णयमे पहिचान अपन रहू
ना कहला पर साँच मीत नहि छुटि जाइत
सीमामे सम्मान अपन रहू
ककरो हँसी लेल अपना केँ चोट नहि दिअ
देह आ मनक जान अपन रहू
संग चलू, मुदा बाटक बोध नहि बिसरू
भीड़मे इंसान अपन रहू

गजल ४४ — अपन ताल



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -रे · रदीफ: अपन ताल

दोसरासँ भेल जँ देर—अपन ताल

रुकि कऽ उठू एक फेर—अपन ताल

सभ मीत एके दिन एके ठाम नहि पहुँचत

हर ककरो अपन बेर—अपन ताल

अंकक घेरा जीवनक सीमा नहि बनए

तोड़ू तुलना-घेर—अपन ताल

बाट कखनो धूमिल होए, मन नहि हारू

कटि जाएत अन्हेर—अपन ताल

धीरे चलब हार नहि, बुझि कऽ आगाँ बढ़ब

फेर चुनू एक बेर—अपन ताल

गजल ४५ — तुलना छोड़ू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: तुलना छोड़ू

आरसिमे देखल आकार—तुलना छोड़ू

रूपक चलैत बजार—तुलना छोड़ू

ककरो चित्र चमकदार, तकर अर्थ ई नहि

ओतबे धरि विचार—तुलना छोड़ू

मीतक सफलता देखि मन छोट नहि करू

बदलू एहन व्यवहार—तुलना छोड़ू

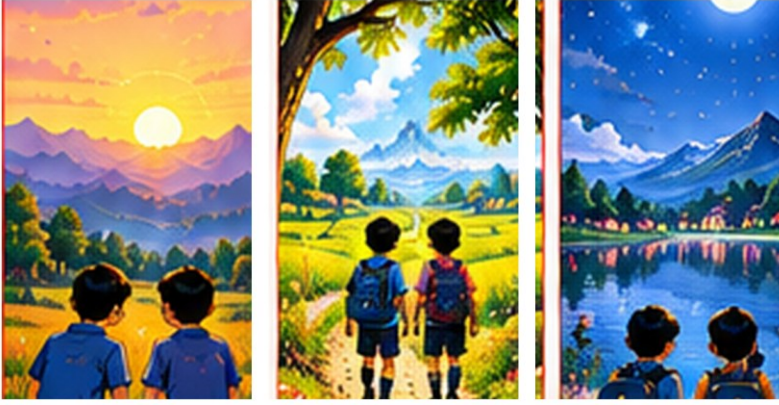
जालजगतमे देखल जीवन पूरा जीवन नहि

बाहर पैघ संसार—तुलना छोड़ू

अपन गुण, अपन भूल, अपन सीख चिन्हू

आत्ममोलक बजार—तुलना छोड़ू

गजल ४६ — भरोसा



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १९-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ात · रदीफ: भरोसा रखू

मीतसँ खुलि कहू बात—भरोसा रखू

चुप्पी नै बनय रात—भरोसा रखू

सन्देश पढ़ि अर्थ गलत बुझि सकैत छी

सोझाँ करू मुलाकात—भरोसा रखू

ककरो वचनसँ मनमे चोट जँ लागि जाए

दबल नहि राखू आघात—भरोसा रखू

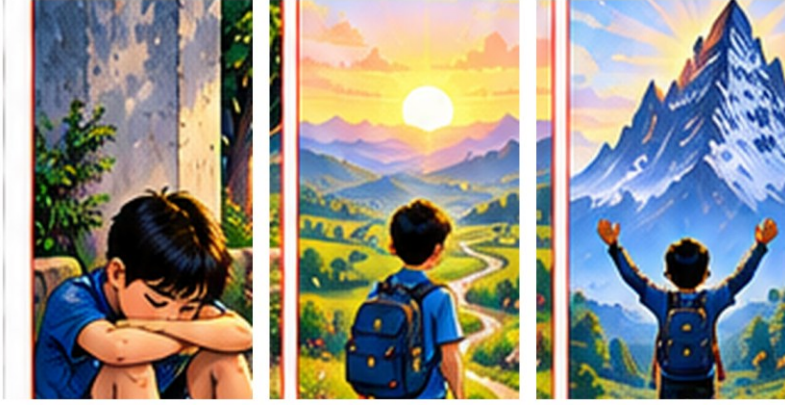
क्षमा माँगब हार नहि, सम्बन्धक बल अछि

नेहक ई सौगात—भरोसा रखू

साँच मीत मतभेदसँ टूटि नहि जाइत

मनमे नहि राखू बात—भरोसा रखू

गजल ४७ — भूलसँ सीखू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: भूलसँ सीखू

एक चूककै हार नहि मानू—भूलसँ सीखू
मोनपर बेसी भार नहि आनू—भूलसँ सीखू
किएक चूकलहुँ, ओ कारण शान्ति सँ देखू
राखू साफ विचार—भूलसँ सीखू
एक बेर नहि भेल तँ फेर प्रयास करू
एक दिन होएब पार—भूलसँ सीखू
कखनो एक दुआर बन्द भऽ सकैत अछि
खोजू दोसर दुआर—भूलसँ सीखू
अपना पर रोष नहि, जिम्मेदारी अवश्य
ई जीतक आधार—भूलसँ सीखू

गजल ४८ — कने आराम



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७—२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —म · रदीफ: कने आराम

दिन भरि भेल बहुत काम—कने आराम

अंक नहि तय करै नाम—कने आराम

पढ़ाइ जरूरी अछि, मुदा देह सेहो अपन अछि

बीचमे चाही विराम—कने आराम

राति भरि जागब मेहनतक एक्के रूप नहि

निन्नो मनक धाम—कने आराम

मीत सभ आगे अछि, से सोचि दौड़ू नहि

अपन गति, अपन काम—कने आराम

काल्हि फेर नब दिन आ नब प्रयास रहत

आइ देहकें आराम—कने आराम

गजल ४९ — सोझाँ बाजू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी

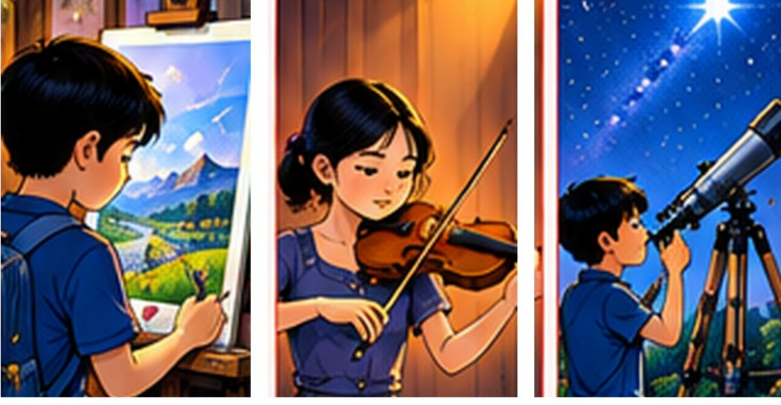
मात्रा-क्रम: १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -त · रदीफ: सोझाँ बाजू

मीतसँ मनक बात—सोझाँ बाजू
चुप्पी नै बनय रात—सोझाँ बाजू
सन्देश पढ़ि अर्थ कखनो बदलि सकैत अछि
करू पहिने मुलाकात—सोझाँ बाजू
ककरो वचनसँ मनमे चोट जँ लागि जाए
दबल नहि राखू आघात—सोझाँ बाजू
क्षमा माँगब हार नहि, सम्बन्धक बल अछि
नेहक ई सौगात—सोझाँ बाजू
मतभेद हो तऽ मीतक नेह नहि टूटए
मनमे नहि राखू बात—सोझाँ बाजू

गजल ५० — अपन सुर



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ीत · रदीफ: अपन सुरमे

गाबू अपन गीत अपन सुरमे
राखू मनक प्रीत अपन सुरमे
सभ मीत एके ढंगसँ जीवन नहि जीबै
चुनू अपन मीत अपन सुरमे
अंक कम भेल तऽ जीवन कम नहि होइ
फेर खोजू जीत अपन सुरमे
दोसराक बाट नीक हो, तइयो अहाँक बाट आन
बुझू अपन अतीत अपन सुरमे
भीड़ बहुत बाजत, मुदा निर्णय अहाँक हो
बाजू अपन गीत अपन सुरमे

गजल ५१ — पर्दासँ परे



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: कने बाहर

पर्दासँ पैघ संसार—कने बाहर
खोलू घरक दुआर—कने बाहर
दिन भरि अँगुरी चलिते आँखि थाकि जाइत
गाछ तरे बहार—कने बाहर
जे देखलहुँ जालजगतमे सभ साँच नहि होइ
लेने अपन विचार—कने बाहर
मीतक छवि नहि, मीतक मन सेहो बुझू
देखू ओकर व्यवहार—कने बाहर
यन्त्र काजक अछि, मुदा जीवन ओतबे नहि
धरती-अकास संसार—कने बाहर

गजल ५२ — मीतसँ बात



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ात · रदीफ: फरिछ बाजू

मोनमे जे अछि बात—फरिछ बाजू
चुप्पी नै बनय रात—फरिछ बाजू
सन्देश पढ़ि अर्थ कखनो बदलि सकैत अछि
सोझाँ करू मुलाकात—फरिछ बाजू
ककरो वचनसँ मनमे चोट जँ लागि जाए
दबल नहि राखू आघात—फरिछ बाजू
क्षमा माँगब हार नहि, मीतक बल अछि
नेहक ई सौगात—फरिछ बाजू
मतभेद रहितो मीतक नेह रहि सकैए
मनमे नहि राखू बात—फरिछ बाजू

गजल ५३ — ध्यानक डोर



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ोर · रदीफ: कने थामू

पर्दापर एतेक शोर—कने थामू
राति ढलल, आब भोर—कने थामू
एक सूचनासँ दोसर सूचना दौड़ैत अछि
अँगुरीक ई डोर—कने थामू
पढ़बाक समय मन भटकि जाए बारम्बार
अपन ध्यानक जोर—कने थामू
खेल, गाछ, मीत, पोथी—सभ जीवनक भाग
स्क्रीनक एक हिलोर—कने थामू
यन्त्र उपयोगी अछि, मालिक नहि बनय
मनक भीतर शोर—कने थामू

गजल ५४ — मदद माँगू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -त · रदीफ: मदद माँगू

जे भारी लगै बात—मदद माँगू

निन्न नहि अबै रात—मदद माँगू

सभ प्रश्न अपने हल करब जरूरी नहि

करू विश्वस्तसँ मुलाकात—मदद माँगू

ककरो वचनसँ मनमे चोट गहिर भऽ जाए

दबल नहि राखू आघात—मदद माँगू

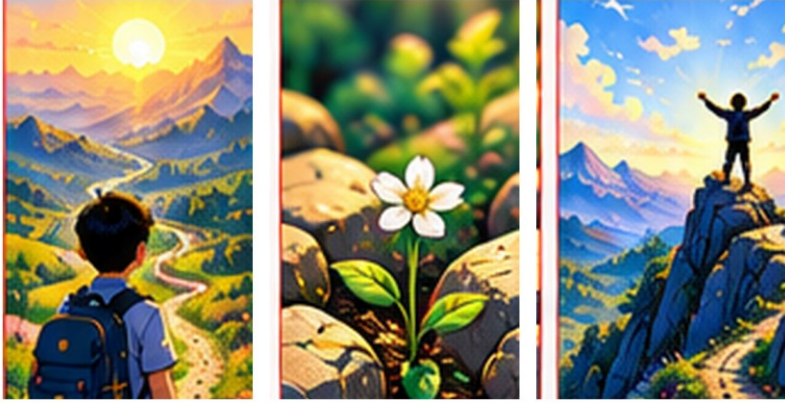
गुरु-मीत-बापक संग रहब कमजोरी नहि

ई सम्बन्धक सौगात—मदद माँगू

अपन मनक कठिनाई कहब साहसक काज

फरिछ कऽ कहू बात—मदद माँगू

गजल ५५ — भविष्यक बाट



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

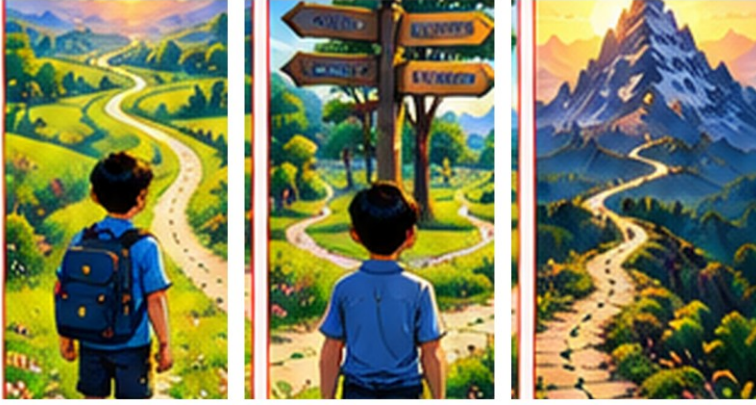
मात्रा-क्रम: १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ह · रदीफ: खोजैत रहु

एके नहि अछि राह—खोजैत रहु
मोनमे जे साँच चाह—खोजैत रहु
गुरु-बापक अनुभव सुनब बहुत नीक अछि
बुझि कऽ लिअ सलाह—खोजैत रहु
मीत सभ एक दिशा जाए तऽ अहूँ जाउ जरूरी नहि
राखि अपन निगाह—खोजैत रहु
ज्ञानक क्षेत्र दू-चारि पेशा धरि नहि
दुनिया बहुत अथाह—खोजैत रहु
बाट बदलि जाए तऽ सपना नहि मरैत अछि
फेर नबका राह—खोजैत रहु

गजल ५६ — निर्णय



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: अपन निर्णय

भीड़मे राखू मान—अपन निर्णय

पहिने बुझू पहिचान—अपन निर्णय

मीत सभ एक दिशा जाए, अहूँ जाउ जरूरी नहि

राखू अपना सम्मान—अपन निर्णय

दबावमे हँसि कऽ हाँ कहब सदा नीक नहि

बचाउ अपन ईमान—अपन निर्णय

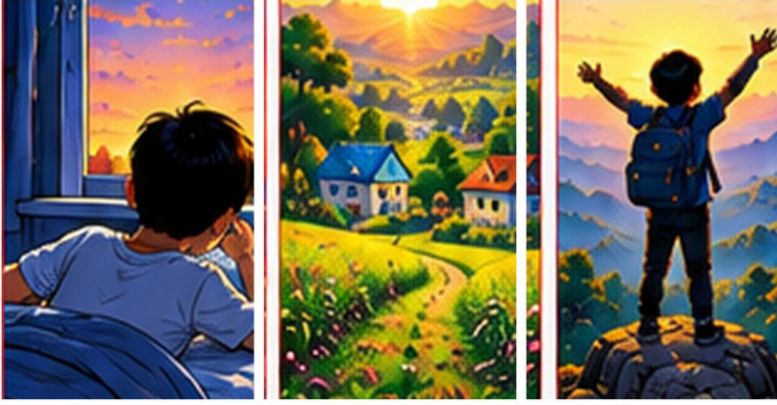
गुरु-बापक बात सुनू, प्रश्नो करैत रहू

फरिछ हो बयान—अपन निर्णय

बाट बदलि सकैत छी, सपना नहि छोट होइ

मनमे राखू उड़ान—अपन निर्णय

गजल ५७ — एक परिणाम



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: अन्त नहि

एक परिणामक हार—अन्त नहि
मोनपर एतेक भार—अन्त नहि
अंक अहाँक पूरा मोल कहि नहि सकैए
एक दिनक विचार—अन्त नहि
एक दुआर बन्द हो तऽ बाट समाप्त नहि
आगाँ दोसर दुआर—अन्त नहि
धीरे चलबो चलब अछि, रुकल रहब नहि
एक दिन होएब पार—अन्त नहि
भूलसँ सीखि फेर उठब जीवनक ढंग अछि
आइक छोट हार—अन्त नहि

गजल ५८ — स्क्रीनक बाहर



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८—२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —नेर · रदीफ: स्क्रीनक बाहर

कम अछि एतऽ शोर—स्क्रीनक बाहर

साँस लैत अछि भोर—स्क्रीनक बाहर

एक सूचनासँ दोसर सूचना मनकेँ खींचै

छोड़ू कने ओ डोर—स्क्रीनक बाहर

मीतक चेहरा केवल चित्र नहि, मन सेहो

नेहक रहै एक डोर—स्क्रीनक बाहर

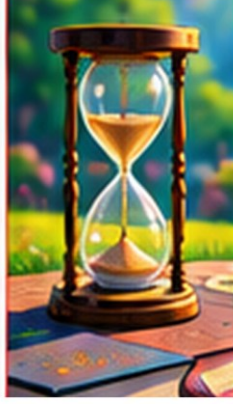
गाछक पात हवा लगिते गीत जकाँ हिलैए

देखू नब हिलोर—स्क्रीनक बाहर

यन्त्र उपयोगी अछि, मुदा जीवन ओतबे नहि

पैघ अछि ई भोर—स्क्रीनक बाहर

गजल ५९ — पहिल कमाइ



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -म · रदीफ: हिसाब राखू

कतेक भेल काम—हिसाब राखू

कतेक भेटल दाम—हिसाब राखू

पहिल कमाइ सभटा तुरन्त खर्च करब जरूरी नहि

अपन जरूरतक नाम—हिसाब राखू

किछु बचत भविष्यक छोट सहारा बनैए

इच्छाकें दिअ विराम—हिसाब राखू

कमाइ गर्व अछि, मुदा देहक थकान सेहो साँच

कने लिअ आराम—हिसाब राखू

पाइ केवल वस्तु नहि, श्रमक समय सेहो अछि

बुझू ओकर दाम—हिसाब राखू

गजल ६० — प्रश्नक साहस



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १४-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: पूछि लिअ

नहि बुझल विचार—पूछि लिअ

किएक अछि आधार—पूछि लिअ

कक्षामे चुप रहब सद्गुण सभ दिन नहि होइ

अपनो अछि अधिकार—पूछि लिअ

गुरु उत्तर देथि वा फेर खोजबाक बाट देखाथि

सीखू प्रश्नक व्यवहार—पूछि लिअ

जालजगतक प्रत्येक दाबी सत्य नहि होइ

जाँचू ओकर संसार—पूछि लिअ

ज्ञान डराए नहि, प्रश्नसँ आर स्पष्ट होइ

खोलू नब दुआर—पूछि लिअ

गजल ६१ — टीमक खेल



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -गं · रदीफ: संग खेलू

जीत हो वा हार, राखू उमंग—संग खेलू

मैदान भरि अपन रंग—संग खेलू

गेंद एक जनक नहि, पास करबो खेलक बुद्धि

बढ़ाउ टीमक उमंग—संग खेलू

गलती पर मीतकैँ हँसाएब नहि, हाथ बढ़ाउ

सीखू सहयोगक ढंग—संग खेलू

प्रतिद्वन्द्वी शत्रु नहि, खेलक दोसर पक्ष

राखू स्वस्थ तरंग—संग खेलू

पदकसँ पैघ अछि प्रयास आ संगक स्मृति

जीवन भरिक संग—संग खेलू

गजल ६२ — पहिल कमाइ



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७—२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —म · रदीफ: सोचि खर्चू

हाथमे आयल दाम—सोचि खर्चू
याद रखू अपन काम—सोचि खर्चू
पहिल कमाइ पूरा एक दिनमे उड़ि नहि जाए
राखू हिसाबक नाम—सोचि खर्चू
किछु घर लेल, किछु बचत, किछु अपन खुशी
सभमे राखू आराम—सोचि खर्चू
महँग चीज किनलासँ मान पैघ नहि होइ
श्रम अछि असली इनाम—सोचि खर्चू
कमाइ केवल पाइ नहि, जिम्मेदारी सेहो
बुझि ओकर परिणाम—सोचि खर्चू

गजल ६३ — प्रश्नक साहस



बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

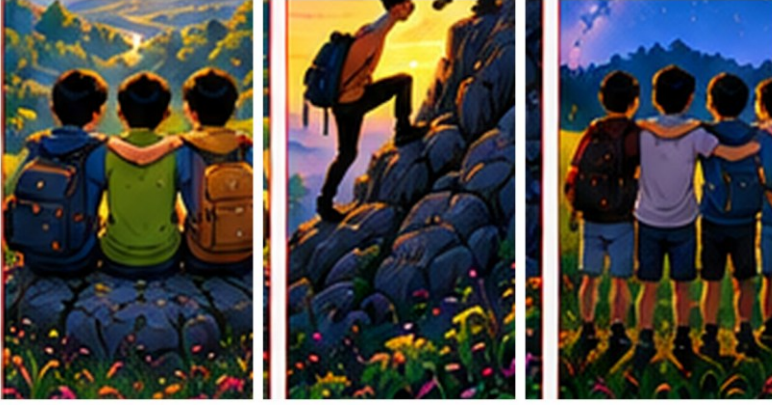
मात्रा-क्रमः १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार

काफियाः -त • रदीफः पूछि लिअ

जे नहि बुझलहुँ बात—पूछि लिअ
जे जगबैत अछि रात—पूछि लिअ
पोथीमे लिखल सभ बात अन्तिम नहि होइ
तर्कसँ करू मुलाकात—पूछि लिअ
ककरो वचनसँ मनमे चोट जँ लागि जाए
दबल नहि राखू आघात—पूछि लिअ
गुरु सिखबैत छथि; प्रश्न सीखक शत्रु नहि
ज्ञानक ई सौगात—पूछि लिअ
नहि जानब लाजक बात कदापि नहि होइ
फरिछ कऽ अपन बात—पूछि लिअ

गजल ६४ — टीमक खेल



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —ग • रदीफ: संग खेलू

जीत-हारक संग—संग खेलू

मैदानक सभ रंग—संग खेलू

गोल एकटा करए, मुदा पास बहुत हाथसँ अबै

टीमक ओ तरंग—संग खेलू

मीत चूकए तऽ हँसी नहि, हाथ बढ़ाउ

फेर जागत उमंग—संग खेलू

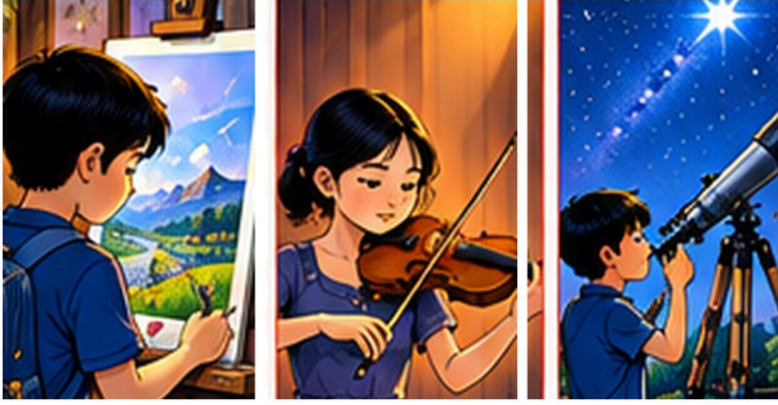
अपन कौशल नीक, मुदा टीम बिना अधूरा

सीखू सहयोगक ढंग—संग खेलू

जीतलापर विनम्र, हारलापर फेर तैयार

राखि खेलक रंग—संग खेलू

गजल ६५ — कौशल



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -म · रदीफ: कौशल सीखू

केवल अंक नहि काम—कौशल सीखू

अपन बनाउ नाम—कौशल सीखू

पोथीक ज्ञान जरूरी, हाथक अभ्यासो

दूनू संग-संग काम—कौशल सीखू

चूक भऽ जाए तऽ ओकर कारण बुझू पहिने

लिअ कने विराम—कौशल सीखू

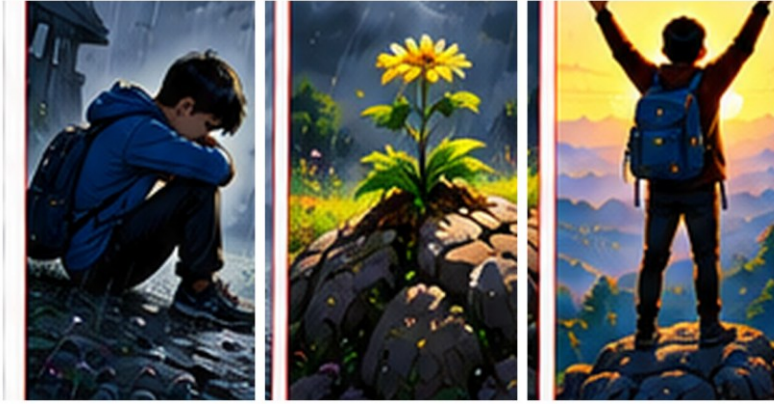
जे रुचि अहाँक भीतर बारम्बार जागैए

ओकरा देऊ काजक नाम—कौशल सीखू

भविष्य एक परीक्षा मात्रे सँ नहि बनत

बुझू अपन परिणाम—कौशल सीखू

गजल ६६ — खराब दिन



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: बस एक दिन

आइ भेटल जँ हार—बस एक दिन

मोनपर बढ़ल भार—बस एक दिन

एक परीक्षा खराब भेल तऽ जीवन खराब नहि

ई नहि जीवनक सार—बस एक दिन

एक दुआर बन्द भेल, दुनिया बन्द नहि

आगाँ अछि दुआर—बस एक दिन

धीरे चलू, साँस लिअ, फेर शुरूआत करू

एक दिन होएब पार—बस एक दिन

अपन पूरा मूल्य आइक परिणाम नहि कहै

ई छोट हार—बस एक दिन

गजल ६७ — टोली



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

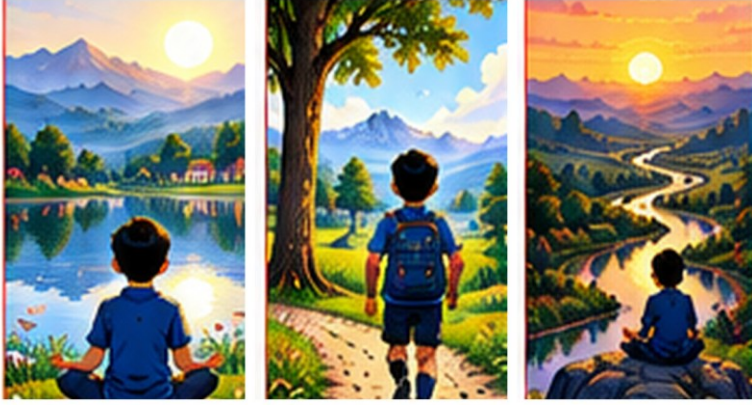
मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ग · रदीफ: टोलीमे

जीत अकेले नहि—संग टोलीमे
सभक अलग हो रंग टोलीमे
केवल गोल करए से एक्के खेलाड़ी नहि
पास देबाक उमंग टोलीमे
ककरो चूक पर हँसि देब खेलक रीति नहि
सीखू सहयोगक ढंग टोलीमे
हारि गेलहुँ तऽ दोष एकटा मीतपर नहि
फेर उठत तरंग टोलीमे
जे कमजोर बुझाइट, ओकरो अवसर चाही
तखन बढ़त सभक संग टोलीमे

गजल ६८ — निर्णयक समय



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

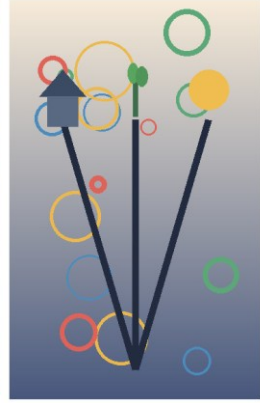
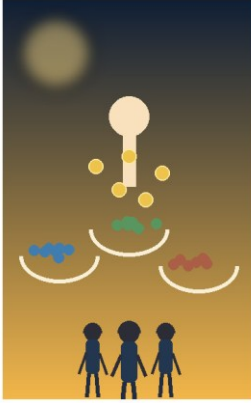
मात्रा-क्रम: १८—२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —ाह · रदीफ: कने समय दिअ

नहि चुनू तुरत राह—कने समय दिअ
बुझू मनक साँच चाह—कने समय दिअ
सभ मीत एके विषय लैत अछि, से कारण नहि
सुनू सभक सलाह—कने समय दिअ
गुरु-बापक अनुभव अमूल्य, निर्णय अहाँक
राखू अपन निगाह—कने समय दिअ
काजक दुनिया दू-चारि नाम धरि नहि
क्षेत्र बहुत अथाह—कने समय दिअ
बाट बदलि सकैत छी, ई हार नहि होइ
खोजू नबका राह—कने समय दिअ

गजल ६९ — पहिल खर्च



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

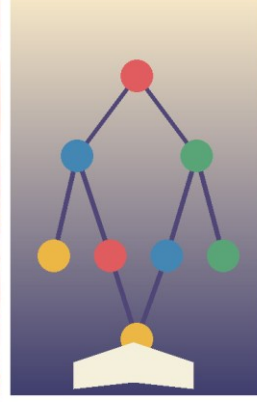
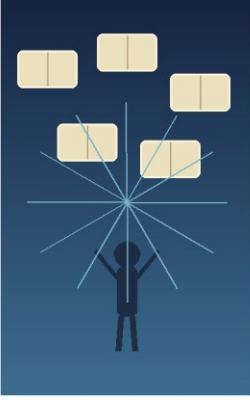
मात्रा-क्रम: १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: हिसाब राखू

जाइत छी जखन बजार—हिसाब राखू
नहि चाही अनावश्यक उधार—हिसाब राखू
पहिल कमाइ छोट हो, तइयो ओकर मोल पैघ
खर्चक पहिने विचार—हिसाब राखू
कने बचत अपनेक काल्हिक काज आबि सकैए
बुझू घर-परिवार—हिसाब राखू
मीतक देखादेखी किनेब जरूरी नहि सभटा
बदलू एहन व्यवहार—हिसाब राखू
पाइ साधन अछि, जीवनक पूरा मोल नहि
सीखू नीक व्यवहार—हिसाब राखू

गजल ७० — प्रश्न करू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १४-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ह · रदीफ: प्रश्न करू

नहि बुझाइ जे राह—प्रश्न करू

मोनमे जागल चाह—प्रश्न करू

पोथीमे लिखल बातो बुझि कऽ स्वीकारू

सुनि कऽ सभ सलाह—प्रश्न करू

कियो पैघ अछि तइयो ओकर बात अन्तिम नहि

राखि साफ निगाह—प्रश्न करू

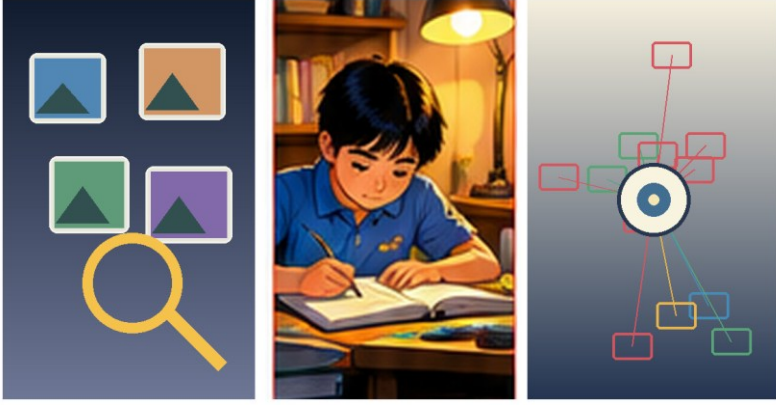
गुरु प्रश्नसँ रुष्ट नहि, जिज्ञासा ज्ञानक साँस

जग बहुत अथाह—प्रश्न करू

नहि बुझलहुँ कहब लाजक विषय नहि

खोजू अपन राह—प्रश्न करू

गजल ७१ — समाचार



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: पहिने जाँचू

जे भेटल समाचार—पहिने जाँचू

तकर मूल विचार—पहिने जाँचू

चित्र कटल-छँटल हो सकैए, शब्द बदलि सकैए

खोजू साँच आधार—पहिने जाँचू

बहुत बेर एक झूठ बारम्बार कहल जाइत

नहि मानू प्रचार—पहिने जाँचू

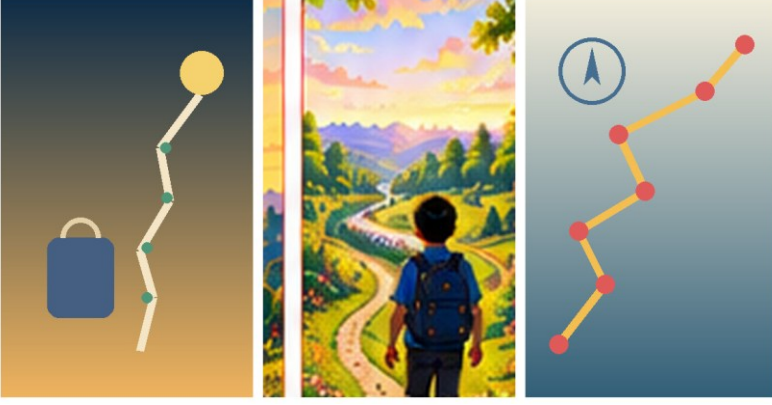
मीत पठेलक कहि कऽ बात सत्य नहि भऽ जाए

राखू नीक व्यवहार—पहिने जाँचू

आगाँ पठेबासँ पहिने एक क्षण रुकि देखू

स्रोतक समाचार—पहिने जाँचू

गजल ७२ — पहिल यात्रा



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: ध्यान राखू

पहिने बुझू स्थान—ध्यान राखू

कम राखू सामान—ध्यान राखू

टिकट, पता, फोनक चार्ज सभ पहिने देखू

अपन कागज-पहिचान—ध्यान राखू

अनचिन्ह लोकक बात सुनू, मुदा सहज नहि मानू

राखू अपन ध्यान—ध्यान राखू

बाट भुला जाए तऽ पूछब लाजक बात नहि

खोजू सही निदान—ध्यान राखू

यात्रा स्वतन्त्रता अछि, जिम्मेदारी सेहो

दूनूक समान मान—ध्यान राखू

गजल ७३ — पहिल भाषण



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: मञ्चपर

काँपए तइयो विचार मञ्चपर

धीरे उठय पुकार मञ्चपर

सब शब्द कण्ठस्थ हो, ई जरूरी नहि होइ

राखू विषयक आधार मञ्चपर

श्रोता लोक अछि, परीक्षा लेबय बैसल नहि

सहज रहय व्यवहार मञ्चपर

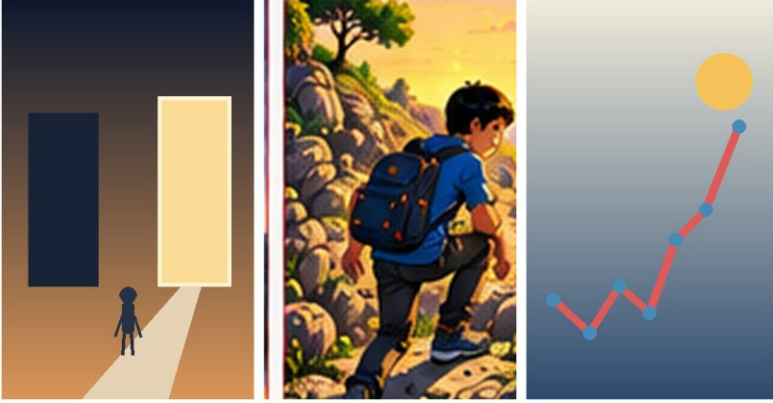
भूलि गेलहुँ एक पाँती तऽ साँस लिअ कने

फेर खोलू विचार मञ्चपर

एक बेर बाजलापर डर छोट भऽ जाइत अछि

खुलि जाए संसार मञ्चपर

गजल ७४ — पहिल असफलता



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: फेर जाउ

पहिल बेर भेटल हार फेर जाउ

मोनपर नहि लिअ भार फेर जाउ

चयन नहि भेल तँ योग्यता समाप्त नहि होइ

बदलि कने विचार फेर जाउ

एक दुआर बन्द भेल, सब बाट बन्द नहि

खोजि दोसर दुआर फेर जाउ

जे प्रश्न कठिन छल, ओहि पर फेर अभ्यास करू

तखन होएब पार फेर जाउ

असफलता परिचय नहि, एक अनुभव मात्र

छोड़ि आइक हार फेर जाउ

गजल ७५ — समूहक दबाव



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ात • रदीफ: सोचि कहू

जे मनकैं नहि भावै बात सोचि कहू
हाँ कहब जरूरी नहि हर बात सोचि कहू
मीत यदि गलत काज लेल दबाव देत अहाँपर
दबाव जँ पहुँचाबए आघात सोचि कहू
सन्देशमे साहस पैघ, सोझाँ बात अलग होइ
करू पहिने मुलाकात सोचि कहू
'ना' कहबो सम्बन्धक विरोध नहि होइ सभ दिन
ई आत्ममानक सौगात सोचि कहू
साँच मीत अहाँक सीमा बुझि सकैए
मनमे नहि राखू बात सोचि कहू

गजल ७६ — डिजिटल विराम



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -रे • रदीफ: फोन राखू

बहुत भेल ई शोर फोन राखू
आब उगि रहल भोर फोन राखू
एक सूचनासँ दोसर सूचना मनकैँ खींचै
कने छोड़ू ओ डोर फोन राखू
पढ़बाक समय ध्यान बारम्बार टूटि जाए
राखू मनक जोर फोन राखू
गाछक पात हवा लगिते गीत जकाँ हिलैए
देखू नब हिलोर फोन राखू
यन्त्र उपयोगी अछि, मुदा निन्नो जरूरी
राति बहुत भेल, ई शोर फोन राखू

गजल ७७ — समय बाँटू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी

मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ल · रदीफ: समय बाँटू

पढ़ाइ अछि सवाल—समय बाँटू
खेलक सेहो खयाल—समय बाँटू
एके साँझ सभ काज पूरा करब सम्भव नहि
देखू अपन हाल—समय बाँटू
जालजगत एक क्षणमे घंटा खा सकैए
तोड़ू कने ओ जाल—समय बाँटू
निन्न घटे तऽ बिहानक मन थाकल रहत
बदलू दिनक चाल—समय बाँटू
पोथी, मीत, खेल, विश्राम—सभ जीवनक भाग
राखू सभक खयाल—समय बाँटू

गजल ७८ — पहिल जिम्मेदारी



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -म · रदीफ: जिम्मेदारी लिअ

छोट हो तइयो काम—जिम्मेदारी लिअ

काजसँ बनत नाम—जिम्मेदारी लिअ

पहिल कमाइ आयल तऽ सभटा खर्च जरूरी नहि

बुझू पाइक दाम—जिम्मेदारी लिअ

घरक एक काज नियमित अपने सँ करैत रहू

नहि खोजू आराम—जिम्मेदारी लिअ

चूक भऽ जाए तऽ बहाना बनब समाधान नहि

रुकि लिअ विराम—जिम्मेदारी लिअ

स्वतन्त्र होएब केवल मनमानी करब नहि होइ

अपन चुनल काम—जिम्मेदारी लिअ

गजल ७९ — साँच जाँचू



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी

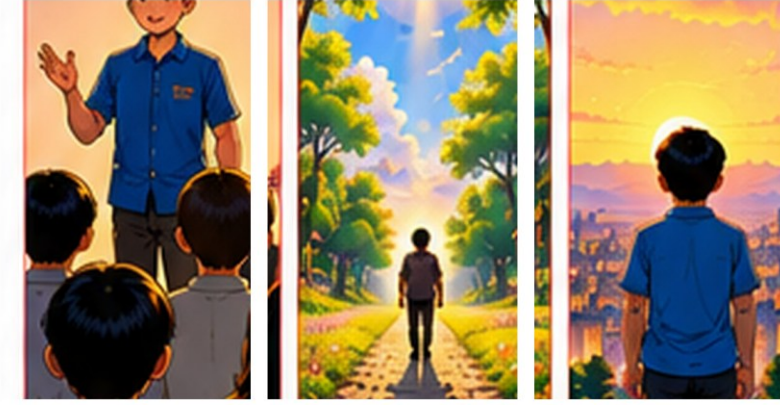
मात्रा-क्रम: १७-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: साँच जाँचू

आयल जँ समाचार—साँच जाँचू
बनाबय पूर्व विचार—साँच जाँचू
जालजगतमे तेजीसँ गलत बात फैलि सकैए
देखि ककर प्रचार—साँच जाँचू
चित्र पुरनका भऽ सकै, शीर्षक नब बनि सकैए
बुझू एहन व्यवहार—साँच जाँचू
मीत पठेलक अछि, ताहिसँ बात सत्य नहि होइ
खोजू भरोसाक आधार—साँच जाँचू
फेर पठेबासँ पहिने एक क्षण रुकि सोचू
तखन मानू समाचार—साँच जाँचू

गजल ८० — अपन आवाज



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

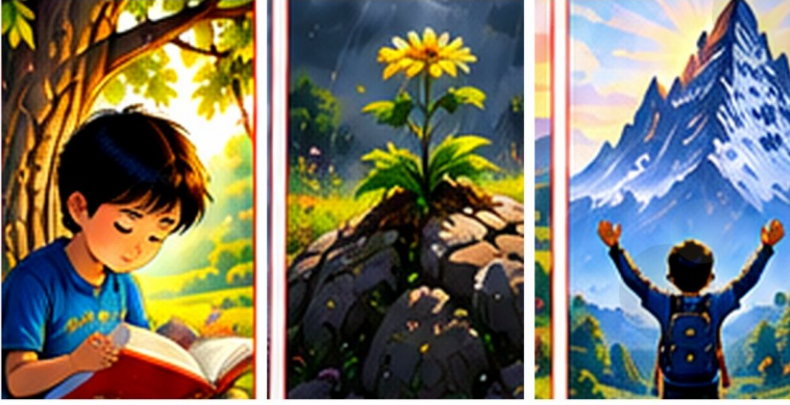
मात्रा-क्रम: १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ात · रदीफ: खुलि बाजू

मोनमे अछि जँ बात—खुलि बाजू
साँच चाही जँ साथ—खुलि बाजू
सभ चुप अछि, ताहिसँ गलत बात ठीक नहि
लम्बा हो जँ रात—खुलि बाजू
ककरो मजाक बेर-बेर मन दुखबैत रहए
दबल नहि राखू आघात—खुलि बाजू
नम्रता चुप्पी नहि, अपन मत सेहो जरूरी
मानू ई सौगात—खुलि बाजू
पहिन सुनू दोसराकँ, फेर अपन बात कहू
नेहसँ दिन-रात—खुलि बाजू

गजल ८१ — परीक्षा बाद



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: २१-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: कने विश्राम करू

मोनपर बेसी भार—कने विश्राम करू
रुकि सँभारू विचार—कने विश्राम करू
एक परिणाम पूरा जीवनक माप नहि बनैत
खुलत दोसर दुआर—कने विश्राम करू
जे नहि भेल से देखि अपन मूल्य घटाउ नहि
सीखि लिअ एहि हार—कने विश्राम करू
काल्हि फेर पोथी खोलब, नव ढंगसँ पढ़ब
होएब धीरे पार—कने विश्राम करू
निन्न, भोजन, खेल—सभ पढ़बाक साथी अछि
देहक सुनू पुकार—कने विश्राम करू

गजल ८२ — मीतक सीमा



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७—२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —न • रदीफ: सीमा राखू

अपन मनक मान—सीमा राखू

मीतिमे सम्मान—सीमा राखू

मीत कहै तऽ सभ काज करब जरूरी नहि

बचि रहए पहिचान—सीमा राखू

हँसी-मजाक जँ ककरो भीतर चोट पहुँचाबए

राखू एहि पर ध्यान—सीमा राखू

ना कहब कटुता नहि, अपन निर्णयक अधिकार

राखू स्वाभिमान—सीमा राखू

साँच मीत ओ जे अहाँक असहमति सेहो बुझए

नेहक ई सम्मान—सीमा राखू

गजल ८३ — अपन लय



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ाल • रदीफ: अपन लय राखू

भीड़क अलग चाल—अपन लय राखू
मोनमे जँ सवाल—अपन लय राखू
सभ मीत एके बेर बहुत आगाँ बढ़ल बुझाए
नहि बिगाडू खयाल—अपन लय राखू
सीखबाक गति सभक भिन्न, तुलना थका दैए
पकडू अपन ताल—अपन लय राखू
एक दिन धीम रहब असफल होएब नहि होइ
बुझू अपन हाल—अपन लय राखू
दौड़ जरूरी तखन, जखन बाट अहाँक हो
सोचि चुनू चाल—अपन लय राखू

गजल ८४ — मीतक पहिचान



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -त · रदीफ: मीत चिन्हू

जे सुनए मनक बात—मीत चिन्हू

जे निभाबए साथ—मीत चिन्हू

जे अहाँक चूकपर हँसि अपमान नहि करए

जे सम्हारए आघात—मीत चिन्हू

जालजगतक संख्या मित्रताक माप नहि होइ

जे रहए कठिन रात—मीत चिन्हू

जे अहाँक सफलतापर ईर्ष्या नहि करए

ओहि नेहक सौगात—मीत चिन्हू

असहमति हो तइयो सम्मान जकर नहि घटए

ओकर साँच बात—मीत चिन्हू

गजल ८५ — डरक पार



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

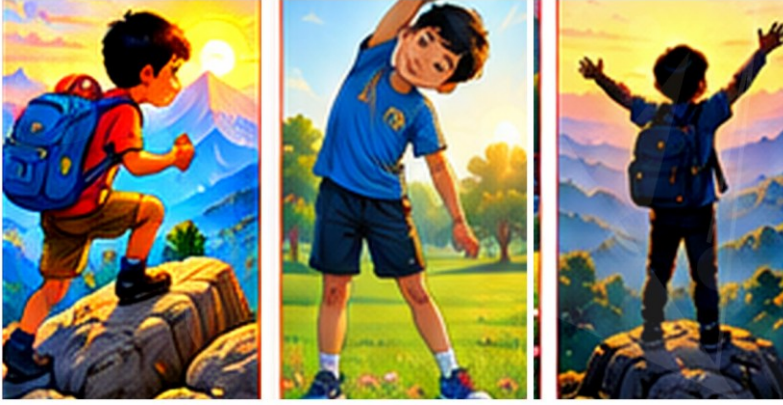
मात्रा-क्रम: १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: आगाँ बढू

भेटल जँ हार—आगाँ बढू
बन्द भेल दुआर—आगाँ बढू
डर कहै “नहि होएत”, मन कहै “एक बेर करू”
राखि साफ विचार—आगाँ बढू
मदति माँगब दुर्बलता नहि, सीखबाक उपाय
खोजू नीक आधार—आगाँ बढू
छोट-छोट पग जोड़ि पैघ दूरी पार होइ
धीरे होएब पार—आगाँ बढू
साहस भयक अभाव नहि—भयमे पग धरब
सम्हारि अपन भार—आगाँ बढू

गजल ८६ — आरम्भ



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: २१-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: एखन आरम्भ करू

मोनपर नहि भार—एखन आरम्भ करू

खोलू पहिल दुआर—एखन आरम्भ करू

पैघ काज देखिते जँ मोन अधीर भऽ जाए

बाँटि लिअ सभ भार—एखन आरम्भ करू

काल्हिक भरोस पर आइक घड़ी नहि गमाउ

समय बनत आधार—एखन आरम्भ करू

अटकू तऽ मीत वा गुरु सँ पूछि फेर चलू

मदति सँ होएब पार—एखन आरम्भ करू

पहिल प्रयास सिद्ध नहि हो तऽ फेर सँ सीखू

नहि मानू ई हार—एखन आरम्भ करू

गजल ८७ — रुचिक बाट



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान • रदीफ: अपन रुचि चिन्हू

जे करिते बढए ज्ञान—अपन रुचि चिन्हू
जाहिमे जागए प्राण—अपन रुचि चिन्हू
जे काज करिते मोन भीतरसँ जागि उठए
ओहिमे अछि पहिचान—अपन रुचि चिन्हू
मीतक बाट नीक, मुदा सभक बाट एक नहि
खोजू अपन उड़ान—अपन रुचि चिन्हू
रुचि संग अनुशासन जुड़त तखन कौशल फलत
दिअ श्रमक सम्मान—अपन रुचि चिन्हू
निर्णय अधीरतामे नहि, सीखि देखिकऽ करू
बढ़त तखन ज्ञान—अपन रुचि चिन्हू

गजल ८८ — साँचक जाँच



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: २०-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: जाँचि तखन मानू

आयल जँ समाचार—जाँचि तखन मानू

राखू अपन विचार—जाँचि तखन मानू

चित्र काटि-जोड़ि ककरो नामसँ भेजल जा सकै

खोजू मूल आधार—जाँचि तखन मानू

जे बात भय वा क्रोध जगबैत फैलै बेगसँ

बुझू ओकर प्रचार—जाँचि तखन मानू

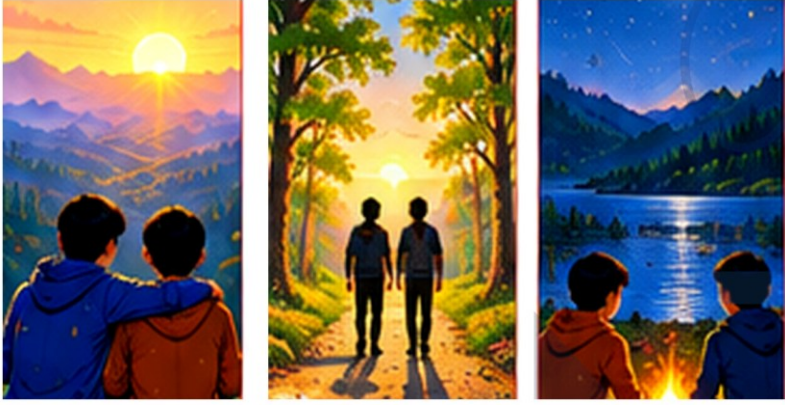
मीत पठओलक तइयो साँच होएब जरूरी नहि

राखू सावध व्यवहार—जाँचि तखन मानू

साँच बाँटब दायित्व, अधीर नहि होउ

रोकू असत्य प्रचार—जाँचि तखन मानू

गजल ८९ — नब मीत



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

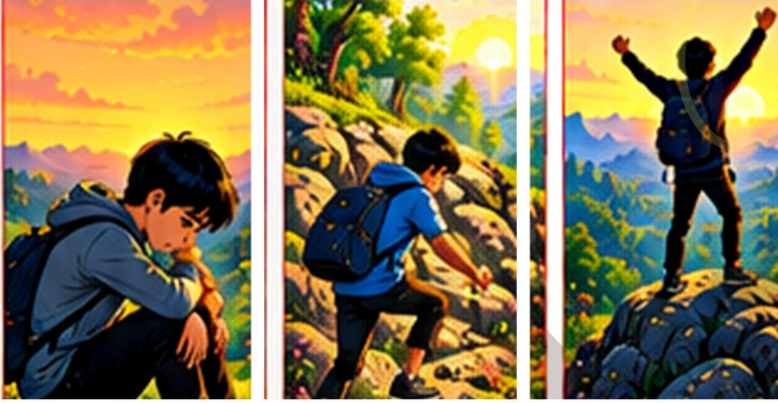
मात्रा-क्रम: १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: धीरे चिन्हू

नब मीतक व्यवहार—धीरे चिन्हू
ओकर सुनू विचार—धीरे चिन्हू
पहिल हँसीये भरोसाक पूरा प्रमाण नहि
खोजू साँच आधार—धीरे चिन्हू
जे अहाँक सीमा मानए, ओहि संग सहज रहू
केहन ओकर संसार—धीरे चिन्हू
मीत ओ जे कठिन घड़ीमे उपहास नहि करए
बुझू ओकर नेहार—धीरे चिन्हू
संग रहू, मुदा अपन विवेक नहि छोडू कखनो
देखू सभ व्यवहार—धीरे चिन्हू

गजल १० — भूल स्वीकार



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: साँच कहू

भूल भेल—स्वीकार, साँच कहू

बाट खुलत सुधार—साँच कहू

ढाँपि राखल चूक मनक भीतर पैघ होइत जाए

राखू साफ विचार—साँच कहू

क्षमा माँगब हार नहि, साहसक एक रूप अछि

हलुक होएत भार—साँच कहू

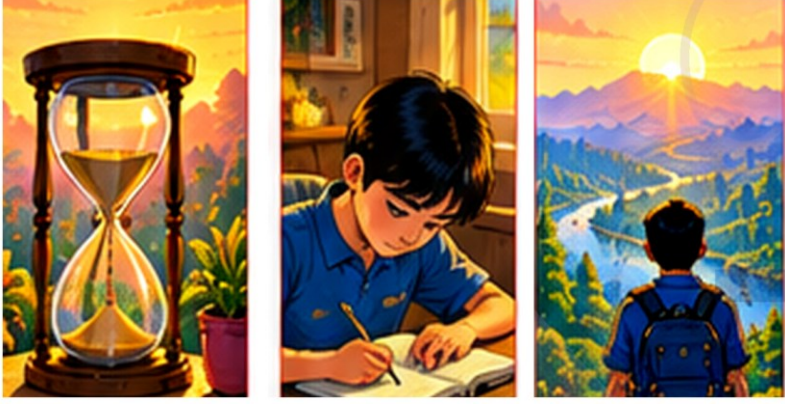
जे बिगड़ल से फेर बनि सकै धैर्य आ श्रमसँ

बदलू अपन व्यवहार—साँच कहू

अपन चूकसँ सीखल पाठ दूर धरि संग चलत

करू खुलि स्वीकार—साँच कहू

गजल ९१ — एखन करू



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -म • रदीफ: एखन करू

जे छोट अछि काम—एखन करू

नहि बढ़ाउ विराम—एखन करू

काल्हि कहैत-कहैत काज पहाड़ जकाँ बढ़ि जाए

दिअ ओकर नाम—एखन करू

दस मिनटसँ आरम्भ कएलो बाट खुलि सकैत अछि

सोचू नहि परिणाम—एखन करू

एक काज पूरा कऽ तखन दोसर दिस पग धरू

तखन लिअ आराम—एखन करू

समयक मान राखब अपनहि लेल नीक उपहार

सँभारू अपन काम—एखन करू

गजल ९२ — प्रश्न पुछू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ह · रदीफ: प्रश्न पुछू

बुझबाक जँ अछि चाह—प्रश्न पुछू

नहि भेटए जँ राह—प्रश्न पुछू

नहि बुझलहुँ कहब लाजक कोनो कारण नहि

ज्ञानक जग अथाह—प्रश्न पुछू

एक उत्तरसँ दोसर जिज्ञासा जन्म लैत अछि

चलैत रहए प्रवाह—प्रश्न पुछू

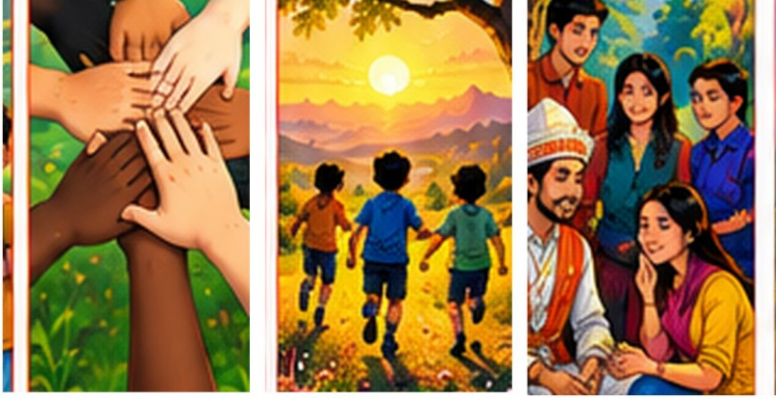
गुरु, पोथी, मीत—सभसँ सीखबाक बाट खुलल

राखू मनमे उत्साह—प्रश्न पुछू

अन्हर मान्यतासँ नीक अछि कारण खोजि लेब

साँचक राखू चाह—प्रश्न पुछू

गजल ९३ — काज बाँटू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी

मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: संग करू

एक्के माथ नहि भार—संग करू

बैसि साझा विचार—संग करू

टोलीमे सभक सामर्थ्य अलग, से बुझि काज दिअ

नीक राखू व्यवहार—संग करू

जे कम बाजै ओकरो मत सुनब जरूरी अछि

सम्मानक आधार—संग करू

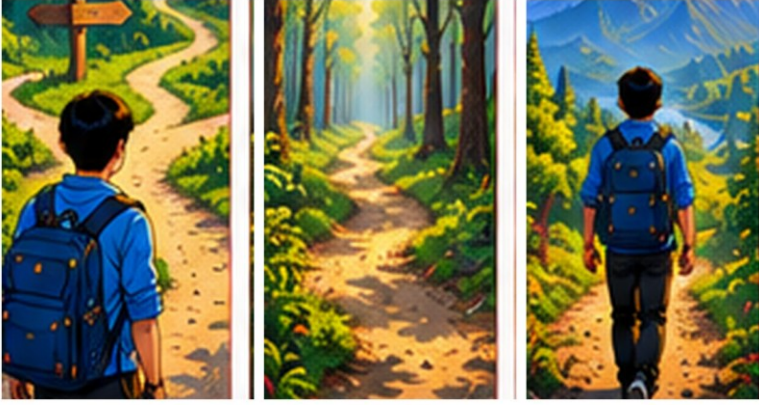
श्रेय अकेले नहि, सभक श्रमक हिस्सा मानू

सभकेँ दिअ अधिकार—संग करू

जीत तखन मीठ जखन टोली एकसाथ हँसै

हलुक होएत भार—संग करू

गजल ९४ — अपन गति



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

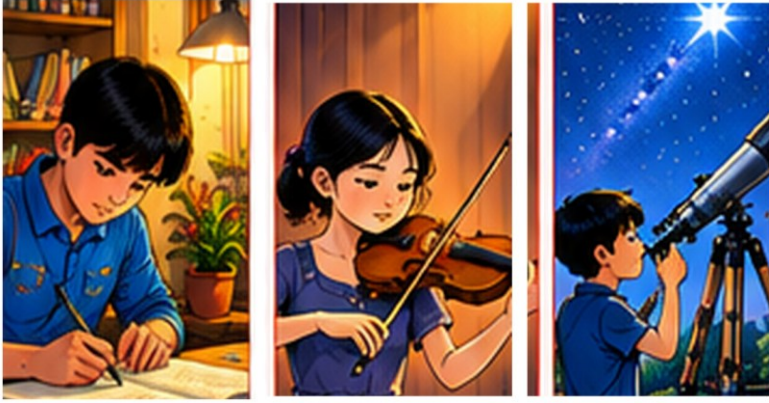
मात्रा-क्रम: १८-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: अपन गति राखू

बाटपर राखू ध्यान—अपन गति राखू
सीखि बढाउ ज्ञान—अपन गति राखू
दोसर केतेक आगाँ गेल से नापि दुखी नहि होउ
अपन श्रमक मान—अपन गति राखू
धीरे बढलो पग जँ नियमित अछि तऽ दूर जाए
बनत अपन पहिचान—अपन गति राखू
विश्रामो यात्रा केर अंश, आलस नहि बुझू
देह-मनक सम्मान—अपन गति राखू
दौड़ सभक भिन्न, मुदा लक्ष्यक बोध संग रहए
राखू साफ ध्यान—अपन गति राखू

गजल १५ — नब हुनर



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

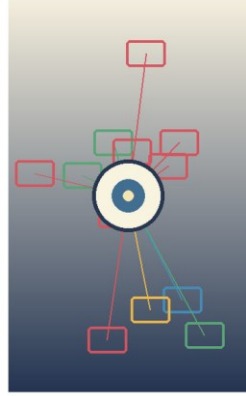
मात्रा-क्रम: १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: सीखैत रहू

खोलू नबका दुआर—सीखैत रहू
भूलसँ होएत सुधार—सीखैत रहू
पहिल बेर हाथ काँपए तऽ से असफलता नहि
राखू खुलल विचार—सीखैत रहू
रोज कने अभ्यास हुनरकें गहिरे करैत जाए
धीरे हो विस्तार—सीखैत रहू
दोसरक गति देखिकऽ अपन पगकें छोट नहि मानू
श्रम बनत आधार—सीखैत रहू
जे आइ कठिन बुझाइट, काल्हि अपन खेल भऽ सकै
धीरज संग सुधार—सीखैत रहू

गजल ९६ — बात जाँचू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: पहिने जाँचू

आएल जँ समाचार—पहिने जाँचू

करू अपन विचार—पहिने जाँचू

चित्र, सन्देश, आवाज सभ सत्य होइत नहि

खोजू ठोस आधार—पहिने जाँचू

हड़बड़ीमे पठाएल बात दूर धरि दुख पहुँचा सकै

रोकू झूठ प्रचार—पहिने जाँचू

मीत कहलक मात्रे सँ प्रमाण पूरा नहि भऽ जाए

बुझू नीक व्यवहार—पहिने जाँचू

साँच बाँटब दायित्व, केवल अँगुरीक गति नहि

राखू ई विचार—पहिने जाँचू

गजल ९७ — लिखि कऽ बुझू



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-३० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -व • रदीफ: लिखि कऽ बुझू

मनमे उठल भाव—लिखि कऽ बुझू

किएक बढ़ल दबाव—लिखि कऽ बुझू

कखनो शब्द कागजपर उतरिते गाँठ खुलि जाए

मोनक देखू बहाव—लिखि कऽ बुझू

उत्तर तुरन्त नहि भेटए तऽ प्रश्नो लिखि राखू

सोचमे दिअ ठहराव—लिखि कऽ बुझू

दिनक छोट उपलब्धि सेहो मोनकेँ बल दैत अछि

चिन्हू अपन स्वभाव—लिखि कऽ बुझू

अपन लेखा अपनासँ बात करबाक एक नेहिल बाट

फेर पढ़ू मनक भाव—लिखि कऽ बुझू

गजल १८ — एक काज



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: एक काज करू

पहिने राखू ध्यान—एक काज करू

तखन बढ़त ज्ञान—एक काज करू

दस दिशिमे मोन दौड़ए तऽ काज अधूरा रहि जाए

चिन्हू अपन पहचान—एक काज करू

छोट समयक खण्ड बनाउ, बीचमे कने विश्राम

थकबाक ई निदान—एक काज करू

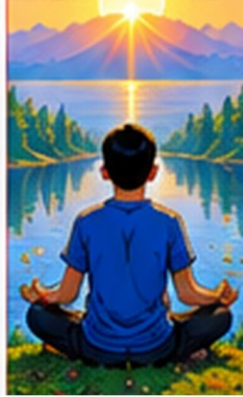
पूरा भेल तऽ अपन श्रमकेँ छोट कहि नहि टारू

दिअ श्रमकेँ सम्मान—एक काज करू

क्रमसँ पूरा काज आत्मविश्वास बढ़बैत जाए

मोन रहत एकतान—एक काज करू

गजल ९९ — रिसक बेर



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ास · रदीफ: कने थमू

गहिरी लिअ साँस—कने थमू
टूटय नहि विश्वास—कने थमू
रिसमे कहल कठोर वचन पाछाँ घाव बनि सकै
पहिने लिअ आभास—कने थमू
उत्तर देब जरूरी हो तऽ शब्द चुनि कऽ बाजू
करू एतबे प्रयास—कने थमू
मतभेद मीतक नेह मिटबैत नहि, जँ मन खुलल
बातमे राखू मिठास—कने थमू
शान्त भेल मोन तखन साँच कारण साफ बुझाए
फेर करू प्रयास—कने थमू

गजल १०० — अपन माप



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७—२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: —ान · रदीफ: अपन माप रखू

अपन श्रमक मान—अपन माप रखू

चिन्हू पहिचान—अपन माप रखू

ककरो पग तेज हो तऽ अपनेक पग छोट नहि भऽ जाए

राखू एहि पर ध्यान—अपन माप रखू

काल्हिसँ आइ कने आगाँ बढब सेहो जीत अछि

एहि सँ बढत ज्ञान—अपन माप रखू

तुलना कम, अभ्यास बेसी—हुनर अपने गहिराए

मनमे राखू सम्मान—अपन माप रखू

अपन गुण आ सीमा दुनू बूझब बुद्धिमानी

फेर चिन्हू पहिचान—अपन माप रखू

गजल १०१ — मीत चुनू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: मीत चुनू

पहिने बुझू विचार—मीत चुनू

देखू नीक व्यवहार—मीत चुनू

जे अहाँक हँसी संग आँसुओक अर्थ बुझि सकए

नेहक एहन आधार—मीत चुनू

मीत कखनो जोर दऽ अपनेक सीमा नहि तोड़य

राखय सभक अधिकार—मीत चुनू

भूल कहए तऽ रिस नहि, साँच कहए तऽ संग नहि छोड़य

सत्यक करए सत्कार—मीत चुनू

संख्या सँ नहि मीतक नेहिल गहिराइ नपैत अछि

मोन खोलय दुआर—मीत चुनू

गजल १०२ — कने-कने सीखू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: २०-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: कने-कने सीखू

राखू स्पष्ट विचार—कने-कने सीखू

बनाउ दृढ़ आधार—कने-कने सीखू

नब हुनर पहिल बेरमे सहज होएत ई नियम नहि

दिन-दिन हो विस्तार—कने-कने सीखू

एकहि बेर अनेक काज मोनकैँ थकबैत अछि

एक-एक कऽ हो पार—कने-कने सीखू

जे नहि बूझल, पुछब ज्ञानक दुआर खोलैत अछि

एहने नीक व्यवहार—कने-कने सीखू

दिन-दिन छोट अभ्यास मिलि हुनरकैँ गहिरे करैत

लेत अपन आकार—कने-कने सीखू

गजल १०३ — अपन स्वर



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: अपन स्वर राखू

अपन बातक मान—अपन स्वर राखू

चिन्हू पहिचान—अपन स्वर राखू

सभक मत सुनब नीक, मुदा मोनक प्रश्नो सुनू

राखू एहि पर ध्यान—अपन स्वर राखू

जे नहि मानू, नम्रतासँ कारण स्पष्ट कहि सकैत छी

एहि सँ बढ़त ज्ञान—अपन स्वर राखू

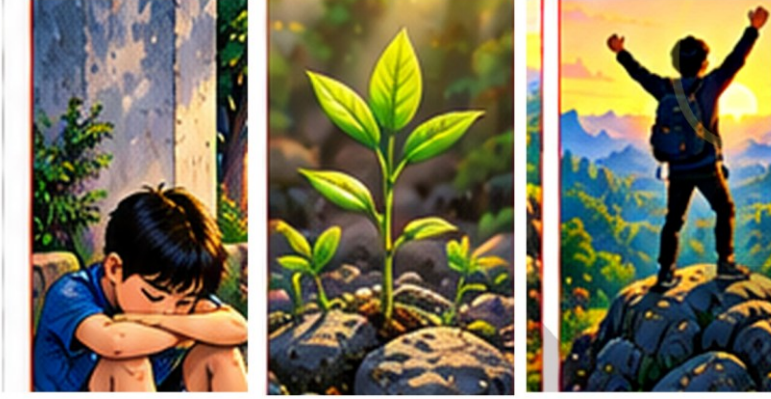
ककरो हँसीक भय सँ साँच विचार नहि दबाउ

दिअ निजकैँ सम्मान—अपन स्वर राखू

संगीतमे सभ स्वर अलग होइतो मेल बनबैत अछि

जीवन बनत गान—अपन स्वर राखू

गजल १०४ — भूलसँ सीखू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: भूलसँ सीखू

करू अपन स्वीकार—भूलसँ सीखू

फेर बदलू विचार—भूलसँ सीखू

एक चूक सँ पूरा हुनरक मोल घटि नहि जाइत

आनू नब सुधार—भूलसँ सीखू

जे नहि बूझल, फेर पुछू; प्रश्न ज्ञान खोलैत अछि

खुलत नब दुआर—भूलसँ सीखू

आनक चूक पर हँसब सीखबाक बाट नहि होइ

राखू नीक व्यवहार—भूलसँ सीखू

भूल नुकबैत रहब तऽ ओ फेर-फेर लौटि सकैए

साँच बनत आधार—भूलसँ सीखू

गजल १०५ — बेर बाँटू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ाम · रदीफ: बेर बाँटू

पहिने चुनू काम—बेर बाँटू

बीचमे दिअ विराम—बेर बाँटू

सभ काज एक्कहि घड़ी मोनपर राखब उचित नहि

एक-एक कऽ नाम—बेर बाँटू

पढ़ब, खेलब, घरक काज—सभक अपन-अपन ठाम

देखू फेर परिणाम—बेर बाँटू

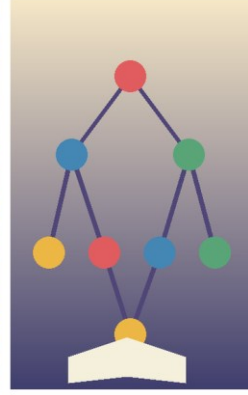
छोट लक्ष्य पूरा कऽ अगिला दिसि पएर बढ़ाउ

भेटत अपन ठाम—बेर बाँटू

निन्न आ विश्रामो देहक काजक भाग बुझू

दिअ उचित आराम—बेर बाँटू

गजल १०६ — साँच लिखू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: साँच लिखू

जतए भेटए ज्ञान—साँच लिखू

देखू पहिने प्रमाण—साँच लिखू

सुनल बात तुरते आगाँ पठेनाइ बुद्धि नहि

राखू एहि पर ध्यान—साँच लिखू

जे नहि बूझल से नहि गढ़ू, स्पष्ट कहू नहि बूझल

नहि बनाउ अनुमान—साँच लिखू

आनक बात उद्धृत करिते ओकर मोलो मानू

राखू उचित सम्मान—साँच लिखू

लेखन मात्र अक्षर नहि, अपनेक चिन्तनक दर्पण

बनत निज पहिचान—साँच लिखू

गजल १०७ — सुनि कऽ बाजू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: सुनि कऽ बाजू

राखू स्पष्ट विचार—सुनि कऽ बाजू

मानू नीक व्यवहार—सुनि कऽ बाजू

मीत जँ दुख कहए तऽ बीचहि मे अपन बात नहि आनू

सुनू ओकर हँकार—सुनि कऽ बाजू

अपन बात कहबो जरूरी, मुदा शब्द चोट नहि बनए

शब्दमे रह दुलार—सुनि कऽ बाजू

मतभेद हो तऽ व्यक्ति नहि, विषय पर चर्चा राखू

साँच बनत आधार—सुनि कऽ बाजू

सुनब हार नहि, बुझबाक पहिल सीढ़ी होइत अछि

खुलत नेहक दुआर—सुनि कऽ बाजू

गजल १०८ — कौड़ी बचाउ



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-३१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: कौड़ी बचाउ

पहिने करू विचार—कौड़ी बचाउ

देखू फेर बाजार—कौड़ी बचाउ

जे चाही आ जे मन ललचाबए, दूनूमे भेद बुझू

कम राखू उधार—कौड़ी बचाउ

छोट-छोट बचत काल्हिक कठिन घड़ीमे काज देत

बनत काल्हिक आधार—कौड़ी बचाउ

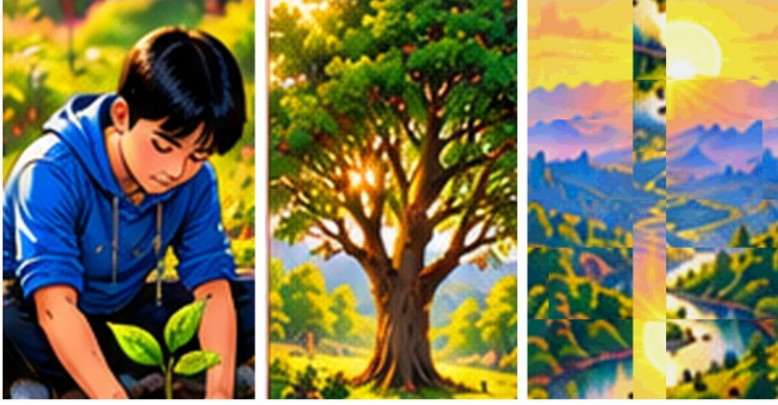
मीतक देखादेखी खर्च करब अपन बाट नहि होइ

अपन राखू व्यवहार—कौड़ी बचाउ

कमाइक पाछाँ श्रम अछि, एहि मोलकें मोनमे राखू

श्रमक ई उपहार—कौड़ी बचाउ

गजल १०९ — गाछ रोपू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: गाछ रोपू

अँगना आनू बहार—गाछ रोपू

धरतीक आधार—गाछ रोपू

नन्हि बिरबा आइ रोपब तऽ काल्हि पैघ छाँह बनत

हरियर करू संसार—गाछ रोपू

धूपक कठोर घड़ीमे पात शीतल छाँह पसारत

छाँहक उपहार—गाछ रोपू

चिड़ै डारि पर घर बनाएत, गीतसँ बिहान जगाएत

खुलत घरक दुआर—गाछ रोपू

एक-एक बिरबा जुड़ि धरती फेर हरियर वस्त्र पहिरत

धरती पहनत हार—गाछ रोपू

गजल ११० — प्रश्न लिखू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १४-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: प्रश्न लिखू

जागल जँ विचार—प्रश्न लिखू

खोजबाक आधार—प्रश्न लिखू

जे बात नहि बुझल, चुप रहि मानि लेब ज्ञान नहि होइ

खोलू बुझबाक दुआर—प्रश्न लिखू

एक उत्तर दोसर प्रश्नक बाटो खोलि सकैत अछि

बढ़त बोधक विस्तार—प्रश्न लिखू

भूल हो तऽ फेर जाँचू, साँच भेटत तखन स्वीकारू

राखू साँच स्वीकार—प्रश्न लिखू

जिज्ञासा सँ पोथी, लोक, प्रकृति सभ शिक्षक बनैत

पढ़ू खुलल संसार—प्रश्न लिखू

गजल १११ — मीतक मान



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-३३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान • रदीफ: मान राखू

मीतक अपन मान—मान राखू

ओकरो पहिचान—मान राखू

ठट्टा तखन धरि नीक जखन दोसरक मोन नहि दुखए

शब्दपर दिअ ध्यान—मान राखू

गोपन बात भरोसासँ कहल गेल तऽ बाहर नहि आनू

सम्बन्धक सम्मान—मान राखू

मीतसँ भूल हो तऽ नेहसँ कहू, साँच लुकौनाइ मीतता नहि

साँचक अपन विधान—मान राखू

दूनू अलग होइतहुँ संग चलि सकैत अछि नीक मीत

भिन्न स्वरक गान—मान राखू

गजल ११२ — सपन सँ काज



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-३१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -न • रदीफ: काज धरू

सपन पर दिअ ध्यान—काज धरू

रोज बनाउ विधान—काज धरू

पैघ लक्ष्य छोट-छोट डेगमे धरती पर उतरैत अछि

श्रम बनत पहिचान—काज धरू

अपन प्रगति दोसरक चालसँ नापब आवश्यक नहि

अपन राखू सम्मान—काज धरू

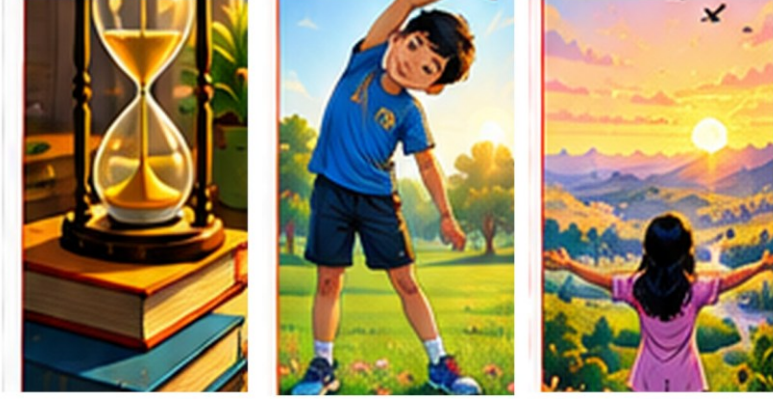
पहिल बेर जँ नीक नहि भेल तऽ फेर सीखि प्रयास करू

भूलसँ बढ़त ज्ञान—काज धरू

सपन तखन आकार लैत जखन हाथ नियमित काज करए

मोन लए उड़ान—काज धरू

गजल ११३ — बेर बाँटू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: बेर बाँटू

काजपर दिअ ध्यान—बेर बाँटू

रोज बनाउ विधान—बेर बाँटू

पढ़ाइ, खेल, विश्राम सभकेँ अपन-अपन ठाम भेटए

दिनक बनत पहिचान—बेर बाँटू

एकहि बेर बड्ड काज धरि मोनकेँ थकाएब बुद्धिक काज नहि

अपन राखू सम्मान—बेर बाँटू

जे नहि बुझल से पूछू, जे सीखल से फेर करि देखू

धीरे बढ़त ज्ञान—बेर बाँटू

छोट नियमित डेग दूर धरि लऽ जा सकैत अछि

सपन लए उड़ान—बेर बाँटू

गजल ११४ — पहिने सुनू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १७-३४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: पहिने सुनू

ककरो अलग विचार—पहिने सुनू

बुझू ओकर व्यवहार—पहिने सुनू

बीचहि बात काटि देलासँ अर्थ अधूरा रहि सकैत अछि

पूरा हो पुकार—पहिने सुनू

मतभेद हो तऽ प्रश्न करू, मुदा स्वरमे आदर बचल रहए

खोलू मनक दुआर—पहिने सुनू

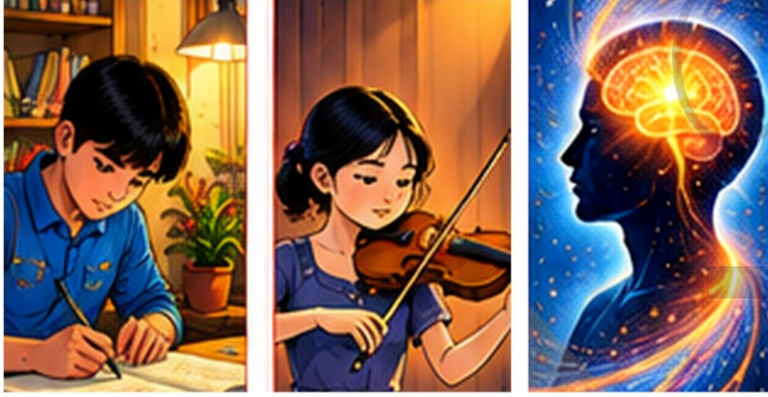
उत्तर देबासँ पूर्व बुझू जे सोझाँक जन की कहए चाहैत

बोध बनत आधार—पहिने सुनू

सुनबाक कला सेहो बाजबाक जकाँ सम्बन्ध बनबैत अछि

खुलत नव संसार—पहिने सुनू

गजल ११५ — हुनर निखारू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १२-४२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: निखारू

जे अछि ज्ञान—निखारू

अपन पहिचान—निखारू

पहिल बेर नीक नहि हो तऽ दोसर बेर फेर करि देखू

श्रमक सम्मान—निखारू

रोज कने अभ्यास हुनरकेँ भीतरसँ दृढ़ बनबैत अछि

सीखबाक विधान—निखारू

दोसरक नीक काज देखू, सीखू, मुदा देखादेखीमे अपना नहि हराउ

अपन उड़ान—निखारू

हाथ, मोन आ बुद्धि एक संग लगला पर हुनर सँवरैत

जीवनक गान—निखारू

गजल ११६ — सीमा राखू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १४-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: सीमा राखू

अपन मान—सीमा राखू

स्पष्ट पहिचान—सीमा राखू

मीत जाँ साँच मीत अछि तऽ अहाँक “नहि” केँ सेहो सहज बुझत

बचल रहए सम्मान—सीमा राखू

ककरो दबावमे अपन मनक असहमति चुपचाप नहि गाडू

बुझि कऽ ज्ञान—सीमा राखू

संग चलब सुन्दर अछि, मुदा निर्णयमे अपन बोध रहब जरूरी

अपन विधान—सीमा राखू

कखनो असहज लगए तऽ विश्वस्त पैघ जनसँ बात करब उचित

ई बातक ध्यान—सीमा राखू

गजल ११७ — पढ़ि बुझू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-३७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: पढ़ि बुझू

शब्दक भीतर विचार—पढ़ि बुझू

पाँतिक असल सार—पढ़ि बुझू

शीर्षक देखि निष्कर्ष तुरन्त नहि निकालू, पूरा बातक क्रम देखू

तथ्य बनत आधार—पढ़ि बुझू

लेखक की कहैत छथि आ प्रमाण की कहैत अछि—दूनू अलग देखू

बुझू तखन व्यवहार—पढ़ि बुझू

एकहि विषयपर दोसर मत सेहो खोजू, तुलना सँ दृष्टि पैघ होइत

खुलत नव संसार—पढ़ि बुझू

जे प्रश्न उठल से लिखि राखू, फेर उत्तरक स्रोत धरि पहुँचू

बोधक हो विस्तार—पढ़ि बुझू

गजल ११८ — बाट चुनू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १४-४५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -न · रदीफ: बाट चुनू

अपन पहिचान—बाट चुनू

संग राखि ज्ञान—बाट चुनू

सभ मीत एक दिशा जाए तइयो अहाँ लेल ओहि दिशामे जाएब जरूरी नहि

राखि आत्मसम्मान—बाट चुनू

जे काज मन भाए, जाहिमे सीखबाक चाह आ श्रम दूनू टिकि सकए

बनाउ अपन विधान—बाट चुनू

चूक हो तऽ दिशा फेरि सकैत छी, पहिल निर्णय जीवन भरिक बन्धन नहि

खुलल अछि उड़ान—बाट चुनू

धीरे-धीरे अपन स्वर, अपन हुनर, अपन काज एक संग पहिचान बनत

जीवनक गान—बाट चुनू

गजल ११९ — निज बात



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १४-३७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ान · रदीफ: सहेजि राखू

मीतक मान—सहेजि राखू

कथाक ध्यान—सहेजि राखू

ककरो निजी बात अनुमति बिनु दोसरक आगाँ नहि पसारू

बचल रहए सम्मान—सहेजि राखू

सन्देश, चित्र वा निजी लिखाइ बाँटबासँ पहिने अनुमति पुछू

स्पष्ट विधान—सहेजि राखू

विश्वास बनबामे बेर लगैत, टूटबामे एक क्षण पर्याप्त होइत

मीतक पहिचान—सहेजि राखू

अपनो सीमा साफ कहू, दोसरक सीमा सेहो आदर सँ मानू

सम्बन्धक ज्ञान—सहेजि राखू

गजल १२० — प्रश्नक साहस



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-३५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: प्रश्न करू

मनमे उठल विचार—प्रश्न करू

ज्ञानक खुलत दुआर—प्रश्न करू

नहि बुझल बात चुप राखब बुद्धि नहि, बुझबाक चाह स्वाभाविक अछि

खोजू ठोस आधार—प्रश्न करू

एक उत्तर भेटल तइयो स्रोत, कारण आ प्रमाण फेर देखि लिअ

बढ़त बोध-विस्तार—प्रश्न करू

गुरु, पोथी आ प्रयोग अलग-अलग बाटसँ बात बुझा सकैत अछि

सीखू नीक व्यवहार—प्रश्न करू

प्रश्न विरोध नहि, विचारक गति अछि—आदर संग पुछू

राखू निज अधिकार—प्रश्न करू

गजल १२१ — दिनक क्रम



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: क्रम बनाउ

काजक आधार—क्रम बनाउ

बेरक व्यवहार—क्रम बनाउ

पढ़ाइ, खेल, विश्राम आ घरक छोट दायित्व—सभ लेल ठाम राखू

खुलत दिनक दुआर—क्रम बनाउ

एकहि बेर सभ काज पकड़ला सँ मोन थाकि जाए, एक-एक काज चुनू

घटत मोनक भार—क्रम बनाउ

योजना कठोर देबाल नहि, आवश्यकता पर फेर बदलि सकैत छी

राखू साफ विचार—क्रम बनाउ

दिन पूरा भेलापर देखू कोन काज भेल, कोन काल्हि लेल रहल

सीखक हो विस्तार—क्रम बनाउ

गजल १२२ — दबावमे निर्णय



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १४-४३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -न · रदीफ: अपन मन सुनू

अपन मान—अपन मन सुनू

संगमे राखू ज्ञान—अपन मन सुनू

सभ मीत एके बात कहए तइयो निर्णय अहाँक देह, समय आ सीमा सँ जुड़ल

बचत निज पहिचान—अपन मन सुनू

ना कहब असभ्यता नहि, जँ काज अहाँक सीमा वा मूल्यक विरुद्ध पड़ए

राखू आत्मसम्मान—अपन मन सुनू

निर्णय पहिने सोचू, परिणाम बुझू, फेर जे उचित बुझाइ से स्पष्ट कहू

बनाउ अपन विधान—अपन मन सुनू

साँच मीत अहाँक असहमति सुनत; केवल भीड़क स्वरकँ सत्य नहि मानू

निर्णयमे राखू ध्यान—अपन मन सुनू

गजल १२३ — मीतक गोपन बात



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-५० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -न · रदीफ: गोपन राखू

मीतक मान—गोपन राखू

कथाक ध्यान—गोपन राखू

विश्वासमे कहल निजी बात हँसी, चर्चा वा देखादेखीक सामग्री नहि होइत

बचल रहए सम्मान—गोपन राखू

चित्र, सन्देश वा निजी लिखाइ दोसरक आगाँ पठेबासँ पहिने अनुमति लिअ

एहि नेहक विधान—गोपन राखू

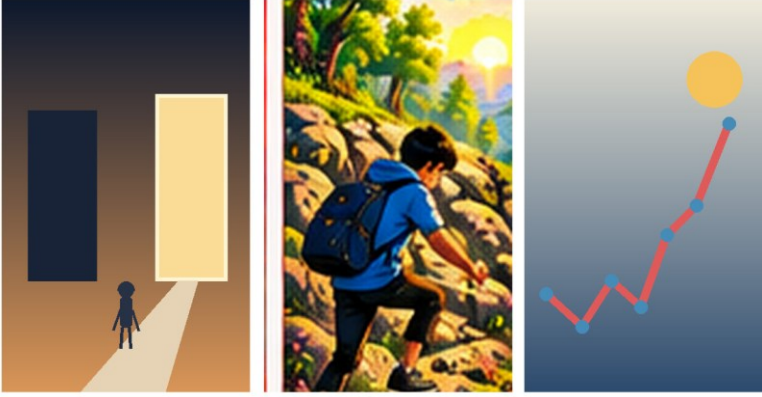
जे सीमा अहाँ अपन लेल चाहैत छी, ओहि सीमा दोसरक लेल सेहो मानू

मीतक साँच पहिचान—गोपन राखू

ककरो सुरक्षा संकटमे हो तऽ विश्वस्त वयस्कसँ सहायता लेब गोपनता तोड़ब नहि,
रक्षा अछि

समझक ई ज्ञान—गोपन राखू

गजल १२४ — अपूर्णतासँ सीख



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १८-४६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: फेर सँ सीखू

एक चूक नहि हार—फेर सँ सीखू

राखू साफ विचार—फेर सँ सीखू

पहिल प्रयास अधूरा रहल तऽ देखू कोन ठाम अटकल, कारण लिखि लिअ

भेटत नब आधार—फेर सँ सीखू

जे नहि बुझायल से पुछू: सहायता माँगब सीखक स्वाभाविक अंश अछि

खुलत ज्ञानक दुआर—फेर सँ सीखू

पुरान उत्तर जाँचि सुधारू, नव विधि आजमाउ, आ अपन प्रगति तुलना अपनहि सँ करू

बोधक हो विस्तार—फेर सँ सीखू

अपूर्ण होएब लाज नहि; ई देखब आवश्यक जे अगिला बेर की सुधारि सकैत छी

सीखू नीक व्यवहार—फेर सँ सीखू

गजल १२५ — अपन सीमा



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १४-५४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -न · रदीफ: सीमा राखू

अपन मान—सीमा राखू

निज पहिचान—सीमा राखू

मीत हो वा परिचित, जे बात मन वा देहकेँ असहज करए तकरा स्पष्ट कहब उचित अछि

राखू आत्मसम्मान—सीमा राखू

नहि कहला पर अपराध-बोध नहि पालू; अपन सहजता आ सुरक्षापर पहिने ध्यान दिअ

निर्णयमे राखू ध्यान—सीमा राखू

दोसरक सीमा सेहो ओहिना मानू जकाँ अपन सीमा मानल जाएबाक अपेक्षा करैत छी नेहक ई विधान—सीमा राखू

साँच सम्बन्ध दबाव पर नहि, परस्पर मान आ स्पष्ट सहमतिपर टिकैत अछि

बचल रहए सम्मान—सीमा राखू

गजल १२६ — प्रमाण देखू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १६-४४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: जाँचि लिअ

जे सुनलहुँ ओकर आधार—जाँचि लिअ

फेर बनाउ विचार—जाँचि लिअ

चित्र, सन्देश वा लघु दृश्यांश देखिते सत्य मानि लेब बुद्धिक नीक रीति नहि

के करैत अछि प्रचार—जाँचि लिअ

तिथि, स्रोत, सम्पूर्ण सन्दर्भ आ दोसर विश्वसनीय प्रमाण मिला कऽ बात बुझू

ई बनाउ व्यवहार—जाँचि लिअ

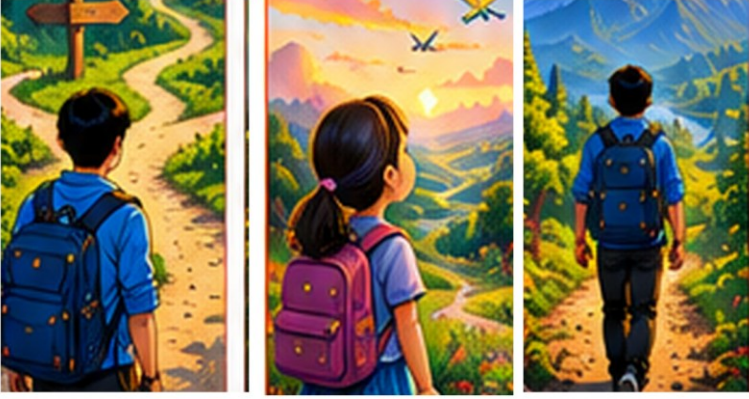
अपन पसिन्न बातो अनुचित भऽ सकैत अछि; मन जकरा मानए तकरो प्रमाण चाही

तखन करू स्वीकार—जाँचि लिअ

प्रश्न करब अविश्वास नहि; ई ज्ञानक दुआर खोलबाक सरल अभ्यास अछि

साँचक दृढ़ आधार—जाँचि लिअ

गजल १२७ — धीरे बढू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १५-४६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ास · रदीफ: धीरे बढू

करू छोट प्रयास—धीरे बढू

मनमे राखू आस—धीरे बढू

एकहि दिनमे सभ सीखब आवश्यक नहि, प्रतिदिन कने-कने अभ्यास जोडू

एहिसँ होएत विकास—धीरे बढू

थाकि गेलहुँ तँ कने रुकू; विश्राम यात्रा छोड़ब नहि, फेर चलबाक अवकाश अछि

सहज लिअ साँस—धीरे बढू

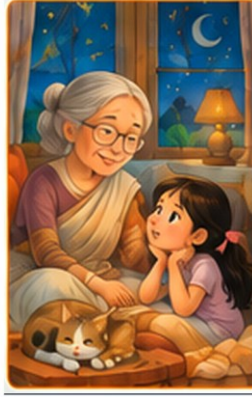
अपन प्रगतिक तुलना दोसरक गति सँ नहि, काल्हिक अपन स्थितिसँ करू

बढ़त आत्मविश्वास—धीरे बढू

लक्ष्य दूर हो तइयो प्रत्येक छोट पग दूरी घटबैत अछि—एहि बातकेँ मोन राखू

बाटमे राखू विश्वास—धीरे बढू

गजल १२८ — थाकल मोन



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १३-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -म • रदीफ: दिअ

थाकल मोनकेँ विराम दिअ

देहकेँ आवश्यक आराम दिअ

लगातार बैसल रहब पढ़ाइ नहि कहल जाइत

समय बाँटि फेर काम दिअ

निन्न घटा कऽ जीतल घण्टा लाभ नहि देत

निन्नकेँ ओकर नाम दिअ

कने चलू, पानि पीबू, अकास दिस ताकू

तखन देखू परिणाम दिअ

अपन सीमा बुझनाइ कमजोरी नहि होइ

स्वास्थ्यकेँ पहिल मुकाम दिअ

गजल १२९ — संग काज



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: १२-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ाथ · रदीफ: राखू

दलमे सभक साथ राखू
काजमे खुलल हाथ राखू
जे किछु नहि बुझल अछि ओकरो पुछबाक ठाम दिअ
स्पष्ट अपन बात राखू
एक जन सभ निर्णय करए तँ दल छोट भऽ जाइत
साझा चुनल पाथ राखू
श्रेय अकेले नहि, योगदानक मान सेहो बाँटू
मीतक संग उत्साह राखू
मतभेद आबए तँ व्यक्ति नहि, विषयपर बाजू
नेहक सहज साथ राखू

गजल १३० — सहायता माँगू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: २५-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: समयपर

बहु बढि जाए भार—सहायता माँगू समयपर
अटकि जाए विचार—सहायता माँगू समयपर
सभ काज एकले करब सामर्थ्यक एकमात्र चिन्ह नहि
खोलू विश्वासक दुआर—सहायता माँगू समयपर
गुरु, मीत, घरक जन—जे उपयुक्त हो तकरा कहू
मोनक करू सँभार—सहायता माँगू समयपर
समस्या छोट रहिते बात कएलासँ बाट सहज होइ
कठिन घड़ी होइ पार—सहायता माँगू समयपर
दोसरकँ सहायता देब आ स्वयं माँगब दूनू गुण
एहने बनै व्यवहार—सहायता माँगू समयपर

गजल १३१ — अपन सीमा राखू



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -ार · रदीफ: राखू

पहिने अपन मनमे साफ विचार राखू
अपन उचित सभ अधिकार मनमे राखू
ककरो जोरमे अनिच्छित काज नहि करू
बाजबामे सदा मृदु व्यवहार राखू
मीत हो तइयो निज समयक मान हो
मोनक उचित सँभार अपन हाथ राखू
नहि कहनाइ बैर नहि, सीमा स्पष्ट करैत
निर्णयक ठोस आधार सदिखन राखू
दोसरक सीमा सन निज सीमा मानू
नेहमे संवादक दुआर खुलल राखू

गजल १३२ — काजक क्रम



बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी

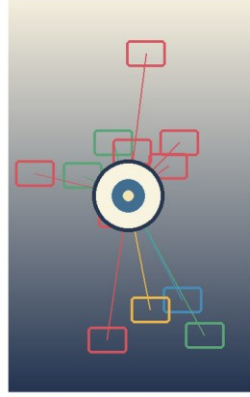
मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र · रदीफ: करू

पहिने अपन समयक सँभार नीक करू
एक-एक काजपर साफ विचार करू
सभ काज एक्के बेर हाथमे नहि लिअ
सूचीक नहि बड्ड विस्तार कखनो करू
जे आवश्यक अछि तकरा पहिने बाँटू
एक चरण पूरा कऽ धीरे पार करू
कठिनाइ आबए तँ क्रम फेर देखू
धैर्यसँ सभसँ मृदु व्यवहार सदा करू
काज पूरा भेलापर सीख लिखि राखू
अगिला बेर समयक सँभार नीक करू

गजल १३३ — साँच जाँचू



बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी

मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय • यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार

काफिया: -र • रदीफ: जाँचू

आएल प्रत्येक समाचार आइ जाँचू
अपन मनमे उठल पहिल विचार जाँचू
एक चित्र मात्र पूरा सत्य नहि होइत
दाबी पाछाँक साँच आधार जाँचू
के कहल, दोसर स्रोत की कहैत अछि
तकर बाद प्रचारक आधार जाँचू
सभ दोहराबए, तइयो बात साँच नहि
तथ्य संग कएल अपन व्यवहार जाँचू
सन्देह राखू, कारण बिना नहि नकारू
बुद्धिक अपन संतुलित विचार सदा जाँचू

अकुलाइत सुर

खण्ड २ (कविता-गीत)

गजेन्द्र ठाकुर

ट्रेनक गाड़ी



छुक छुक छुक
भरल सवारी
ट्रेनक गाड़ी

पोखरि गाछी
दौगल जाइ छी

ट्रेन गाड़ी
ठाढ़ सवारी
पोखरि गाछी
दौगल जाइ छी!!

ट्रेन गाड़ी धारक कातमे
आएल स्टेशन छुटल गपमे
ट्रेन चलल दौगल भरि राति
सुतल गाछ बृच्छ भेल परात

के छथि



के छथि जिनकर हथेलीमे
परिश्रमक रेखा चमकै,
के छथि जिनकर ललाटपर
घामक मोती नित दिन दमकै।
सुस्त बैसल हाथक रेखा
अपनहि भाग्य नहि लिखत,
जे उठि काज करय नित दिन
ओकर बाट अपनहि खुलत।
देह थाकत, घाम झहरत,
मुदा मोन नहि हारत,
कर्मक लेख हाथे लिखिते
नव प्रभात उजियारत।

राजा श्री अनुरन्वज सिंह



एक सुरमे बाजि देखाऊ
नहि अरुनन्वन नहि सिंह
पूरा एकहि बेर सुनाऊ
राजा श्री अनुरन्वज सिंह

जीह घुमाऊ, साँस सम्हारू,
अक्षर-अक्षर गुनगुनाऊ।
भूलि गेलहुँ? फेर सँ बाजू,
हाँसि कऽ सभकेँ फेर सुनाऊ।

धीरे बाजू, तेजो बाजू,
ताल मिला कऽ ताली लाऊ।
नामक खेलमे हँसीक मेला,
मिलि बच्चा सभ दोहराऊ।

एक बेर हम, एक बेर अहाँ,

संगी-संगति सुर मिलाऊ।
जीहक खेल आ गीतक लयमे,
हँसैत-गाबैत आगौं जाऊ।

सूतल



सूतल धरती
सूतल आकाश
सूति गेल चिडै
सूतल गाछ-पात
सूतल बौआ
सूतल बुच्ची
सूतल बाबा
सूतल बाबी
सूतल चन्द मामा आब
सूतू-सूतू बौआ
उठबाक अछि
भोरे-सकाल

अखण्ड भारत



धीर वीर छी मातु बेर की
अबेर होइत सङ्कल्पक क्षण ई
बुद्धि वर्चसि पर्जन्य बरिसथि
सभा बिच वाक् निकसथि
औषधीक बूटी पाकए यथेष्टा
अलभ्य लभ्यक योग रक्षा

आगाँ निश्चयेण कार्यक क्रमक
पराभव होए सभ शत्रु सभक
वृद्धि बुद्धिक होए नाश शत्रुत्वक
मित्रक उदय होए भरि जगत

नगर चालन करथि स्त्रीगण
कृषि सुफल होए करू प्रयत्न
वृक्ष-जन्तुक संग बढि आब
ठाढ होऊ नहि भारत भेल साँझ
दोमू वर्चसिक गाछ झहराऊ पाकल फलानि
नजि सोचबाक अनुकरणक अछि बेर प्राणी

वर्चस्व अखण्ड भरतक मनसिक जगतमे

पूर्ण होएत मनोरथ सभक कियो छुटत नजि

मोनक जड़िमे



पंक्तिबद्ध पुनः किञ्च नञि जानि किए सेजल
मोनक जड़िमे राखल सतत कार्यक क्रम भेटल

पर्वत शिखर सोझाँ अबैत हियाऊ गमाबथि
बल घटल जेकर पार दुःखक सागर करैत
करबाक सिद्धि सोझाँ छथि जे कियो विकल
भोथलाइत प्यासल अरण्यपथ मे हँ बेकल

मोनक जड़िमे राखल सतत कार्यक क्रम भेटल
पंक्तिबद्ध पुनः किञ्च नञि जानि किए सेजल

हाथ दए तीर आनि दए करौँत तखन तत
मनसिक अन्हारक मध्य विचरणहि सतत
प्रकाशक ओतए कए उत्पत्ति ठामहि तखन
विपत्तिक पड़ल कियो आब नञि होएत अबल

मोनक जड़िमे राखल सतत कार्यक क्रम भेटल
पंक्तिबद्ध कए पुनः किञ्च जानि किए सेजल

करबाक अछि लोक कल्याणक मन वचन कर्महि

नञि अछि अपन अभिमान छोड़ब अधः पथ ई
घुरत अभिमान देशक तखन अभिमानी हमहुँ छी
नञि तँ फुसियेक अभिमान लए करब पुनः की

मोनक जड़िमे राखल सतत कार्यक क्रमक ई
पंक्तिबद्ध पुनः किञ्च जानि कए सेजल छी

पुनः स्मृति



बितल बर्ख बितल युग
बितल सहस्राब्दि आब
मोन पाड़ि थाकल की
होयत स्मृतिक शाप

वैह पुनः पुनः घटित
हारि हमर विजय ओकर
नहि लेलहुँ पाठ कोनो
स्मृतिसेँ पुनः पुनः

सभक योग यावत नहि
होएत गए सम्मिलन
हारि हमर विजय ओकर
होएत कखनहु नहि बन्द

कलम गाछी



कलम गाछी सौँसे गमकै,
फूलक गन्ध बसातमे जाए,
बालक सभ इसकूल चलि गेल,
डारि-पात हौले हिलाए।
आमक कोमल नवका पातपर
घोरन कीड़ा घर बनबैत,
लाल-लाल चुट्टी जेहन
झोंका आबि झमकि उठैत।
माटि, पात, कीड़ा आ पवनक
अपन-अपन अछि नेम,
कलम गाछी सिखबै हमकैँ—
प्रकृति संग राखू नेह।

हाथीक मुँहमे लागल पाइप



बानर सोचलक की ?
जीतए-ए ई हाथी
एहि होलीमे हमहूँ
मुँह लगाएब पाइप

पाइप लगओने हाफी
भरि रंग ओ बानर
रहए करैत इन्तजारी

आँखि लागलए ओकर
नाकमे भेलए सुरसरी
आऽऽऽछी
खसल रंग भरल पाइप सद्यहि
रंगक बादर फूटि पड़ल,
भीजल गाछी, भीजल बाट।
हाथी हँसल सूँढ़ हिलबैत,
बानर भागल छोड़ि ठाठ।

संगी सभ ताली पीटि बजल—
रंगक खेलमे हार कतय!
बानर घुरि कऽ हँसि कहल—

हाथी, आब तँ मित्र भऽ गेल!

रंग उतरि जाएत साँझ धरि,
हँसी रहत मोनक भीतर।
होली सिखबैत संग रहब,
नेहक रंग हो सभसँ गहिर।

बानर राजा



सिंह राजसँ भेल पीड़ित वन-जन
एलेक्शन करायल मिलि सभ कियो
संख्या वानरक हरिण मिला कय
छल बेसी, से राजा भेल बानर यौ!

सिंहराजकेँ तामस अयलन्हि
खा गेल हरिणराजक बच्चा एकदिन

दाबीसँ हरिण गेल सम्मुख
वानर राजा कहलन्हि-
बदमाशी अछि सिंहक
कहि निकलि गेल जंगल बिचहि

गाछक डारि पकड़ि छिप्पी धरि
खूब मचेलक धूम

तामसे विख भय सिंहराज खएलक
बच्चा सभटा मृगराजक चुनि
जखन सुनाओल जाय वनराजकेँ
फेर वैह धूम ओ फेर मचाओल

मृगराज कहल हे नृप
एहि हरकंपसँ की होयत ?
जीवित होएत की हमर संतान?

कहल नृप कहू भाय
हम्मर मेहनतिमे अछि की कमजोरी
करल प्रयास हम भरिसक मुदा
बुझू हमरो मजबूरी !

चिड़ियाखाना



भालू मामा धीमे-धीमे,
बानर मामा डारि चढ़ए।
लुक्खी झटपट पातक ओटमे,
खिखीर घासक बाट पकड़ए।

कौआ कुचरए काऊँ-काऊँ,
के आबि रहल एहि घर?
मुरगाक कुकड़ू-कू सुनिते,
भोरक निन्न उड़ल एक बेर।

अंडा मुरगामे पैसल कहि,
मुरगा अंडासँ निकलल!
उलट-पुलट ई खेल सुनि कऽ,
हाँसि उठल मन, गीत मचल।

टिकली रंग-बिरंगक पाँखि,

फूलक ऊपर घूमि उड़ैए।
पाँखि पसारि जखन ओ बैसए,
फूलक रंग बुझाइए।

देखैत-देखैत मोनमे उठल—
जंगल छनि असली संसार।
गाछ, जलाशय, खुलल बसातमे,
जन्तु रहथि निर्भय, स्वच्छन्द अपार।

हम सीखलहुँ—जीव सभक सेहो
अपन जीवन, अपन अधिकार।
वन आ पानि बचत तखने,
हँसत धरती, गाबत संसार।

जमबोनी



जमबोनीक जोम पसरल,
जोम रंग चारूकात,
पीचल पिसीमाल धरती,
बसात गाबए नव गप।

एत्तेक ऊँच गाछ सभ ठाढ़,
नभसँ करए जँका गप,
पातक बीच उजास झहरए,
छाँहमे जागए मोनक तप।

दोमब मुदा अछि बड्ड ऊँच,
तैयो आँखि निचाँ नहि राखू,
माटिक विश्वास पएरमे बाँधि,
मोनक पाँखिसँ आगाँ ताकू।

बोन सुपारी तोड़ि चली घुरि,

झोरामे वनक गमक समेटि,
जमबोनीक बाट सिखबए—
दूर चलू, अपनहि सँ भेटि।

बौआ ठेहुनिया मारि



भेल सोझ भए ठाढ़,
लकड़ीक तिनपहिया
देलक बाबू आनि।
पहिनहि भए गेल ठाढ़,
पकड़ि की होएत आब!

पएरक भीतर जागल साहस,
आँखिमे आगाँक बाट,
एक डग, दू डग, तीन डग बढ़ि कऽ,
खुलए नव अनुभूतिक पात।

काल्हि धरती नापैत-नापैत,
आइ उठल अपन बल,
पड़ि कऽ उठब, फेर सँ चलब—
एहने जीवनक सरल छल।

माए दूरसँ हाथ पसारथि,
बाबू हँसथि चुपचाप,
अपन देहक संतुलन सीखैत,
बढ़ए मोनक आत्मप्रताप।

ठेहुनियाक छोट लय जे छल,
बनत किशोरक चाल,
पड़ि-उठबाक पाठ सिखाबए,
जिनगीक ई पहिल ताल।

लकड़ी छोड़ि एक दिन बौआ,
अपनहि बाट पकड़त,
पहिल डगक ई स्मृति भीतर,
साहस सदियन जागत।

ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग



ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग,
कैरियर बला साइकिल
बाबू आनल कीनि।
पैडल छूबिते बसात हँसल,
आँगन भरल उमंग।

ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग,
बिन कैरियरक साइकिल
नहि कोनो काजक ईह!
संगी बैसत पाछू हमर,
गपक धार बहए निरन्तर।

ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग,
बैस, बैस, बैस,
कैरियरपर आबि;
धीरे चलब, बाट देखि कऽ,

संतुलन अपन साधि।

ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग,
पैडल पर पएर,
सभ रस्ता दैह!
घंटी कहए—हम आबि रहल छी,
सावधान रहि जैह।

कखनो चढ़ान, कखनो उतार,
कखनो कंकड़-बाट,
हिम्मत राखि हैंडल थामब,
नहि टूटत पएरक ताल।

गति तेज हो, बुद्धि जागल,
बाटक नियम न बिसरी,
अपन सुरक्षा, आनक आदर—
एहि सँ यात्रा सफल करी।

साइकिल केवल खेल नहि,
अपन गति, अपन बाट,
कक्षा, पुस्तक, मित्र, मैदान—
खोलए जीवनक नव पात।

ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग,
भोरक रौद आ साँझक छाह,
किशोर उमंगक संग;
दू चक्का पर सीखि रहल छी,

स्वाधीनताक नव रंग।

भोरक बसात



भोरक बसात

उठू-उठू बुच्ची, भेल प्रात,
रातिमे सभटा सुन्न,
भोरमे चिड़ै-चुनमुन।

फूलक गाछ, भोरक बसात,
भरल नव फूलसँ, भेल प्रात।
ओसक मोती पातपर चमकल,
पूरब लालिमा हँसि उठल।

निन्नक ओहार धीरे सरकल,
नव दिनक दुआर फेर खुलल।
पोथी-झोरा काँध पर राखू,
पएर बढ़ाउ खुलल बाट।

हवा कहै— बीचहि नहि ठमकू,

सपन माँगै जागल साथ।
आलस छोड़ि अभ्यास पकड़ू,
मोनमे साहस, आँखिमे प्रभात।

काल्हिक भूलसँ सीखि आगू,
आइ भेटल नव आरम्भक पात।
भोरक बसात फेर कहि रहल—
अपन सुरमे गाउ नव गाथ।

छाहक करतब



दुपहरियामे छोट छाह,
रौदक तीव्रतामे सिमटल।
पएर तरे चुपचाप बैसल,
जकाँ रहस्य कोनो लुकायल।

साँझक रौद जखन शीतल,
छाह हँसैत होइए पैघ।
आगाँ-पाछाँ संगहि चलै,
नहि छोड़ै हमर एकहु डेग।

कखन छोट, कखन लमहर,
बेला-बेला रूप बदलै।
प्रकाश जेम्हर बाट बनाबै,
छाह ओम्हर चुप्पे सरकै।

हम सोचलहुँ— माप बदलला सँ

मोनक मान कहाँ बदलै?
धीरज, साहस, सीखक जोति
भीतर जागै, बाट फरिछै।

कर जोरि कहलहुँ— छाह भाय,
संग रहू, मुदा ई गप:
रौद बदलै, बेला बदलै,
हम बढ़ैत रहब दिन-रात।

सपन



आइ देखल सपन
घर आएल बौआ
असगर छी ढहनाइत
बौआ संगे खेलाएब

माएक भेलैक बहन्ना !
हम्मर झोरा-झपटा
बिनु सरियेने जाथि

हम कहलियै देरी
तैयार करबएमे
किए करैछी अहाँ

माए कहैए
उठलहुँ देरीसँ अहाँ
उनटे हमरा कहए छी ?

इसकूलमे होमए दियौ ने देरी !

सपनमे बालपन फेर
आँगनमे दौड़ि आएल,
कागजक नाव, धूलक बाट,
पुरना हँसी जगाएल।

घड़ीक काँटा भागैत जाए,
भोरक बसात हँसै,
निन्नक बादर आँखिसँ हटैत,
नव दिन सोझाँ बसै।

सपन निन्नक खेलेटा नहि,
लक्ष्यक पहिल उजास,
समएसँ उठि बाट पकड़ब,
तखने पाँखि पाबै आस।

पोथी, प्रश्न, मित्रक संग,
अपन बाट हम गढ़ब,
आइ जे सपन आँखिमे जागल,
काल्हि तकरा सच करब।

कोइरीक कूकू



कोइरीक कूकू
कौआक करड़ब काऊँ
रातिमे गाछीक कीड़ीक स्वर
एहन सन—
“नानी तसला ला— भात पका!”
रातिक रतिचरक जीवन आहा

रातिमे इजोत भगजोगनीक
रातिमे अबैए, दिनमे बिलाइए
दिनमे ओकर काजे की?
दोसर रतिचरक स्वर—
“क्वैटीक्विक”
रातिक रतिचरक जीवन ई

गाछक पात हिलै बसातमे,
दूर पोखरिक पानि थरथर,

कान लगाबी तँ बुझाइत अछि—
राति लिखैछ गुपचुप अक्षर।

कोनो स्वर नै असगर अबै,
सभ मिलि बनबै रातिक राग,
ककरो पुकार, ककरो उत्तर,
ककरो पाँखिक धीमहि लाग।

हम किशोर चुप बैसल सुनैत,
कतऽ दिशा सँ के बजल?
निन्नाइत जग जकाँ बुझाइत,
भीतर कतेक कथा चलल।

भगजोगनी दीप जकाँ चमकै,
अन्हारक छातीमे उजियार,
राति सिखबैत— जे अनदेखल,
तकरो जीवन अछि अपार।

कूकू, काऊँ, क्वैटीक्विक,
ध्वनिसँ खुलै वनक पोथी,
सुनबाक कला मोनमे जागै,
अन्हारो देइ नव उत्तर आब।

शितलपाटी



शितलपाटी हम्मर,
पोथी हम्मर मनोहर पोथी,
सभटा पढ़ी, पात-पात खोलि,
मोनक भीतर जागय ज्योति।

साँझक प्रकाश झलफल,
नहि एहि बेरमे पढ़ू,
बाप रौ बाप— आँखि होएत खराप,
दीपक नीक उजासमे पढ़ू।

शितलपाटी पर बैसि चुपचाप,
अक्षर-अक्षर बाट बनाबय,
कखनो कथा, कखनो विज्ञान,
दूरक संसार लग अनाबय।

पन्ना फेरि प्रश्न उठाबी,

उत्तर खोजी अपन विचार,
पढ़ब केवल परीक्षा लेल नहि,
बुद्धि खुलय, बढ़य संसार।

आँखिक थाकन मोनमे राखी,
बीच-बीचमे दूर निहारू,
उजास, दूरी, बैसबाक ढंग—
देहक संग ज्ञानो सँभारू।

शितलपाटी हम्मर साथी,
पोथी संग किशोरक बाट,
धीरज, जिज्ञासा, नीक आदति—
एहि सँ उज्जर होयत प्रात।

मकड़ीक जाल



मकड़ीक जाल
माँछक लेल महाजाल
कीड़ीक फँसब
माछक कूदब
महाजाल खसब
माछक करतब-खेल

मुदा आइ बुझलहुँ
रहए ई जीबाक संघर्ष
जे आइ कए रहल छी हम
एहि दिल्ली नगरियामे

जालक सूत महीन-महीन,
एक-दोसरसँ जुड़ल तान,
ककरो लेल घरक रचना,
ककरो लेल कठिन फाँस।

ओसक बुन्नी मोती बनि
भोरक रौदमे चमकि उठै,
देखैत-देखैत मोन पुछै—
एहि गाँठिसँ बाट कतऽ फुटै?

जीवनक बाट सेहो एहन,
कखनो खुलल, कखनो जाल,
कखनो अवसर चमकि उठैछ,
कखनो सोझाँ ठाढ़ प्रश्न।

नगरक हल्ला, पढ़बाक दबाव,
काजक चिंता, समयक चाल,
मोन न हारै, आँखि न झुकै,
धीरज बनै अपन ढाल।

माछ जकाँ छलाँग लगा कऽ,
रस्ता खोजब फेरो-फेर,
टूटल सूतकेँ गाँठि बनाबी,
अन्हारमे सेहो खोजब भोर।

जाल सिखबैत— फँसब नै बस,
जुड़ब सेहो जीवनक गप,
सूझ-बूझ, श्रम, साहस संग
किशोर बनाबै अपन बाट।

वायुगोलक



वायुगोल बैलून,
हरियर पीअर, लाल-नील,
हाथमे धरिते मोन कहै—
आकाशक बाट कतेक झिलमिल।

एहिमे भरि रंग फेकी
भाएक मुँह पर हँसी उड़ाबी,
रंगक छींट जकाँ किशोर मोन
क्षणमे साँसे आँगन सजाबी।

भरि एहिमे आब हाइड्रोजन,
हलुक भए ऊपर गगन चढ़ै,
डोरि पकड़ल हाथक संग-संग
नजरि सेहो दूर-दूर बढ़ै।

बेचै छी बच्चा सभकेँ,

रंग चुनै छथि अपन-अपन,
ककरो पीअर, ककरो हरियर,
ककरो नील जकाँ गहिर सपन।

उड़बै छथि ओ ऊपर गगनमे,
मेघक कात, पवनक धार,
मोन पुछै— सीमा कतऽ धरि?
सपन किएक मानत देवाल?

डोरि हाथमे, आँखि अकासमे,
पएर रहय धरतीक ठाम,
उड़ब सेहो, सीखब सेहो—
एहने हो किशोरक काम।

हाथीक सूप सन कान



हाथीक सूपसन कान
पाइप बला मुँहसँ भरैए पानि
मुँह नीचाँमे आर
दू टा पैघ दाँत
चकाचक ठाढ़
मोट-मोट एकर पएर
पुच्छी अछि लटकैत
चीन्हि जाइ छियैक एकरा हम
मोट हाथीक धम्मक-धम
धम्मक-धम्मक पएर पड़ै,
माटि सुनै एकर चाल,
कान हिलाबै सूप जकाँ,
बसात करै संग ताल।
सूँड़ उठाबै, पानि उछालै,
बुन्नी चमकै रौदक संग,
धीरे चलै, मुदा पएरमे

धरती भरिक गहिरा रंग।
दूटा दाँत उज्जर चमकै,
आँखिमे शान्ति अपार,
पैघ देहमे कोमल चालि,
देखिते जागै जिज्ञासाक धार।
हम किशोर ठाढ़ दूरसँ देखि,
सोचैत छी ई गप—
पैघ होएब केवल बल नहि,
संयम सेहो जीवनक थाम।
जंगल, नदी, गाछक छाह,
सभ एक-दोसरक घर,
जीव-जगतक मान रखब त
सुरक्षित रहत ई धरती भर।
हाथीक सूपसन कान हिलै,
सूँड़क पानि छम-छम-छम,
चीन्हि जाइ छियैक एकरा हम—
मोट हाथीक धम्मक-धम।

छुट्टी



आइ छुट्टी
काल्हि छुट्टी
घूमब-फिरब जाएब गाम
नाना-नानी मामा-मामी
चिड़ै-चुनमुनी सभसँ मिलान।

बरखा बुन्नी आएल
मेघ दहोदिस भागल
कारी मेघ उज्जर मेघ
घटा पसरल।
चिड़ै-चुनमुनी आएल
आँगन भरि कलरव जागल।

माटिक गन्ह नाकमे बसत,
पोखरिक पानि हँसत झिलमिल,
गाछीक पातसँ बुन्नी टपकत,

पगडंडी पर पएर चलत चपल।

मामाक संग खेतक बाट,
नानीक कथा साँझक बेर,
नानाक संग गामक गप,
मोनक कोठरी भरत नेह फेर।

कखनो धानक हरियर लहर,
कखनो पोखरि, कखनो धार,
कखनो पंछीक पाँखि गनब,
कखनो मेघक रूप हजार।

छुट्टी केवल खेल नहि,
ई प्रकृतिक खुलल पाठ,
अपन लोक आ अपन माटि
सिखबैत जीवनक नीक बाट।

आइ छुट्टी
काल्हि छुट्टी
घूमब-फिरब जाएब गाम,
नेह, प्रकृति, नव उत्साह लऽ
फेर पढ़ाइमे देब धियान।

बौआ गेल सुनि



एक दू तीन
बौआ गेल सुनि
चारि पाँच छह
सुनि भेल भयावह
सात आठ नौ
गेल भदबरिया भाए
दस एगारह बारह
हमरा आबि उबारह
तेरह चौदह पन्द्रह
होएत आब सलहन्ना
सोलह सतरह आर
भेल भेर इयार
अठारह उन्नैस बीस
आब थाकल ईह
ईह सय हजार
हँ आब आएल तेजी इयार

गिनती चढ़ै सीढ़ी जकाँ,
एक डेग पाछाँ, दू डेग आगाँ,
कखनो हँसी, कखनो धकधक,
मुदा पएर नै रुकत बाटमे।

भय जँ आबै कान लगौने,
पहिने ओकर नाम बुझब,
मित्रक हाथ पकड़ि ठाढ़ होइ,
मोनक भीतर दीप जरब।

एकसँ बीस धरि स्वर उठै,
बीससँ आगाँ राह अनन्त,
संख्या जकाँ सपन बढ़ै,
सीमा तोड़ि मन होअए दिगन्त।

थाकल देह जँ कहए “बस आब”,
मोन कहए “आरो एक डेग”,
धीरे-धीरे साँस सम्हारि,
फेर उठाबी अपन वेग।

सय हजारक भीड़क बीचो,
अपन लय पहचानब हम,
गिनती केवल अंक नहि अछि—
धीरजक अभ्यास करब हम।

एक दू तीन— फेर आरम्भ,
चारि पाँच छह— साहस संग,
सात आठ नौ— आँखि उज्जर,
दससँ आगाँ अपन बाट।

हारि जँ आयत, फेर गिनब,
भय जँ आयत, गीत बनाब,
थकानक पार जे स्वर उठत,
ओहि स्वरमे भविष्य सजाब।

मिथिला



मथल जतए शत्रुकेँ
मिथिला छल ओ धरती
सभ धकियेलक अपन-अपन
सभ ठोठियेलक यौ

जनक जन-विश सभ अप्पन
गुरु-माता-पिता ई तीनू
नहि झुकब छोड़ि ककरो सोझाँ
मुदा अभिमानक धरती छोड़ल
छोड़ल अभिमान ईह
सभ धकियेलक अपन-अपन
सभ ठोठियेलक यौ

नदीक धार, खेतक हरियरी,
गाछक छाह, पोखरिक नीर,
माटिक गन्ध मोनमे बसल,

श्रम सँ बनैत जीवन धीर।

भाषा हमर साँसक लय अछि,
गीतक भीतर गामक स्वर,
पोथी, कला, प्रश्न आ चिन्तन,
खोलै आगाँ नव-नव दुआर।

किशोर मोन जँ दूर उड़ै,
जड़ि सँ नाता टूटय नहि,
नव विज्ञानक पाँख लगाबी,
पुरना ज्ञानो छूटय नहि।

साहस हो, मुदा दम्भ नहि,
अपन मान, पर मानक संग,
जीत अकेले कोना नीक,
जँ पाछाँ रहि जाए सभ अंग?

गुरु सँ सीखब, माय सँ नेह,
पिताक श्रम सँ धीरज लब,
मित्रक हाथ पकड़ि आगाँ
मिलि नव बाट बनबैत चलब।

मिथिला केवल नाम नहि अछि,
ई जिम्मेदारी, ई विश्वास,
माटि, भाषा, जनक सम्मानक
राखब उज्जर जीवित साँस।

जतए रहब, अपनपन लऽ कऽ
खुलल मन सँ जगकेँ देखब,
अभिमान नहि, आत्मसम्मानक
दीप जरा कऽ आगाँ बढ़ब।

बादुर सोंस



बादुर बादुर
राडार युक्त ई
बादुर बादुर
पबै-ए भोजन

प्रतिध्वनिक कारण
बचइ-ए कोनो
दुर्घटनासँ
बादुर बादुर
राडार युक्त ई

साँझ उतरिते पाँख पसारै,
अन्हारोमे बाट चिन्है।
स्वर पठबै, स्वर घुरि अबै,
दूरी-मोड़ सभ मोन गिनै।

आँखिसँ कम, कानसँ बेसी,
रातिक नक्शा भीतर जागै।
गाछ, देवाल, डालि, पात सभ
प्रतिध्वनिमे रूप देखाबै।

सोंस-डोलफिन अछि नाम
सोंस-डोलफिन
अबाज निकालए
प्रतिध्वनि आनए
माछक जाल फेकल
बचइ-ए ई बदलि रस्ता
दुर्घटनासँ

नदीक भीतर जलक अन्हार,
ओहो स्वर सँ राह बुझै।
लहरक मोड़, जालक छाह,
सुनि-सुनि दिशा फेरि चुनै।

बादुर आ सोंस दूनू सिखबै—
सुनबो ज्ञानक एकटा रूप।
जे नहि देखाइ, से नहि हरायल,
ध्वनियो खोलै जगक स्वरूप।

किशोर मोन जँ प्रश्न उठाबै,
उत्तर खोजै ध्यान धऽ कऽ।
आँखि, कान, बुद्धि सभ जागल,
बाट बनै चिन्तन करि कऽ।

बादुर बादुर, सोंस-डोलफिन,
दूनू देत अनोखा सीख—
अन्हार, जल वा कठिन घड़ीमे
सूझ-बूझ बनि जाए दीप।

की? किए? कोना? के?



की? किए? कोना? के?

गर्मी सँ बरखा

बरखासँ पनिसोखा

बरखामे चाली

चालीसँ माटि

चाली बिन पएरक

माटिसँ घास

घास खाए गाए

गाएसँ दूध

बौआ पीबू

गाएक बाछा

पीबि बहए हर

हरसँ खेत

खेतसँ धान

धानसँ भात

बौआ खाथि

बौआक देह

दूध भात

पानिक भाप

उड़ए अकास

अकाससँ बरखा

बरखासँ चाली

चालीसँ माटि

माटिसँ धान

की? किए? कोना? के?

फेर आएल जाड़



फेर आएल जाड़,
कड़कराइत अछि हार-बिहार,
भोरक बसात सुइया जकाँ
छूबि जाइ गालक पार।

लागए जेना भेल भोर,
गारि-गरम गपे सँ जागल प्रात,
बिनु तैय्यारी आगाँ बढ़ब?
मोन पुछै अपनहि गप।

सूर्यसँ पूब, अकाससँ ऊँच
कल्पना कर, मुदा पएर धरतीपर,
पृथ्वीसँ नीचाँ सेहो सोच—
मूल कतऽ अछि अपन भीतर?

घर-गाम, अपन देशक ऋण,

माता-पिता-गुरुक उपकार,
पढ़ाई, श्रम आ नेह सँ भरि
चुकाबी धीरे-धीरे भार।

तामसमे तोड़ब बड़ु सहज,
जोड़ब कठिन, चाही धीर,
टूटल मन, टूटल सेतु,
स्नेह सँ जोड़ै साँच वीर।

जाड़क भोर कहै किशोरकै—
आलस छोड़, उठ, राह बनाउ,
देह गरम हो श्रमक ताप सँ,
मोनक दीप स्वयं जराउ।

सूर्यसँ पूब, अकाससँ ऊँच
सपनक पाँख अवश्य पसार,
धरतीक गंध मोनमे राखि
आगाँ बढ़— मुदा नेहक संगसार।

अंध विश्वास



मन्दार पर्वतक चारू-कात
चेन्ह देखाय कहलक गाइड
सर्प केर चेन्ह अछि ई
भेल समुद्र-मंथन एहि पर्वतसँ
सर्पक रस्सा अछि चेन्ह छोड़ि गेल
चारू-कात तहीसँ

संगी हमर हँसल कहलक
कोनो पहाड़ पर जाऊ
पहाड़ ऊपर चढ़य लेल
गोलाकार रस्ता बनबाऊ

नहि तँ सोझे ऊपर चढ़ब
सोझे खसब नीचाँ मुहँ
हओ गाइड तोहूँ विश्वासक
छह अंध-काण्ड सुनेबा लए

अभ्यास



पूछल गुरूसँ मृदंगपर हाथक गति
भय रहल अछि किएक मंद
गुरु कहलन्हि से करू
अभ्यास तखन प्रतिदिन

प्रतिदिन तँ करितहि छी
हम एकर सदिखन अभ्यास
तहुखन हमर घटय अछि गति
आ टूटय अछि लय तात

करू भोर साँझ अहाँ
अभ्यास बिना करि नागा
भोर करब अभ्यास जखन
साँझमे टूटत नहि लय
साँझमे करब पुनराभ्यास
होयत भोरमे हाथ गतिमय

गुरुसँ पूछल कोना कए
एहि चट्टान काटि घोड़ा बनाएब
घोटक गतिमय बनबएमे
एक मास बेकार लगाओल

कहल गुरु तखन करू कल्पना
एहि जड़-पाथरमे घोटक
घोड़ा देखि करू प्रहार
जतए लागए घोटक नहि अछि

जतए पाथर बेसी अछि
तोड़ि अहाँ हटाऊ
बनत घोड़ा क्षणहि
घोड़ा चट्टानक बनाऊ

कहल ओ गुरुजी
काज वैह अछि
सोचबाक अछि ई फेर
पहिने बेसी काज लगैत छल
आब थोड़ अछि भेल

आँखिक चश्मा



दादा पहुँचलाह डॉक्टर लग
पुछल होइए की बाबा
मर्र डॉक्टर अहाँ छी
हमहीं बताऊ भेल की हमरा?

आँठासँ कय शुरू
बताऊ पहुँचा धरिक समाचार
कहल पहिने करू ठीक
आँखिकँ औ सरकार

कोनो चश्मा नहि फिट पड़ल
दूरबीनक शीशा जखन लगाओल
कहल हँ अछि आब कोनहुना
भाखए अक्षर चराचर

सड़ही आम देखि बजलाह

बूढ़ भेलहुँ हम अहाँ बुझय छी बच्चा
बैलूनसँ खेलायब हम से वयस नहि अछि
नीक, नीक!

यौ दादा ई सड़ही छी
हम पड़ि गेल छी सौँचहि
सड़ही आम अहाँ कोना देखब
चश्माक नंबरे गलत पड़ल अछि

तीने टा अछि ऋतु



पुछल— “इसकूल किएक नहि अएलहुँ?”

“मास्टर साहेब, होइत छल बरखा,
जाइतहुँ हम छलहुँ भीजि,
बाट भरि पानि, मेघक बरखा।”

“बरखामे जाएब— अहाँ भीजि,
गर्मीमे लागत लू-गर्मी,
आ जाड़क शीतलहरीमे
हार-हाड़ होइत जाएब।”

मास्टर साहेब हँसि कऽ पुछलन्हि—
“सालमे पढ़ाई-पढ़ए कहिया आएब?
बौआ, होइत अछि ई तीनियेटा ऋतु,
तँ ऋतु बदललासँ ध्येय किएक जाएब?”

बरखा आय तँ छाता लिअ,

गरमी हो तँ भोरहि चलू,
जाड़ पड़ै तँ गरम कपड़ा,
नेम धरू, विद्यालय पहुँचू।

ऋतु सभ अपन रंग देखबैत,
जीवनक नेम सिखबैत अछि;
जे चलैत रहै, ओहि किशोरक
बाट स्वयं फरिछैत अछि।

मेघ, लू, शीतलहरी सभ
आब नहि रोकत हमर डेग;
पढ़ब-लिखब, खेलब, सीखब,
सपन दिस बढ़ब हरेक डेग।

दरिद्र



आठ सय बीघा खेत
कतेक पोखरि चास-बास

मुदा कालक गति बेचि बिकनि
सभटा केलन्हि समाप्त

झंझारपुरसँ धोती कीनि
घुरैत काल देखल माँछ बिकाइत
धोती घुरा कए आनल
आ कीनल माँछ सुआइद

पूछल कहल हौ माछ ई
काल्हि कतएसँ भेटत
धोती तँ जखने पाइ होएत
जाएब कीनि लाएब तुरत

दरिद्रताक कारण हुनकर हम आब बूझि गेल छी
एक दिनुका गप नहि ई सभ दिनुका चरित्र छी

रौह नहि नैन



हँ यौ, नैन अछि ई,
मुदा शहरक लोक की बुझए?
सभ ताकैत अछि रौह,
नैन कहबय तँ कियो नहि कीनय।

छागर, खस्सी आ बकरीक
अंतर जँ जायब फरिछाबय,
बिकायत किछु नहि एहि नगरमे,
एहि नगरमे बिनु टाका किछु नहि आबय।

एके जीव, एके आँखि,
नाम बदलिते भाव बदलै;
ककरो लेल बस नैन चमकै,
ककरो लेल बाजारक माल बनै।

हम किशोर ठाढ़ सोचैत छी,

मूल्य कतऽ सँ जन्म लैत?
वस्तुकेँ देखै आँखि कि नाम?
मनक तराजू कोना तौलैत?

गामक बोली, शहरक बोली,
अर्थक बाट कतेक अनमोल;
जे शब्द घरमे स्नेह जगाबै,
बाजारमे बनि जाइ मोल।

टाका जरूरी, मुदा सभ किछु
टाकासँ नहि होइत महान;
स्नेह, दया, श्रम, नेहक भाषा—
एहू जीवनक असल धन-मान।

नैनकेँ नैन कहि देखब सीखू,
नामक पाछाँ रूप न गुमाउ;
मानवता जे आँखि खोलै,
ओहि दृष्टिसँ संसार निहारू।

जूताक आविष्कार



जखन गड़ल एक काँट
राजा कहलक ओछाउ चर्म
आ चर्मसँ माटिकेँ छाड़ि कए
राजधानी निष्कंटक बनाऊ

जखन सभटा चर्म आनि कए
नहि पूर्ण भए सकल ओछाओन
एक चर्मकार आओल आ
राजाकेँ फरिछाय बुझाओल

पैर बान्हि ली चर्मसँ आकि
पृथ्वीकेँ ओहिसँ लए झाँपी
निष्कंटक धरती नहि मुदा
मार्ग निष्कंटक होएत गए

जूताक भएल पदार्पण तहिना

राजा प्रसन्न कहल होअए एहिना

बूढ़ वर



कतय छी आयल आइ ?

ताकि रहल छी वर

१५-१५ वरखक दूटा

अछि कतहु अभङल ?

रंग सिलेबी सिंघ मुठिया

अदंत तकैत छी आइ

से भेटत कहिया ?

१५-१५ केर दू गोटक बदलेन

३० केर भेटत एकटा

बाल-विवाहक दिन गेल

आब किशोरक हाथमे पोथी,

आँखिमे अपन सपन जागल,

पढ़बाक, सीखबाक ई बेला,

जीवनक बाट स्वयं फरिछल।

खेलक मैदान, ज्ञानक गाछी,
मित्रक संग नव सोच-विचार,
जोर-जबरदस्ती नहि स्वीकार,
अपन निर्णय अपन अधिकार।

वर-बधूक उमेर उचित रहय,
सम्मति होअय दुनूक समान,
नेहक नाति बने सम्मानसँ,
नहि भय, दबाव, नहि अपमान।

गामक चौपाल, घरक आँगन,
बदलि रहल अछि गप आइ,
बाल-विवाहक दिन गेल—
नव बुझाइत बाट खुलाइ।

रिपेयर



इसकूलक तालाक रिपेयर केलक
बिल मोटगर जखन देलक कारीगर
पूछल एहि अलमीराक तँ
ताला नहि महग छल ?

रिपेयरसँ सस्तमे तँ
नव ताला आबि जायत
औ बाबू तखन कमीशन
अहीं जाय आऊ दऽ

हम किशोर ठाढ़ सोचलहुँ—
हिसाब कतऽ, उचित मोल कतऽ?
पुरान वस्तु ठीक भऽ सकै तँ
नव किनबाक जोर किएक ततऽ?

इसकूलक ताला, इसकूलक टाका,

सभक श्रमक अंश समायल;
जतऽ बचत हो, ओतऽ बचत करू,
साफ हिसाबे मान बढ़ायल।

कारीगरीक उचित दाम दिअ,
मुदा लोभक बाट नहि लिअ;
मरम्मति हो वा नव खरीद,
तौलि-बुझि निर्णय करू सभ दिअ।

छोट ताला ई सीख दैत—
सार्वजनिक धन सभक मान;
ईमान, सूझ, हिसाबक नेमसँ
मजबूत होइ समाजक प्राण।

नौकर



फोन कऽ कय घरमे पूछल
पूछलन्हि बेटाक अफसर
छथि बेटा घरमे की ?
आकि..

आकि आगू पुछितथि ओ बजलाह
दय कय एक धुतकारी

एहि फोनक हम बिल भरैत छी
नहि करू अहाँ पुनि गप
मैसेज अहाँक देब हम पुत्रकें
से छी के अहाँ लाट?

नौकर नहि अहाँक
ने छी हम अपन पुत्रक
कनिया केर टा छी हम नौकर

बुझू ई यौ अफसर

क्लासमे अबाज



दुनू दिशक बेंचकेँ उठाकय पुछलन्हि
आयल कोन कातसँ अबाज

पकड़ल एक कातकेँ छोड़ल
फेर कएल दू फाड़ि

आधक-आध करैत पहुँचलाह
फेर लग लक्ष्य
दुइ गोट मध्य जानि नहि सकलाह
अबाज केलक कोन वत्स

कक्षा भरि हँसी दबौने,
सभक आँखि छल एक-दोसर पर;
अनुमानक बाट सँ खोज चलल,
मुदा प्रमाण रहए कतऽ घर?

एक कात छोड़ि दोसर कात,
फेर आधक आध करैत जाउ;
तर्कक खेल मनोरम लागै,
मुदा निर्दोषकै नहि फँसाउ।

अबाज सुनि दिशा बुझबाक
कान, धीरज, माप जरूरी;
झट निष्कर्ष नहि धरू,
जाँच बिना रहि जाइ अधूरी।

क्लासक ई छोट प्रसंग सिखबैत—
प्रश्न करू, पर न्यायो राखू;
हँसीक संग विवेक जगाबी,
सत्य भेटे तखनहि बाजू।

एस.एम.एस.



कहू एहिमे अहाँ छी
सहमत आ की छी अहाँ असहमत
दुनू रूपमे दिअ अहाँ
अपन विचार कय एस.एम.एस.

आहि कमाऊ अहाँ रुपैया
हम बूढ़ि छी भाइ
न्यु टेक्नोलोजी छी ई सभ
बुरबक कियो नहि आइ

मोबाइल चमकै, सन्देश आबै,
मत दिअ, तुरन्ते बटन दबाउ;
हम किशोर पहिले पुछैत छी—
ककर लाभ, कतेक टाका जाउ?

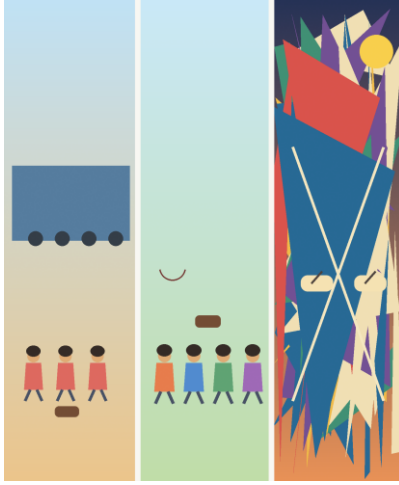
सहमत-असहमत दू घर देखाइ,

बीचक प्रश्न कतऽ हराइ?
सोच-विचारक पूरा रंगकै
दू खाँचामे किएक समाइ?

नव तकनीक उपयोगी होइछ,
जँ विवेक संग ओकर मेल;
निजता, मोल, स्रोत बुझि कऽ
तखन करब डिजिटल खेल।

सन्देशक गति बड्ड तेज अछि,
मोनक गति हो धीर-गभीर;
क्लिक करबासँ पहिने सोचू,
सूझ-बूझे किशोरक नीर।

टी.टी.



मजिस्ट्रेट चेकिङ भेल
बिन टिकट बला वीर सभ भागल
बाधे-बाधे

खेहारलक पुलिस जखन
चप्पल छोड़ल ओतय बेसुध तन

मुदा बुरबक लाल एकटा
एक चप्पल लेलक उठाय
दोसर चप्पल छोड़ि पड़ायल
आयल गाम हँफाइत

सभ हँसि पुछलक हौ बाबू
एकटा चट्टी लय कय
कोन पैरमे पहिरब एकरा
दोसर खाली रहत गए

ई बुरबकहा बुरबके रहल
हाँसि भेर भेल सभ

दोसर दिन बाध सभ गेल
देखल सबहक दुनू चट्टी भेल छल निपत्ता
बुरबकहाक एक चट्टिये छल बाँचल
नहि लेलक कियो सोचि करब की एकटा?

मुँह लटकओने सभ घूरल आ
नाम बदललक बुरबकहाक
टी.टी. बाबूकेँ ई ठकलक
नाम होयत सैह एकर आब

खगता



गोर लागि मौसीकेँ निकलल
पूछतीह अछि किछु खगता
आइ नहि पूछल जखन
बैसल फेर ओ तखन

फेर उठल मौसी फेर नहि पुछलखिन्ह
ई सोचि जे रहैत नहि छन्हि पाइक काज

जाएब कोना पाइक बड्डु अभाव !

आइ नहि पूछल जखन
बैसल फेर ओ तखन

लोक कहैछ आयल छथि खगते
ओना दर्शनहुँ दुर्लभ

अहीं कहू
खगतामे कियो अछि पुछैत
आगूसँ ?

आइ नहि पूछल जखन
बैसल फेर ओ तखन

क-ख सँ दर्शन



ट्युशन पढ़बय जाइत छँह
इज्जत तँ करैत छौक?
जलखै तँ नहिये परञ्च
चाहो-पानिक हेतु पुछैत छौह ?

ट्युशन कय खाइत छी
की कहलहुँ हे से नहि बाजू
द्रोणक नव अवतार छी हम

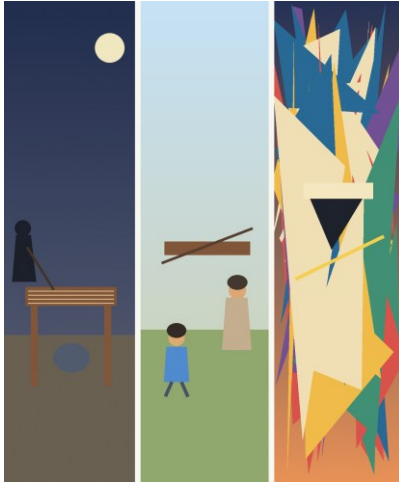
से छियन्हि कहि देने
जाइत देरी करह जलखैक व्यवस्था
नहि तँ छी नहि हम द्रोण
औठाँक नहि कोनो लालसा

मात्र पढ़ेबन्हि छओ महिना
दर्शन नहि होयतन्हि क-ख केर

नहि से नहि बाजू

खुआ पिया कए केने अछि ढेर

चोरकें सिखाबह



यौ काका छी अहाँ खाटकें
धोकड़ी किएक बनओने
खोलि नेवाड़ फेर घोरिकें
बनाऊ खाट एखन नवीने

कहलन्हि काका हे हौ
देखह आयत रातिमे जे चोर
पटकत लाठी खाट पर आ
धोकड़ीमे रहने
चोट नहि लागत मोर

परञ्च काका जँ ओ चलबए
लाठी नीचाँ बाटे
वाह बेटा कहि दिहह चोरकें
ई गप तोहीं जा कय

नरक निवारण चतुर्दशी



भुखले भरि दिन दिन बिति गेल
नरक निवारण लय हम रहलहुँ
साँझमे मंदिर विदा सभ भेल

दुर्गापूजा लगमे आयल
सिंगरहार केर माँग बढल
माटि काटि गोबरसँ नीपि कय
भोरे-भोर फूल लोढ़ि लेल

सरस्वती पूजाक समयमे बैर
अशोकक-गाछ-पात गोलीक लेल

बोने-बोन महुआक फरक लेल
घूमि-घामि अयलहुँ भेल-भेर

अण्डीक बीया तेलहानीमे दए
तरुआ ओकर तेलक खएल
कुण्डली मिरचाइक फरमे अंतर
बुझैत-बुझैत दिन कतेक गेल

सुग्गोकेँ ई खोआय रामायण
सुनला कतेक दिन भए गेल

नौकरी

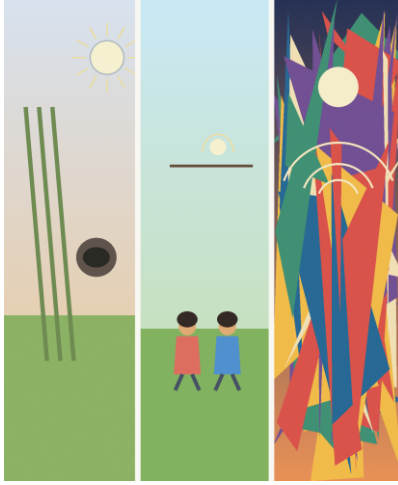


नौकरी नहि करी तखन
भेटय तनखा तन खायत
वेतन भेटत बिना तनहि
आब कते बुझायब

गाम घूरि जँ जायब
खायब की कमलाक बालू
औ गुलाब काका पहिने
हमरा ईएह बुझाऊ

भरि दिनका ठेही अछि जाइत
जखन जाइत छी सूइत
भोर उठला संता अखनहुँ
समस्यासँ अछि नहि छूटि

मरकरी डिलाइट



सोझाँसँ त्रिपुण्ड-चानन
देने आयल रहथि उदना

देखल गामक प्रवासी जहिना
कहल रौ छँ तौँ भाइ उदना

संग कटलहुँ बाँस
आवाजकेँ दबेबा लेल
जड़िमे बान्ही गमछा
आ टेंगारीसँ दू छहमे
काटय छलह तौँ

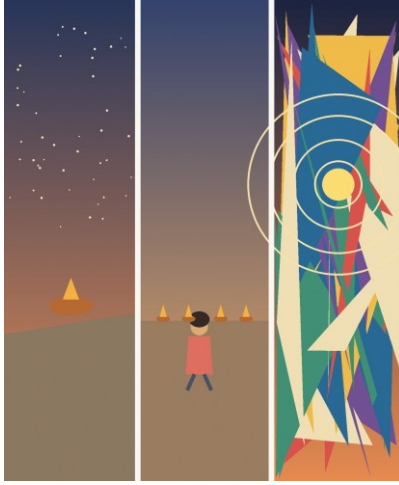
पुरनाहाक डबरामे
लीढ़क नीचाँ नुका कय
करी संपन्न
काज बिन विघ्न

पश्चात् भेलहुँ प्रवासी
मरकरी-डिलाइट दयकेँ तौ
भेलह गामक वासी

पंडितक अकाल छल नहि
छलह कोनो कंपीटीशन

भेलहुँ अहाँ औ भजार
गामक नव उदयनाचार्य

दीयाबाती



अन्हरिया भगेलक
इजोरिया बजेलक
दीयाबाती हम्मर
तरेगण बजेलक
अकाससँ उतारि
रखलहुँ अप्पन दुआरि

साँझक धुँधलका चुप भेल,
बातीमे अग्नि हँसि उठल,
घरक कोन-कोन झिलमिल भेल,
मोनक डर सेहो पाछाँ हटल।

एक दीप दोसर दीपसँ
नेहक इजोत बाँटैत जाए,
छोट ज्वालासँ पैघ अन्हारो
धीरे-धीरे दूर सराए।

पोथी खोलि हम बैसल छी,
इजोत पर अक्षर चमकै,
सीखक बाट फरिछ भऽ उठै,
मोन नव सपन दिस दमकै।

तरेगण ऊपर, दीप तरे,
दुनू जकाँ कहैत एक गप—
अन्हार चाहे कतेक गाढ़ हो,
इजोत बनू, नहि छोड़ू बाट।

फ़ैक्चर



हॉस्पिटलमे आबाजाही
गामक प्रवासीक
बुझैत छलाह जखन समाचार
पिताक भर्तीक
ठामहि दरभङ्गा बस-स्टैंडहिसँ
गाम जयबाक बदला आबथि हॉस्पिटल

की केलहुँ शरीरकें
नहिये बनेलहुँ जमीन-जल्था
बच्चा सभक लेल नहि
राखल दृष्टि यैह व्यथा

की सभ करैत कतय नहि पढ़ैत
चण्डाल किए भेलहुँ हे कक्का

ओतहि बैसल छलाह टुटियाँ

पिताक समक्ष
पहिनहिँ बुझने छलाह जे
ककाकेँ छलन्हि भेल फ्रैक्चर

कहल पहिने समाचार तँ पुछिअन्हु
चाहो आब अबैत होयत
पैर हाथ धोआय अनिहन्हु !

कहल पैर टुटि गेल की कका
पिता किछु बजितथि
बजलाह टुटियाँ

होइछ टूटब आ फ्रैक्चर एक्के
नहि छलन्हि बूझल से
कहल नहि चिंता करैत जाउ
भगवान रक्ष रखलन्हि
फ्रैक्चरे भेलन्हि
पैर टूटलन्हि नहि बाउ

बापकेँ नोशि नहि भेटलन्हि



यौ बुझलहुँ बुच्चुनक गप्प
नहि करैत छी खिधांश
सुनू हम्मर साँच

समयक छलए नहि हमरो अभाव
कहल हँ सुनाउ किछु भाषण-भाख

देखि पुछलियैक बुच्चुनकेँ हौ
ई की उजरा नाँकसँ सुँघने जाइत छह
कहलक काका खोखीँ होइत छल
खोखीँक ई दवाइ अछि

औ बाबू बाप मरि गेलैक मोशकिल रहय नाँसि भेटब
मुदा देखू बेटा सौँतैत अछि विक्स वेपोरब

नहि करैत छथि खिधांशसुनियन्हु हुनकर साँच

दहेज



ट्रेनमे भेटलन्हि घटक
यौ फलना बाबू
मुँह देखाबक जोग नहि छोड़ल
आगाँ की-की बाजू

शांत बैसू भेल की?
अहाँक अछैत होइत की ?
एहि गरीबक पुत्रीक
कन्यादान संभव रहए की भाइजी?

औ अहाँ गछि लेलियन्हि
भेल कोजगरा द्विरागमनो
भेटलन्हि किछुओटा नहि वरागतकँ
कोनोटा इज्जत नहि राखलन्हि ओ

यौ अहूँ हद्द कएलहुँ

मोन नहि की-की गछलियन्हि

ओहि सुरमे छलहुँ बेसुध
हँ मे हँ टा मिलेलियन्हि
कहैत गेलाह ओ एक पर एक
नहि कहि कऽ बुरबकी करितहुँ ?
लक्ष्मीपात्र छथि से लक्ष्मी देलियन्हि
आबो तँ जान बकसथु

मोटरसायकिल लय की करतथि
देहो-दशा ताहि लेले चाही
चेनक लेल बेचैन किए छथि
निचेन रहथु, ई गप अछि

ताकि रहल छी पुत्रक हेतु
तकैत छी अहींक आस
औ छलहुँ कतय भाँसल
अहाँ यौ घटकराज

कोनो मोटगर असामी
आनि करू उद्धार
तीनू बेटीक कर्जसँ उबारथि
चाही एहन गुणानुरागी

बेचैन नहि निचैन रहू



बेचैन नहि निचैन रहू
दौगि-दौगि कय पोस्ट-ऑफिस
भेलहुँ जखन अपस्याँत किएक तँ
मनीऑर्डरक छल आस।

पुछल— “एखन धरि नहि आयल
मनीऑर्डर यौ प्रभास?”
चिट्ठीयेक संग पठेने छलथि पाइ,
चिट्ठी तँ समयेसँ पहुँचल खास।

“टाका किए नहि बाउ?”
पोस्ट बाबू मुसकि कऽ कहल,
“हुनकर पाइसँ कोनो उद्यम
हम कोना करितहुँ भल?”

कहल— “चिट्ठी अबैत अछि,

बेटा अछि छटू अहाँक;
पाइ पठबैत समयसँ तँ पहुँचैत,
मुदा पठबैत अछि छुछ्छे संदेश अहाँक।”

दोसर गामक पोस्टबाबू
फेकैत अछि चिट्ठी कमलाक धारमे,
हम छी बँटैत— तँ कहैत छी,
जे भेटल अछि मात्र संदेश अहाँकै।

दिन भरि बाट जोहैत-जोहैत
मोनमे उठल प्रश्न अपार—
केवल आस पर कतेक दिन चलब,
कखन धरब अपन श्रमक भार?

किशोर मोन कहलक चुपचाप—
संदेश नीक, मुदा काजो चाही;
हाथ चलत तँ बाट खुलत,
अपन श्रमसँ निचैन भेटत आही।

थल-थल



थल-थल

कतबो दिन बीतल,
गद्दा जेकाँ थलथल
पट्टी टोलक ओ रस्ता
भेल आइ निपत्ता।

माटि खसा कय लगा खरंजा,
पजेबाक देल पंक्ति;
नव-बच्चा सभ कोना झूलत
ओहि गद्दा पर आइ?

थल-थल करैत ओ रस्ता,
लोकक शोक कहाँ भेल बंद?
माँसीते की अहाँ बिलेलहुँ
ओहि दरारिमे करैत अंत?

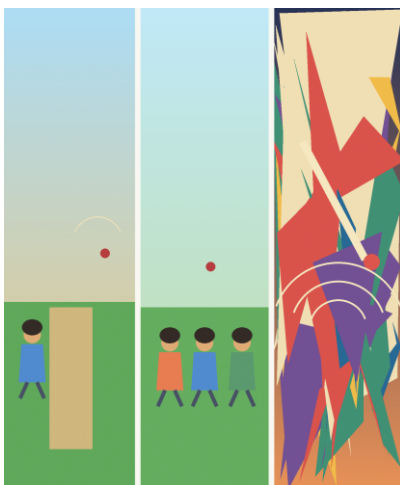
काल्हि धरि पएर धँसैत छल,
छप-छप पानि उछलैत;
बस्ता बचबैत दौड़ैत नेना
हँसैत-हँसैत घर पहुँचैत।

आइ खरंजा सोझ-सपाट,
पएर नहि धँसै, बाट फरिछ;
मुदा पुरनका थलथल रस्ताक
खेलक स्मृति अछि कतेक हरिछ।

रस्ता नीक हो, गाम जुड़य,
एहिमे कोनो दुखक गप नहि;
मुदा बनबैत काल बुझू ईहो—
नेनाक खेलक ठाम मेटाय नहि।

नव बाट आ पुरन स्मृति
दुनू संग-संग रहय संभव;
विकासक अर्थ मात्र ई नहि
जे हँसी पुरनका होअय लोप।

क्रिकेट-फील्डिंग



क्रिकेट-फील्डिंग

हम बाबा करू की पहिने—

बॉलिंग आ कि बैटिंग?

बॉलिंग कय हम जायब थाकि,

बैटिंग करि खायब की मारि?

पहिलेदिन तूँ भाँसि गेलह,

से सुनह ई गप बौआ;

बैटिंग-बॉलिंग छोड़ि-छाड़ि

पहिने करह गऽ फील्डिंग हथौआ।

दूर गेल बॉल पकड़ब सीख,

झपटि बचाबह चौका;

टीमक लेल जे पएर दौड़य,

ओकरे भेटै खेलक मौका।

कैच छुटल तँ फेर अभ्यास,
गिरलह तँ उठि जा तुरन्त;
खेलक मैदान सिखबैत अछि—
हार नहि होइछ जीवनक अंत।

बैट चमकय, विकेट उड़य,
ताहिसँ पहिले नेम बुझू;
अपन पारीक बाट जोहैत
दोसरक पारीक मान करू।

फील्डिंगमे जे धीरज राखै,
ओ बैटिंगमे ठाढ़ रहै;
टीमक संग जे खेलब सीखै,
ओहि किशोरक खेल बढ़ै।

मैट्रिक प्लक



मैट्रिक प्लक

हौ, सभकेँ सुनलहुँ केने—

बी.ए., एम.ए.;

मुदा बुझल नहि छल डिग्री

दोसरो होइछ आनो-आनो।

आइ एक पकठोस बटुक

अछि आयल दलान पर पूछल—

“कोन अंग्रेजिया डिग्री छी लेने?”

“मैट्रिक प्लक”— एहने किछु बाजल।

हौ काका, अछि की ओ गेल?

ओकर गेलाक पाछाँ हम बाजब;

कारण अछि भेल ओ फेल,

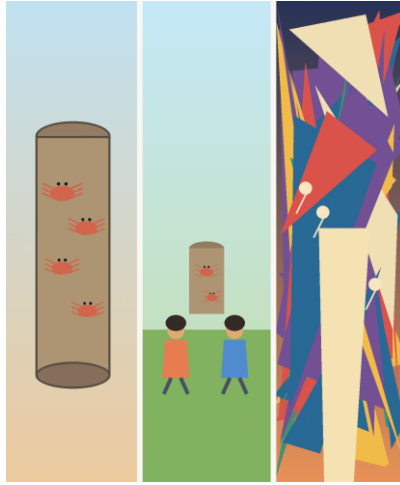
से सुनि हँसी कोना रोकब?

कागजक नाम सुनिते मोन
कखनो होइछ चकरघिन्नी;
डिग्रीक पाँति पैघ होइत,
बुझब जरूरी ओकर गिनती।

फेल भेलासँ जीवन फेल नहि,
नाम बिगाड़ि मान नहि बढै;
जे नहि बुझल, फेर पढ़ि सीखू,
प्रश्न पुछलासँ ज्ञान बढै।

मैट्रिक, बी.ए., एम.ए. सभ
बाटक पढ़ाव, अंत नहि;
असली डिग्री सीखक भूख,
श्रम आ सूझ-बूझ कम नहि।

काँकडु



काँकडु

काँकडुगणकें छोड़ल एकटा ड्रममे,
नहि बन्न कएलक ऊपरसँ ढाकनसँ;
पुछल— “हम छी निःशंक एतय?”

“यौ, हमर टोलक ई अछि काँकडु सभ,
एक दोसराक टाँग खींचत;
बक्शा बन्द करबाक करू नहि चिन्ता,
खुजलो सभटा सभ ठामे रहत!”

एक चढ़ै तँ दोसर पकड़ै,
तीसर खींचै ओकर पएर;
ऊपर जायब कठिन भऽ जाए,
सभ रहि जाए एकहि फेर।

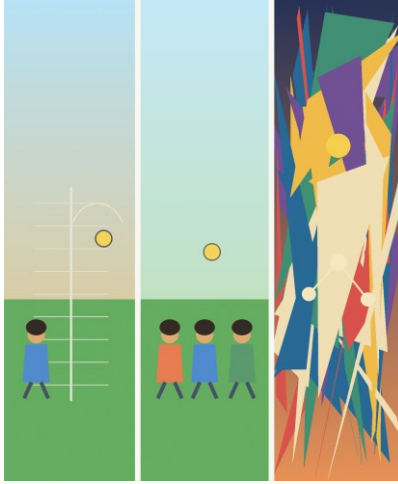
हम किशोर सोचलहुँ— ई खेल

ड्रममे मात्र नहि होइछ;
ईर्ष्या जखन मोनमे जागै,
मित्रक उड़ान रोकि दैछ।

एक-दोसराक पएर न खींचू,
हाथ पकड़ि ऊपर उठाउ;
जे आगाँ बढ़ि गेल, ओकरा सँ
बाट सीखि अपन डेग बढ़ाउ।

काँकडु बनि निचाँ नहि रहू,
संग मिलि बनू नव आधार;
सभक सफलता सभक बल हो,
तखने खुलत विकासक दुआर।

कैप्टन



कैप्टन

वॉलीवॉलमे खेलाइत काल
पप्पूभाइक होइछ हुरदंग;
“खेलायब हम फॉरवार्डसँ,
नहि नीक खेलाइत छी—
तँ आगू खेलनाइ देखाएब हम!”

सभ सोचि-विचार कय
बनाओल कैप्टन पप्पूभायकें;
टीमक हारि देखि कय
खेलाइथ पछाति पाछुएसँ—
“फॉरवार्ड बनू अहीं सभ,
नहि तँ मैच हारए जाएब आगुएसँ!”

कैप्टन होयब मात्र आगू
ठाढ़ भऽ हुकुम चलायब नहि;

कखनो पाछाँ रहि टीम बचायब,
एहूमे मान घटायब नहि।

जे साथी कमजोर पड़ै
ओकर हाथ पकड़ि बल दिअ;
जे नीक खेलै ओकरा आगू
स्थान दऽ कऽ संग चलिअ।

खेलक जीत अकेलाक नहि,
सभक श्रमसँ बनै परिणाम;
कैप्टन ओ जे सभकेँ जोड़ै,
नहि जे खोजै अपनहि नाम।

दूध



दूध

महीस लागल छल लागय

बहिन दाइक ठाम;

पहुँचलहुँ आस लेने,

ठाँऊ भेल बैसलहुँ।

दूध छल जाइत औँटल,

मुदा बहिन दाइकेँ गप्पमे

होस नहि रहल;

भोजन समाप्ते-प्राय छल,

दूध राखल औँटाइते रहल।

कहल हम— “हे बहिन दाइ,

अबैत छलहुँ, रस्तामे देखल

साँप एक बड़-पैघ,

एतयसँ ओहि लोहिया धरि नमगर—

दूध जतय अछि औँटाइत!”

“ओह भैया! बिसरलहुँ हम—

दूध रहल औँटाइत;

मोनमे गप ततेक छल घुमरल,

होश कहाँ छल आइ!”

गप्प मधुर हो, कथा अनमोल,

मुदा काजक नेम नहि बिसरु;

चूल्हि पर जकर जिम्मा अछि,

ओहि दिस आँखि सेहो धरु।

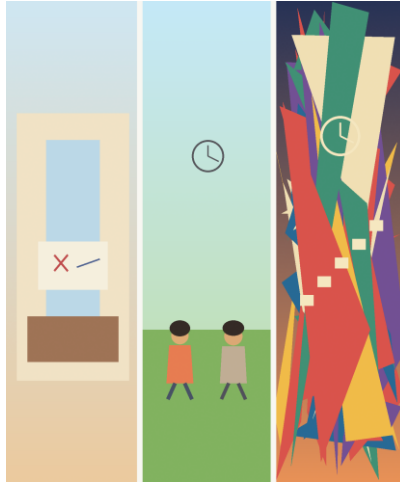
एक क्षणक असावधानी

दूधक संग श्रमो बहा देत;

मोन जतेक दिशि उड़य,

ध्यान ओकरा बाट देखा देत।

अटेंडेंस



अटेंडेंस

“लेट किए अएलहुँ अहाँ?

अटेंडेंस लगाऊ।”

लाल बहादुर अयलाह जखन,

देखल छल क्रॉस लगाएल।

नहि देल ध्यान, साइन कएल;

पूछल मास्टर— “लेट छी आयल?

ऊपरसँ कए हस्ताक्षर

क्रॉस नुकयबा लेल,

मुदा नहि अछि ई मेटायल!”

लाल बहादुर कहल— “सुनू ई,

के करत निर्णय तखन?

हम कएल हस्ताक्षर पहिने,

क्रॉस लगाओल अहाँ कखन?”

समयक लेखा कागज पर
रेखा जकाँ रहि जाइत;
पहिले-पाछाँक छोट प्रश्न
साँचक बाट देखबैत।

लेट भेलहुँ तँ मानि लिअ
आगाँ समय पर पहुँचब नेम;
चिन्ह नुकायब बुद्धि नहि,
समय सँ सीखब असल सेम।

हस्ताक्षर हो वा क्रॉस,
दुनू सँ पैघ अछि व्यवहार;
नेम निभाबय जे किशोर,
ओकर समये बनै आधार।

शो-फटक्का



शो-फटक्का

“की यौ बाबू, शो-फटक्का

बहु देने छी आइ;

पहिने कोनो दिन आबि बुझायब,

नहि जायब पड़ताय।”

दहो-दिशा दस दिन देत काज,

देत चालि संग चालिस साल;

बहु भेल शो-फटक्का—

करू पहिने किछु काज।

गपक फुलझड़ी चमकि उठै,

क्षण भरि सभकेँ मोन लुभाबै;

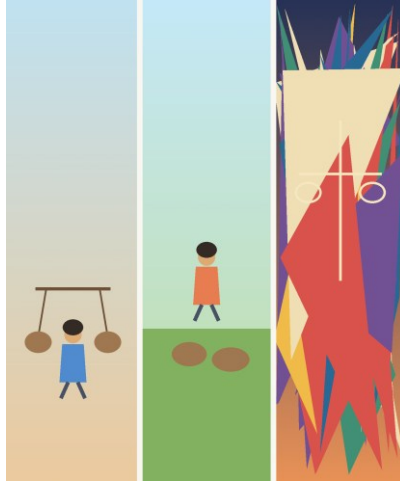
मुदा अधूरा काजक ढेरी

साँझ पड़िते साँच बताबै।

कथनी नीक, मुदा करनी
ओहिसँ पैघ प्रमाण;
हाथ लगाउ, ईंट उठाउ,
तखने बनत नव मकान।

किशोर मोनमे योजना राखू,
मुदा डेग धरू धरती पर;
शो-फटक्का कम, श्रम बेसी—
एहि नेमसँ बनत असर।

भारमे माटि



भारमे माटि

काबिल ठाकुर कहल जोनकैँ—

“भारमे माटि उघि आनू;

दुहु दिशि भार रहत तँ

बोझ दुनू दिशि जायत,

कम थाकब अहाँ आ

माटि सेहो बेसी आओत।”

दियाद कलामी ठाकुर देखि ई,

सोचल ओकर नोकसानक भाँज—

“भरिया तोरा जान मारतह,

एके बोनिमे दोबर काज!”

पटकि भार भरिया पड़ायल,

काबिल ठाकुर रहल मसौंसि;

लंघी मारि पएर खेंचि कय—

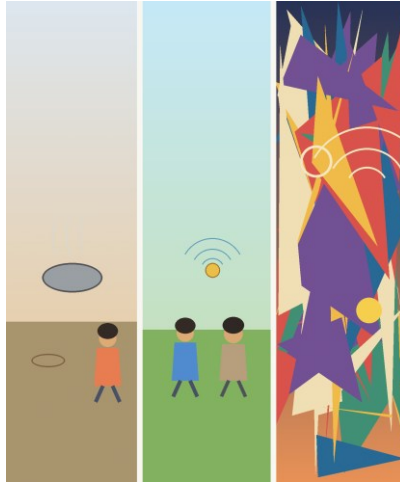
अप्पन कोन भल भेल हे भाइ?

बोझ बराबर बाँटल रहय
तँ पएरमे रहै संतुलन;
एक कात काटि देलासँ
टूटि गेल पूरा अनुक्रमण।

दोसरक हानि सोचि जे चलै
अपनो बाट बिगाड़ि लैत;
साझक बुद्धि, नेमक माप
कठिन बोझ हलुक बनैत।

किशोर सीखू— संतुलन राखू,
ईर्ष्या सँ नहि होइ लाभ;
दोसराक पएर खींचब छोड़ू,
संग बढ़बमे सभक प्रभाव।

कंजूस



कंजूस

तीमन माँगल भनसियासँ,
सूँघा रहल छल गमक;
“कहियो तँ अयबह हमरा लग,
देबह तखन उत्तर।”

शहर भऽ गेलहुँ, पाइ कमेलहुँ,
माँगल पाइ— “किछु दैह”;
बदला पाइक झनक सुनएबह,
गमकसँ नहि छल मोन भरैत।

गमक भेटल, तीमन नहि,
झनक भेटल, पाइ नहि;
हिसाब बराबर बुझल कंजूस,
मुदा नेहक हिसाब ताहि नहि।

भोजनक स्वाद बाँटलासँ बढ़ै,
पाइयो काज पड़लासँ मान;
बन्द मुट्ठीमे धूलि रहि जाए,
खुलल हाथ बनबैत पहचान।

किशोर मोन कहै— बचत करू,
मुदा कंजूसी नहि बनाउ ढाल;
जतय उचित, सहयोग करू,
तखने धनक होइछ सदुपयोग विशाल।

पाइ



पाइ

“देखू, पाइ नहि लिअ अहाँ

बेटा विवाहमे;

कारण जे पुतोहु करत उछन्नड़,

पाइ बाली आयत जँ।”

पूछल— “अहाँ सभ जे छलियैक लेने

बेटा विवाहमे पाइ?”

कहलन्हि— “अहूमे गप्प अछि दूटा:

पहिल जे पाइ दबबैत अछि लोककँ,

मुदा दोसर—

जे दबा दैत छियैक हमरा सभ पाइकँ!”

जे कहलहुँ गुनू तकरे,

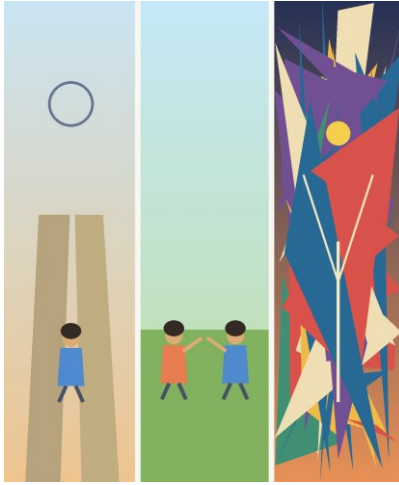
हमरा सभपर नहि आउ दाइ गे!

पाइ साधन, जीवन नहि,
नेहक मोल नापै नहि सिक्का;
विवाह जँ सौदा बनि जाए,
टूटि जाइ विश्वासक टिक्का।

सम्मान होअय दुनू कात,
सम्मति होअय बराबर मान;
दहेजक बोझ नहि चाही,
श्रम-स्नेह हो घरक धन-धान।

किशोर पीढ़ी ई नेम धरू—
मनुखक मान पाइ सँ पैघ;
जे सम्बन्ध स्वतन्त्रतासँ बनै,
ओहि घरमे उजियारक डेग।

असत्य



असत्य

हम कक्कर काज नहि कएलहुँ
बेर पर मुदा काज कियो आयल?
असत्य नहि कहियो छी बाजल,
सत्यक आस नहि छोड़लहुँ आ
असत्यक बाट सेहो नहि ताकल।

“यौ, अहाँ एहनो कियो बजैत अछि—
असत्य नहि छी कहियो बाजल;
एहिसँ पैघ कोनो असत्य अछि?”

कियो दुःखी कहलक तँ काज केलहुँ,
स्वयं जा कऽ तँ नहि पुछलहुँ;
ओकर काज अपनहि भऽ जाइत छै
तँ उपकरि कय पुछैत छी;
आ जँ काजमे भाँगठ होइत छैतँ

निपत्ता भय जाइत छी।

बेर पर एहने काज अहाँ अबैत छी!

हम आलांकारिक प्रयोग केलहुँ—

तेँ टाँग पकड़ैत जाइत छी?

समुद्री



समुद्री

संस्कृतक पाठ नहि पढ़ल,
कोन पाठ अहाँ पढ़ने छी?
पंडित कहि बजबैत अछि सभ कियो,
त्रिपुण्ड धारण कएने छी!

“रहथि हमर पुरखा पंडित,
छोड़ू हमरा, हमर इतिहास देखू;
मिथिलाक गौरव याज्ञवल्क्य,
कपिल-कणादक देश छी ई;
जैमिनीक गौतमक अछैतहुँ
पुछै छी पण्डित केहन छी?”

“सामुद्रिक विद्या ज्योतिषिक जनय छी।”
“नहि सुनल— फेर बहस किए केने छी?”
“फेर छी हँसी करैत अहाँ भने,

भविष्यक छी हम हाल किए लेने!”

चिह्न कपारक ज्ञान नहि बनै,
वंशक यशसँ पाठ नहि पढ़ाइ;
पोथी खोलि प्रश्न जे पुछै,
ओहि बाटे बुद्धि आगाँ बढ़ाइ।

पुरखाक गौरव प्रेरणा हो,
मुदा श्रम अपन करए पड़त;
नामक ओटमे खाली दावा
प्रश्नक अग्निमे टिकि नहि सकत।

किशोर सीखू— चिन्ह नहि,
तर्क, अध्ययन, अनुभव प्रमाण;
जे नहि जनैत, कहू “नहि जनैत”,
एहिसँ घटैत नहि सम्मान।

गाम



गाम

तीस वर्ष नौकरी कइयो कय
नहि बनल एकोटा मित्र;
आस-पड़ोसी चिन्हैतो नहि अछि,
ऑफिसक पूछू नहि गति।

गाम छोड़ि शहर छी आयल,
मुदा अछि मोन—
सात जनम घूरि नहि जायब,
गाम छोड़ि नगरक कोनो कोन।

भीड़ बेसी, परिचय कम,
दुआर लगो अनचिन्ह लोक;
गामक पगडंडी मोन पड़ै,
जतय नामसँ बोलबैत सभ गोट।

मुदा गामो केवल स्मृति नहि,
ओतहु श्रम, विवाद, अभाव;
शहरो केवल पत्थर नहि,
मित्र बनाबी तँ खुलै लगाव।

जतय रहू, पड़ोसी चिन्ह,
दुःख-सुखमे देऊ आवाज;
माटि बदललासँ नेह नहि मरै,
सम्बन्ध बनबैत अपन समाज।

किशोर मोनक गाम ओहि ठाम,
जतय स्नेहक बाट खुलल;
गाम-नगर दुनू अपन बनत,
जँ मनुख मनुखसँ सचमुच जुड़ल।

लोली



लोली

एहि शब्द पर भेल धमगिज्जर,
“लोल हम्मर अछि नहि बढ़ल;
एतेक नीक ठोढ़कें छी अहाँ
लोली कहि रहल?”

हँसल हम— नहि स्मृतिकें
छोड़ि छी सकलहुँ अहाँ;
फैशन-लिपिस्टिक युगोमे
लोलीकें खराब बुझलहुँ अहाँ!

शब्द पुरान, अर्थ अपन,
घरक बोलीक नेह अपार;
जे बोलीमे दादी हँसली,
से की होयत कखनो बेकार?

नव फैशन अपन ठाम रहय,
पुरनका शब्दो राखू संग;
भाषाक लोलीमे स्वाद बसै,
पीढ़ी-पीढ़ीक अपन रंग।

तकलाहा दिन



तकलाहा दिन

विवाहक दिन तकेबाक गप,
युवक बाजल— “पंडितजी, अहूँ
नहि बुझलहुँ अमेरिकाक प्रगति;
ओतय के दिन तकबैत अछि, कहूँ?”

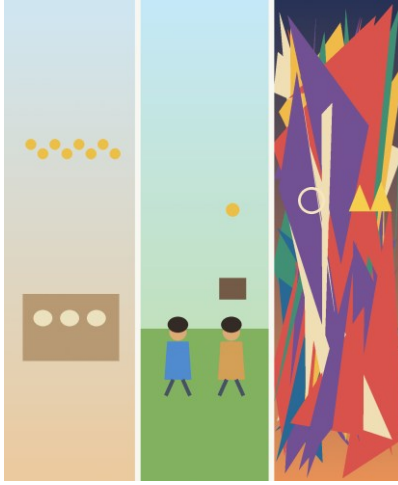
“अहाँ अधखिज्जू विद्वान, सुनू—
हमर तकलाहा दिनमे विवाह कय
झगड़ा-झाँटि करितहुँ बुझू,
जिनगी भरि पढ़ै अछि निमाहय;
ओतय बिनु दिनुक विवाहक गप
भोरसँ साँझमे भय जाइछ समाप्त!”

दिन शुभ हो, ई नीक गप,
मुदा शुभतर व्यवहार;
एक दिनक मुहूर्त सँ पैघ

बरख-बरखक नेह-संभार।

संग निभेबाक धीरज चाही,
सम्मान, संवाद, विश्वास;
घड़ी-तिथि नहि जोड़ि सकै
जँ मनमे नहि होय प्रयास।

बिकौआ



बिकौआ

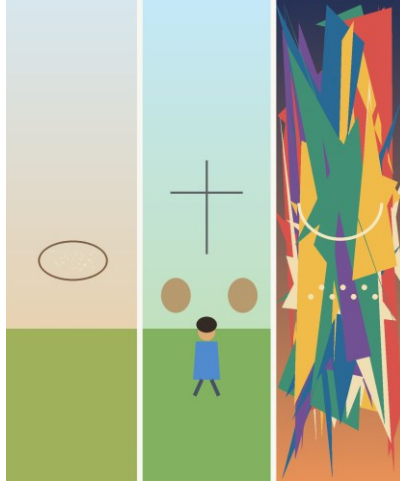
बड़ पैघ भोज उपनयनक,
पछबारि पारक छथि नव-धनिक;
“बी.के. नाम नहि सुनल?”
ओतय ठाढ़ ओ धनिक।

“आरौ बिकौआ छँ तूहीं,
दूटा पाइ भेल ओ भाइ;
कलकत्ता नगरीक प्रतापे
नहि तँ मरितहुँ बिकौए बनि,
बी.के. नाम भेल आब जाए!”

नाम छोट भेल, ठाठ पैघ,
पाइ बढ़ल तँ चाल बदलल;
मुदा गामक पुरनका पहचान
मोनक कोनामे कहाँ बदलल?

अक्षर बदललासँ मान नहि बढै,
मान बढै व्यवहार;
धन आयल तँ नम्रता राखू,
तखने होय उजियार।

गद्दरिक भात



गद्दरिक भात

गत्र-गत्र अछि पाँजर सन,
हट्टी निकलल बाहर भेल;
भात धानक नहि भेटय तँ
गद्दरियोक किए नहि देल?

औ बाबू, गहूमक नहि पूछू,
अछि ओकर दाम बेसी भेल;
गेल ओ जमाना बड़का,
गप्पक नहि खेलत खेल।

धान, गहूम, गद्दरि— सभ
पेटक आगि बुझाबय अन्न;
मोल बढ़ल तँ घरक थारी
पुछय रोज नब-नब प्रश्न।

जे भेटय, ओकर मान बुझू,
अन्न नहि करु अपमान;
किसानक श्रमक दाना-दाना
जीवनक असली धन-धान।

एकटा आर कोपर



एकटा आर कोपर

गप्प पर गप्प

प्रकाण्डताक विद्वताक—

“हम्मर पुरखा ई...”

हाथीक चर्चा;

सिक्कड़ि-जंजीर टा जकर बाँचल।

आँगनमे लालटेन नहि,

वरन्डिबिया टिमटिमाइत;

लालटेन गाममे

समृद्धिक प्रतीक!

फेर दलान पर गप्पक छोड़—

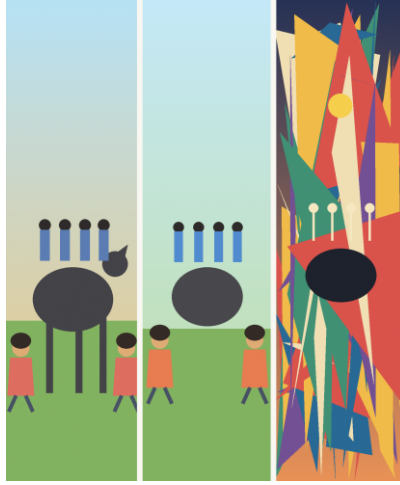
“एकटा कोपर दियौक आउर।”

पुरखाक हाथी गप्पमे दौड़ै,

आइ कोपरमे चा भराय;
ठाठक कथा जतेक ऊँच उड़य,
धरती पर सच चुपचाप रहाय।

इतिहासक मान राखू अवश्य,
मुदा अपन काजो होय;
पुरखाक जंजीर गनि-गनि जीबय,
ताहिसँ वर्तमान नहि सोहाय।

महीस पर वी.आइ.पी.



महीस पर वी.आइ.पी.

छलहुँ हम सभ जाइत,

आर मारि लोक सभ पएरे-पएरे;

दुर्गास्थानमे छल कोनो मेला,

देखि हमरा सभकेँ बाट देल।

मारि लोक छल ओतय, छलहुँ

महीस पर हम चारिटा वी.आइ.पी.ये!

ओकर सभक गप छल लौकिक ढंगक,

हमरा लोकनिक आध्यात्मिक तैं—

मूल-गोत्रक प्रभावे!!

महीस धीरे-धीरे चलैत,

रस्ता अपनहि फरिछ भऽ जाए;

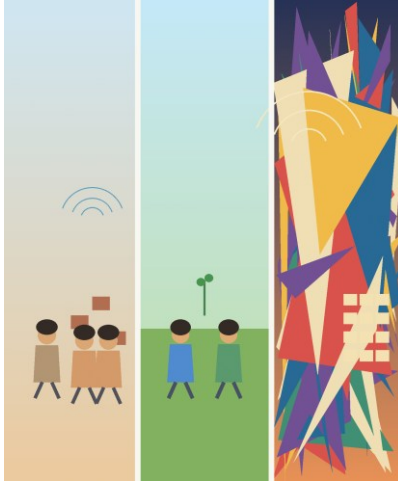
ऊपर बैसल मोन फुलैत,

नीचाँ पएदल लोक मुसकाए।

मेला सभक, बाटो सभक,
मान ककरो जन्मसँ पैघ नहि;
गोत्रक गौरव मोनमे राखू,
मुदा मनुखसँ मनुख छोट नहि।

किशोर मोन ई गप बुझू—
ऊँच आसनसँ ऊँच नहि प्राण;
जे सभकेँ संग लऽ कऽ चलै,
ओकरे भेटै साँच सम्मान।

गप्प-सरक्का



गप्प-सरक्का

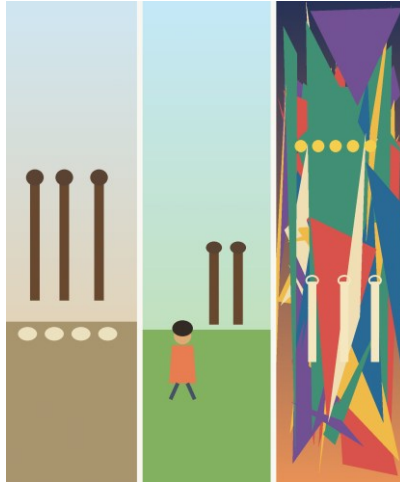
नहि गेलथि घूमय बूरि,
बुझैत अछि बड्ड छन्हि काज;
आइ-काल्हि तँ हिनकर पूछ बढ़ल अछि,
हमरा सभ तँ करैत छी बेकाजक काज!

गप्पक सरक्का चलैत रहल,
घड़ीक काँटा आगाँ बढ़ल;
जे काजक चर्चा कएलहुँ सभ,
हाथ न लगल तँ ओतहि पड़ल।

व्यस्त होयब गप्प नहि मात्र,
काजक फलसँ गप बुझाइ;
एक डेग जे धरती पर पड़ै,
सौ गप्पसँ आगाँ जाइ।

किशोर मित्र, योजना बनाउ,
मुदा समयक मानो राखू;
बेकाजक गप्प कम कऽ,
जे जरूरी से काज कराकू।

फलनाक बेटा



फलनाक बेटा

भोज देलन्हि रेंजरक बाप,

“आह, कमेने अछि तँ

फलनाक बेटा!”

भोज समाप्ति पर

पान-सुपारी लय देखल

रेंजरकेँ लोक—

“अओ, कहू कोन बोनकेँ

साफ कएल एहि भोजक लेल!”

थारी चमकल, पान सजल,

मुदा प्रश्न रहि गेल भारी;

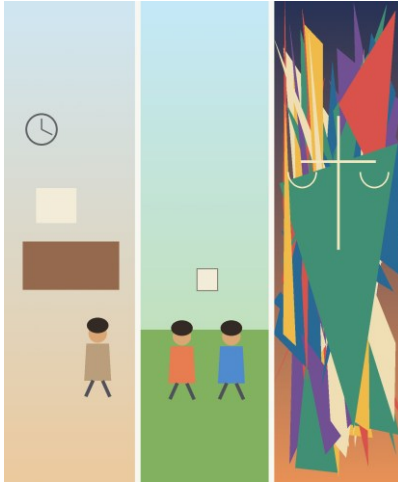
धन कतऽ सँ आयल, कोना आयल—

एहूमे अछि जिम्मेदारी।

बोन काटि जे ठाठ सजाओल,
काल्हि छाँह कतऽ सँ पाओल?
पशु-पंछीक घर उजाड़ि
कोन समृद्धि सचमुच पाओल?

किशोर मोन कमाइ देखू,
मुदा स्रोतक सत्यो जानू;
धरती बचत तँ भोजो होयत,
वनक नेहक मानो मानू।

ट्रांसफर



नॉर्म्सक हिसाबे ट्रांसफर
कएल हम अहाँक
कहलन्हि ओ छल एकर कोन
महाशय जरूरति

कएल सेवा हम अहाँक
राति-दिन भोर धरि

अप्पन घरक काज छोड़ल
अहाँक काजकेँ आगू राखल
ताहिमे नहि हम लगायल नॉर्म्स
नॉर्म्स केर नहि गप्प छल आयल

ट्रांसफरमे ई कतयसँ
आबि गेल श्रीमान !

तखनहि रोकल हुनक
ट्रांसफर औफिसर तत्काल

मजूरी नहि माँगह



मजूरी नहि माँगह
भरि दिन खटि हम गेलहुँ,
माँगय अपन मजूरी;
कहलन्हि— “जँ मजूरी माँगबह,
मारि देबह हम छूरी।”

कहल— “नहि, बरू दिअ मजूरी,
मारू नहि परञ्च ई छूरी;
जियब जखन हम करब काज,
कय आनो ठाम जी-हजूरी।”

श्रमक दाम माँगब अपराध नहि,
दिन भरि खटल हाथक मान;
डर देखाकऽ हक दबाएब
ककरो नहि बनबैत महान।

काज करब तँ दाम भेटय,
ई नेम रहय साफ-सपाट;
सम्मानक संग श्रम चलय,
तखने नीक बनत समाजक बाट।

किशोर मोन ई गप धरू—
अपन हक शांतिसँ कहू;
अन्याय देखू तँ संग जुटू,
सुरक्षित बाटे आगाँ बढू।

दोषी



दोषी छह तौं
नहि छी मालिक
देलक दू सटक्का

हम छी दोषी बाजल
तखन बता संगीक पता

साँझ धरि पड़ल मारि
परज्व नहि बता सकल ओ
नाम सङ्गीक

कारण
छल नहि ओ दोषी
नाम बतायत तखन कथीक

लंदनक खिस्सा



लन्दनक साउथ हॉलमे शहीद भिंडरा
लेस्टरमे शहीद सतवंत-बेअंत

लेस्टरमे सभ अपनहि लोक
नहि भेटैछ अंग्रेज एकोटा
भेटने हमही मँगैत जाइत छी
वीसापासपोर्ट
सेहो अंग्रेज सभसँ सभटा

होयत खिधांश सुनू तखनो
नहि मानब हम गुरुकुलकैँ
इतिहाससँ नहि लेब सबक
तँ आएत पुनः ओ घुरि
अंग्रेजक नाम कतेक दिन धरि लेब
सभ अछि गेल बुझि

प्रथम जनवरी



प्रथम जनवरी

प्रथम जनवरी देखल एक,

भोरे-भोर दूधक लेल

लागि लाइन जखन आयल बेर,

हर्षित-प्रफुल्लित पाओल फेर।

मुदा रस्ताक बीचहि खसल दूध—

“ओह, भेल अपशकुन बड्डु!”

सुनि खौँजाइ कहल— “नहि से,

पता नहि शकुने होअय जे।”

कहल— “हँ-हँ, शकुने थीक,

माए पृथ्वीकेँ लागल अर्घ्य;

प्रथमे पायल प्रथमक भोग,

हरतीह सभटा दुःख आ रोग।”

दूध खसल तँ दूधहि खसल,
दिनक भाग्य नहि खसि गेल;
हँसि कऽ उठू, बाट सम्हारू,
भोरक उजास फेर पसरेल।

शकुन-अशकुन मोनक खेल,
काजक फल श्रमसँ उपजै;
नव वर्षक पहिल सीख ई—
डर नहि, सूझक दीप जरै।

ऑफिसमे भरि राति बन्द



साँझ परल सभ उठल
गेल अप्पन-अप्पन घर
बाबूजी रहथि फाइलमे
करैत अपनाकैँ व्यस्त

चौकीदार नहि देलक ध्यान
केलक बन्द ओहि राति
हमरा सभ चिंतित भेलहुँ
कएलहुँ चिंतित कछमछ धरि प्राति

भोरमे जखन दरबान खोलि
देखलक हुनका ऑफिसमे
माफी माँगि आँघायल
पहुँचेलक घर बेगें

एक बूढ़ी हमर पड़ोसी

कहलन्हि कोना रहल भेल
हमरा सभ तँ नहि तकितहुँ बाट
राति भरिमे भय जयतहुँ अपस्याँत
बेटा सभ लजकोटर मुँहचूरू
छन्हि हिनक हे दाइ (हमर माइ)

हॉलीक्रॉस इसकूल दरभंगामे
घटल छल एक गप
गर्मी तातिलमे बच्चाकें
बन्द कएल दरबान

महिना भरि खोजबीन भेल
नहि चलल पता कथूक
इसकूल खूजल देखल बच्चाक
लहाश सभ हुजूम

बाप ओकर मुँहचुरू छल
इसकूलसँ जँ बच्चा नहि आयल
सुतले छोड़ि गएल तखन
गेल रहय पछतायल

बच्चा देबाल पर लिखने रहय
अपन कष्टक बखान
पानि भोजन बिना
भेलय ओकर प्राणांत

नानीक पत्र



पत्र आयल मोन ठीक नहि
लक्ष्मी अहाँ देखि जाउ
एहि बेर नहि बाँचब
नहि ई गप बुझु बाउ

पेटक अलसर अछि खयने
चटकार सँ खाओल जेना मसल्ला
अंतिम क्षण देखबाक बड्ड अछि मोन
चिट्ठी लिखबाले अयलाह तेहल्ला

कियो नहि पहुँचेलकन्हि लक्ष्मीकै
कहल चिट्ठीमे अछि भाड़भीस कएल
एक टा आर चिट्ठी आएल जे
माय गेलीह देह छोड़ि

लक्ष्मीक बेटा बोकारि पारि कानय

कहलक छी हम सभ असहाय

नहि अयतीह हमर लक्ष्मी
मायक मुँह देखय अंतिम बेर
नाम रटैत अहाँक ई बूढ़ि
गुजरि गेलि जग छोड़ि

अपन घरक हाल की कहू
भगवाने छथि सहाय
घरघुस्सू सभ घरमे अछि
दैव कृपा हे दाय

केवाड़ बन्द



बाहरसँ आबयमे भेल लेट
छोट भाय कएल केवाड़ बन्द
किछु काल पाछाँ जखन खुजल
भैया कहल हे अनुज
दुःखी छी हम पाड़ि ई मोन
अहिना जखन छलहुँ हम सभ बच्चा
पिता कएलन्हि घर बन्द

कनेक देरी होयबाक कारण
पुछलन्हि नहि ओ तुरंत

तुरंत काका सेहो बुझाओल
बाल विज्ञानक द्वंद
जे भेल से बिसरि शुरू
करू नव जीवन स्वाच्छंद

जेठांश



छोट भायकें देल परती
आ राखल सेहो जेठांश
मरल जखन कनियाँ तखन
भोजक कएल वृत्तांत

कहल नमहर भोज करू
पाइ नहि तकर ने बहन्ना
जकरे कहबय से दय देत
चीनी चाउर सलहाना

खेत बेचि कय हम कएलहुँ
श्राद्ध पिताक ओहि बेर
अपन बेरमे नहि चलत बहन्ना
फेर बुझू एक बेर

सादा आकि रंगीन



ब्लैक एण्ड ह्वाइटक गेल जमाना
सादा आकि रंगीन
कारी-उज्जर गेल जमाना,
पूछी— सादा आकि रंगीन?
दरिभंगा काली मन्दिर लग
लस्सीक दोकान, गप महीन।
जखन बूझि नहि सकलहुँ हम,
हाँसि कहल एकगोट मीत—
सादा स्वादे नीक लगैए,
रंग चढ़ल तऽ सोचू प्रीत।
भाँग मिलल रंगीन कहल जाए,
मुदा किशोरक लेल नहि ठीक,
दूध-दहीक सादा लस्सी
देह-मोन दुनू लेल नीक।

जोंकही पोखरिमे भरि राति



सुनैत छलहुँ जे बड़बड़ियाबाबू साहेबक
लगान देलामे जँ होइत छल देरी
भरि राति ठाढ़ कएल जोंकही पोखरिमे

बीतल युग अयलाह फेर जखन हाथी पर
लेबाक हेतु लगान-लहना जहिना
गारि-गूड़ि दैत हाथी पर छूटल
टोलक-टोल मुँह दुसना

जमीनदारी खतम भेलो पर सोचल
किछु ली असूलि
मुदा लोक सभ बुधियारी कएल
नहि अएलाह ओ घूरि

गैस सिलिण्डरक चोरि



गेलहुँ रपट लिखाबय
भेल छल सिलिण्डरक चोरि
मोंछ बला थानेदार बजलाह
बूड़ि बुझैत छी हमरा सभकेँ
डबल सिलिण्डर चाही
एफ. आइ. आर. सस्ता नहि
नहि सस्ता अछि एतेक हे भाइ

हम कहल डबल सिलेण्डर
तँ अछिये हमरा
नीक तँ
तेसर सिलेण्डर लेबाक अछि देरी ?

ताकल कतय चोरकेँ अहाँ
अहाँक तकनाइ अछि जेना
चलैत अछि कोल्हूक बरद

भरि दिन घुमैछ नहि बढैछ
एको डेग अहँ नहि करू सैह
प्रगतिक नाम पर एहि बेर

स्कूटरक चोरिक बेर कहलक
इंस्योरेंसक पाइ चाही
कहू अहाँसँ कोर्टमे भऽ पाएत
देल अहाँसँ गबाही

फेरी पड़ि जायत अहाँकै
पुनःप्रात होएत कोर्टमे जायब
उलटा निर्णयो भऽ जायत
बूझि फेर से आयब

संग गेल ड्राइवर कहलक नोकरी
छै एकरे ठीक
पाइयो अछि कमाइत करैत रंगदारी
फेकैत पानक पीक

फैक्स



कारखाना पहुँचल अफसर,
तलासी-पत्र हाथमे आनल,
हस्ताक्षरक बेर मालिक
किछु काल रुकबाक कहल।
दूरभाष गेल, कागज दौड़ल,
फैक्ससँ आदेश तुरत आयल,
स्थानान्तरणक पाँति पढ़िते
अफसरक काज बीचमे थमायल।
कागज जखन काजसँ आगँ
दौड़ि जाए बेगें- बेग,
नियमक बाट बुझब जरूरी—
नहि तँ काज रहि जाए अधेग।

दीया-बाती



आएल दीया-बाती फेर,
कतेक अमावस्या बीति गेल,
जकर अन्हारक ठेस खाइत
कतेक पएर थकि-थकि गेल।
नन्हि जोति जखन फूटि उठल,
अँगना भरि उजास पसरल,
ज्ञान-ज्योतिक अकास तले
मोनक भीतरी डर सभ हरल।
नमन करय छी एहि उजासकैँ,
जे अन्हारक गाँठि खोलय,
दीया-बाती सिखबै हमकैँ—
छोट जोति सेहो बाट देखबय।

इटालियन सैलून



घर समस्तीपुर, दिल्ली आएल,
रोजी लेल सैलून सजाएल,
पुलिसक रोक भेटल जखन
गाम घुरि फेर नगरमे आएल।
ठाम कतऽ? ई प्रश्न उठल,
ईटाक चौकी सोझाँ छल,
हाँसि कहल— “एहिठाम बैसू,
कतरनी-कंधी संगहि चल।”
नाम सुनि सभ चकित भेल,
“इटालियन” गप केना बनल?
ईटापर बैसल सैलून देखू—
हाँसीक भीतर श्रमक बल।

शव नहि उठत



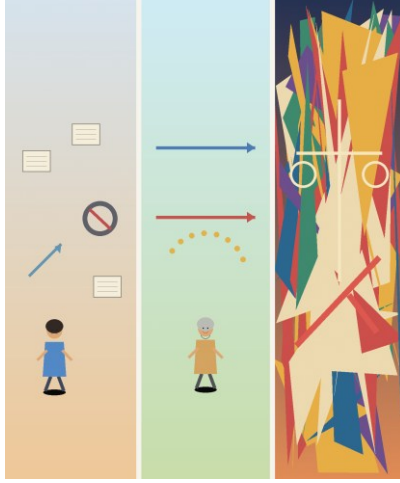
गामक कनियाँ चलि गेलीह,
शव अँगनामे निःशब्द पड़ल,
युवा सभ रोजीक खोजमे दूर,
गामक पुरना नेम नहि टरल।
जे रहथि, ओ ब्लॉक दिशि गेल,
साँझ पड़ल तऽ सभ घुरि आएल,
प्रश्न उठल— “किएक नहि उठल?”
उत्तरमे पुरनका डर समाएल।
नाता-गोता, छूत-अछूतक
गाँठि एखन धरि मोनमे भार,
समय बदलल, बाट बदलल,
बदलय बाकी गामक विचार।

अतिचार



तीन बरखक अतिचार कहि
बियाहक दिन रोकल जाए,
पंडित-पतरा, तिथि-गणनाक
गपमे घरक समय बिताए।
बनारसी पतरा पकड़ि कियो
दोसर हिसाब बुझाबय चाहय,
कियो कहय— “ई नहि बिकाए”,
कियो नवका पन्ना लाबय।
समय अभाव जँ बेसी बढ़त,
अतिशय गप बनि जाए भार,
नेम-परम्परा संग विवेकहु
राखू— तखने होय सुधार।

रबड़ खाऊ



रबड़ खाऊ

रबड़ खाऊ आ वमन करू चट्टी
अपचनीय तथ्य सभ देखल भ्रात
बड़ छल बुधियार केलक घटकैती
शुरू जखन भेल सिद्धांत विवाद
विवाह ठीक भेलाक पाछाँक दोसर सिद्धांत
लड़का विवाह कालमे बिसरलाह भाषण
नव सिद्धांतक सृजन कय केलन्हि सम्मार्जन

गप जे मोनमे नहि समाय,
ओकरा सत्य कहि कोना मानू?
अपन लाभक हिसाब देखि
नेमक काँटा किएक घुमाऊ?

किशोर मोन प्रश्न उठाबै—
सिद्धांत रहय तखनहि सिद्धांत;

सुविधा देखि जे रूप बदलै,
से बहन्ना, नहि प्रमाण।

बाजा अहाँ बजाऊ



बाजा अहाँ बजाऊ
मेहनति अहाँ करू
फल हमरा दिअ

चित्र अहाँ बनाऊ
आवरण सजाऊ
हमर पोथीक

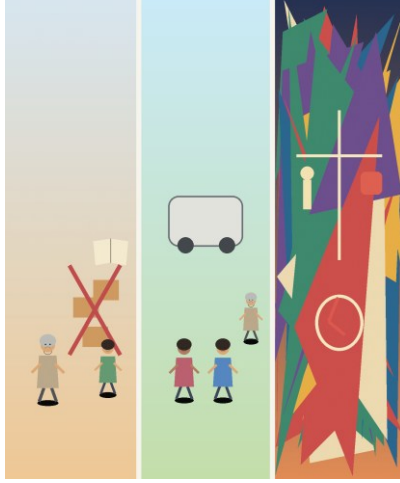
नृत्य हम करू
बाजा अहाँ बजाऊ

कृति हमर रहत
मेहनति करब अहाँ
आइसँ नहि ई गप
अछि तहियासँ जहियासँ शाहजहाँ

ढोलक थाप पर नाचि उठल
नाम लिखायल एक्के ठाम;
जे रंग भरलक, जे श्रम देलक,
ओकरो चाही पूरा मान।

संगक काजमे यश बाँटू,
दोसरक श्रम नहि हरपू;
कृति तखने उज्जर होयत
जखन सभक योगदान धरू।

पिण्डश्याम



पिण्डश्याम

दहेज विरोधी प्रोफेसर

केर सुनू ई गप

पुत्री विवाहमे कएल

एकर ढेर प्रचार

पुत्रक विवाहमे बदलि सिद्धांत

वधू रहय श्याम मुदा

मारुति भेटय श्वेत

सिद्धांतक मूलमे

छोड़ विवेक !

रंग मनुखक दोष नहि,

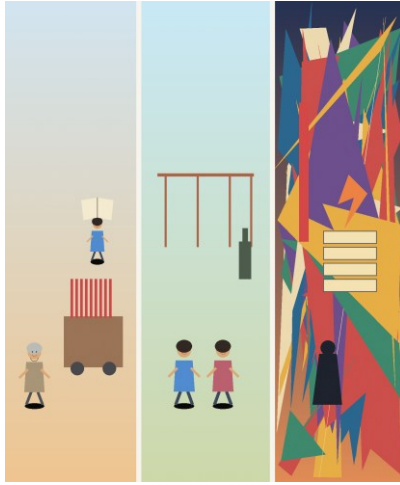
कार-उपहार गुणक माप नहि;

पुत्री-पुत्रक एकहि नेम,

दहेजक कोनो ठाम नहि।

किशोर पीढ़ी प्रश्न करय—
कथनी-करनी एक रहय;
जे सिद्धांत मंच पर बाजी,
घरमे सेहो ओहि पर चलय।

पाँच पाइक लालछड़ी



परिवार छल चला रहल
बेचि भरि दिन
पाँच पाइक लालछड़ी
दस पाइमे कनेक मोट लपेटन

नहाइत साँझमे
ठेला चला कय आयल
बेटाकेँ पढ़ायल
आइ.आइ.टी.मे पढ़ि
निकलल कएलक विवाह
जजक छलि ओ बेटी

पिता कोन कष्टसँ पढाओल
गेल बिसरि पिताक स्मृतिसँ दूर
नशा-मदिरामे लीन कनियाँ परेशान
लगेलन्हि आगि झड़कलि

ओकरा बचेबामे ओहो गेला झड़कि

कनियाँ तँ गुजिरि गेलीह ठामे

मुदा ओ तीन मास धरि

कष्ट काटि पश्चात्ताप कए

मुइलाह बेचारे

चोरुक्का विवाह



सिखायब

हिस्सक छूटत

नहि आनब कनियौकै

भायक माथ टूटत !

भेल धमगिज्जर सालक साल बीतल

युवक-युवती दुनू भेल चोर विवाहक कैदी

नहि छल कोनो हाथ परंच

छल सजा पबैत

भागल घरसँ युवक आब पछतायल घरबारी

मुदा की होयत आब

ओ समाजक व्यभिचारी

एलेक्शनक झगड़ामे भाय-भायकै मारल

चोरुक्का विवाहक घटनामे ओकरा दोहरायल !

भ्रातृद्वितीया



भ्रातृद्वितीया
कय ठाँऊ बैसलि
आसमे छलि
भाय आओत
आँखिक नोर छल सुखायल
सालमे एक बेर छल अबैत

कनियौक गप पर
सेहो क्रम ई टूटल
कय ठाँऊ बैसलि
धोखरि अरिपन विसर्जित
दिन बीतल
छल साँझ आयल

थारीमे अक्षत, दीप, पान,
दुअरि पर राहि तकैत नेत्र;

नेहक दिन यदि रूठि जाए,
कतेक सूना होइछ क्षेत्र।

भाय-बहिनक नेहक डोरी
घरक गप्पसँ नहि टूटय;
एक बेर मन खोलि बजलासँ
रूसल पाँति फेर जुटय।

सालक एक दिन मात्र नहि,
नेह रहय प्रत्येक दिन जीवित;
अरिपन फेर सजत दुआरि पर,
जँ मोन रहय सरल, समीपित।

नव-घरारी



नव-घरारी

साँप काटल नन्दिनीकेँ

नव घरारी लेलक खून

टोलक घरारी छोड़ू जुनि !

ई विशाल जनसंख्या एतय

छल बनल एकटा काल

ई नव-घरारी लेलक प्राण

टोलक घरारी साबिकक डीह

परज्य अछि छोट आब की ?

खून लेलक आब ई बनि गेल अखखज

नव घरारी होयत छोट किछु काल अनन्तर

घर बढ़ल, बाटो बढ़ल,

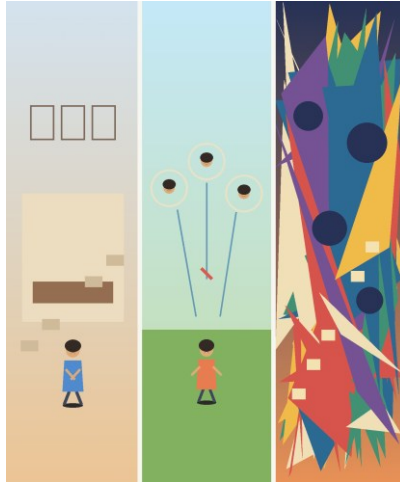
माटिक फाँक घटैत गेल;

झाड़-झंखार, पोखरि, मेड़
नव दीवारिसँ कटैत गेल।

बसोबासक चाह उचित अछि,
मुदा सुरक्षा सेहो विचार;
खुला बाट, साफ परिसर,
तखने सुरक्षित होय परिवार।

पुरनका डीह आ नव घरारी
दुनू सँ सीखब चाही नेम;
विस्तारक संग प्रकृति बचाउ,
एहि संतुलनमे बसत प्रेम।

रिक्त



पाँचम वर्गसँ सातम वर्गमे
तड़पि गेल छलहुँ हम

छट्टा वर्गक अनुभव अछि रिक्त
बा आ बाबा जन्मक पहिनहि
प्राप्त कएलन्हि मृत्यु
वात्सल्यक अनुभव भेल रिक्त
माए एके बहिनि छलि तँ
मौसी-मौसाक अनुभवो नहि
ईहो रहल रिक्त

कियो कहैत अछि जे छठामे पढ़ैत छी
बा आ बाबाक संग घुमैत छी
मौसी-मौसाक काज उद्यममे जाइत छी तँ
हम कहैत छी जे ई कोन संबंध
कोन वर्ग अछि ई छोड़ि सकैत छी

उत्तर भेटैछ अहाँ नहि बुझब

मुदा नव संबंध नब नगर

नव भाषा नवीन पीढ़ीकेँ

कोना बुझायब ओ कोना बुझत ?

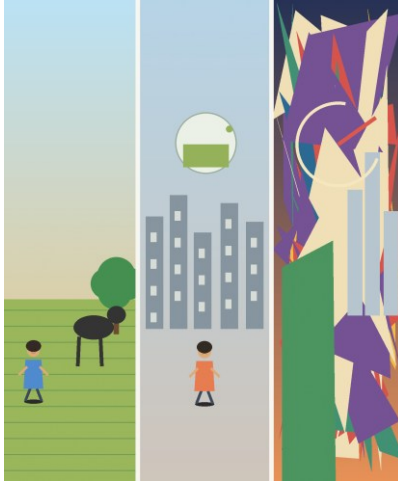
ओ तँ नहि बूझि सकत काका-काकी

नहि बूझत दीया-बाती

खटैत दौड़ैत आ नहि घुरि आओत

ककरा बुझायब आ के बूझत ?

प्रवासी



प्रवासी

संगहि काटल घास

महीस संगे चरेलहुँ

पुछैत छी गहूम ई

पाकत कहिया?

दू दिन दिल्ली गेलहुँ

सभटा बिसरलहुँ

ईहो बिसरि गेलहुँ

जे धान कटाइछ कहिया ?

नगरक घड़ी तेज चलै,

गामक ऋतु अपन नेम;

एक दिसि शीशाक घर उठैत,

दोसर दिसि हरियर खेतक प्रेम।

किशोर जखन बाहर जाए,
माटिक गंध नहि भूलू;
धानक बाली, गहूमक मौसम,
घरक बोली मनमे फूलू।

प्रवासी होयब दूरी नहि,
जँ स्मृति आ नेह रहय संग;
नगर सीखू, गाम सँ जुड़ू,
दुनू मिला बनाउ नव रंग।

वेद

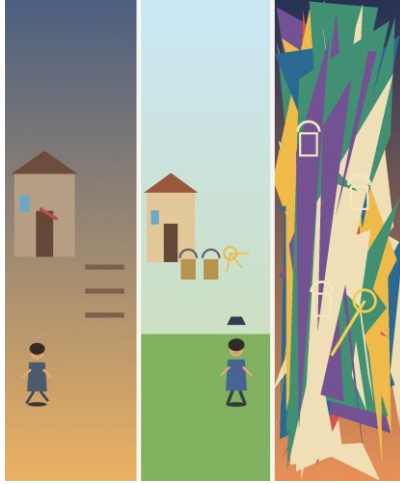


वेद वाक्य परम सत्य
संस्कृत साहित्य अति उत्तम
करैत छी अहाँ वक्तव्य
मुदा अहाँ की अहाँक पुरखा
मरि गेलाह बिन सुनने वेद वाक्य
बिन पढ़ने संस्कृत

यौ अहाँ नहि पढ़लहुँ अहाँ
अनका अनधिकार बनेबाक चेष्टा
कएलहुँ अहाँ

छी वेदक अप्रेमी नहि अछि क्षमता
वेदक पक्ष आकि विपक्षमे बजबाक
वेद वाक्य सत्य
एकरा बनेने छी
अहाँ फकड़ा

चोरि



गेलहुँ गाम आ एम्हर
आयल फोन समाचार चोरिक
छुट्टी होयबला छल समाप्त
मुदा चोरक गणना छल ठीक

आबयसँ एक्के दिन पहिने
लगेलन्हि घात
तोड़ि कय केबाड़
उधेसल घर-बार
नहि पाबि कोनोटा चीज
घुरल माथ पीटि

भोरमे पड़ोसी कएलन्हि डायल सय
पुलिस आयल हारि थाकि कय
पड़ोसीसँ किनबाय दू टा अतिरिक्त ताल
(पुलिस महाराज अपन घरक हेतु एकटा बेसीये कऽ)

चाभी लेलन्हि अपन काबिजमे

चोर हरबड़ीमे छल चलि गेल
मुदा पुलिस महाशयक हाथ चाभी आएल
आ शो-केशक चानीक नर्त्तकी गुम भेल

चोरकेँ छल डर गेटक दरबानक
से छलाह ओ गहनाक आ नकदीक ताकिमे
मुदा पुलिस महाराज दय राब दौब दरबानहुँकेँ
निकललाह चोरि कय बरजोड़ीसँ

होली



होली

धुरखेलक कादो-माटिसँ रहथि अकच्छ
रंग अबीर भने आयल मुदा लगैछ टका
साफ-सुथड़ा बुझैत छलहुँ एकरा मुदा
निबन्ध निकलैत अछि रंगक केमिकलक विषयमे
विषय अछि पुरनके
वएह छल ठीक यौ कका

दारू पिनहार सोमरसक चर्चा करैत नहि अघाइत छथि
देवतो पिबैत रहथि ओकरा पुरनका नामसँ
अछि होली
मित्रता बढेबासँ बेसी घटा रहल अछि आइ काल्हि ई

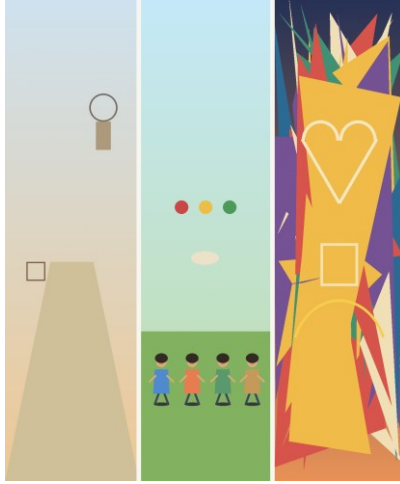
फूलक रंग, टेसूक आभा,
पानिक हँसी, अबीरक छाँह;
जहरिल रंग सँ दूर रहू,

नेह रहय उत्सवक चाह।

जबरदस्ती रंग न लगाउ,
हँसी रहय दुनूक सहमति;
मित्रता जे बाँटय उजियार,
ताहि होलीक असल गरिमा।

माटि, रंग आ गीतक संग
मोनक मैल धोबय एहि बेर;
होली तखने उत्सव होयत,
जखन नेह बढ़य फेर-फेर।

बुद्ध



हृदय लग अछि जेबी
से जखन रहय खाली
मोन कोना रहत प्रसन्न
बुद्ध सेहो कहि गेल छलाह ई

मुम्बइमे सूप मँगलहुँ
पुछलक अहाँ सभमे जैनी कैकटा छी
देत लहसुन की नहि रहय तात्पर्य
आपद्काले रहि गेल अछि आइ काल्हि
सदिखन

मुम्बइ सेल टैक्समे करैत छथि भरि दिन काज
तैं प्रोननशियेशन भेल छन्हि मराठी
“छी हमहुँ इलाकेक लोक
उत्पाद विभाग अछि केन्द्रीय सरकार
संपर्क बाहरीसँ बेसी

कनियाँ करइ छथि ओतहि काज
हुनकर बोली छन्हि देशी”

छत्तीसगढ़क छत्तीस घंटाक यात्रा
उत्तर-मध्य क्षेत्रक स्तूपक
बंगाल - पंजाब धूमल
बंगाली कहलन्हि— सुनू, जँ
बंगाली जायत संग करत कानूनी गप
सरदारजी कहलन्हि रोड पर
रेड लाइट रहलो करू पार
सोझाँसँ अबैत छल एकटा सरदार
कहल करत आब ई अराड़ि

सक्सेना कहलक एक मैथिलकेँ-
मैथिल अछि मैथिलक परम शत्रु
हम कहल सक्सेनाकेँ हे
जुनि करू हुनका दूरि
काज सभटा झट कराऊ जुनि भड़काऊ

बुद्धक भूमिसँ घुरि आयल छथि
दिल्लीक सड़क पर एहि बेर
पाटलिपुत्र भारतक रहय राजधानी
दिल्ली बनल राजधानी आब
छलहुँ ततय पुनि फेर
कोन जुलुम हम कएल आबि एतए ?

कणाद कपिल गौतम जेमिनी

देतथि जँ नहि काज
कहलन्हि ई ठीके हृदय लग
जेबी देने अछि सीबि
सौँसे देश घुमलहुँ
एहि पेटक लेल

जेबीमे पाइ नहि रहत
उपासे करब हम भाइ
जेबीक लग अछि हृदय
तखन से कोना रहत प्रसन्न
जे रहत ई खाली ?
बुद्ध सेहो कहि गेलाह ई !

कोठिया पछबाइ टोल



बूढ़ छलाह मरैक मान
पुत्र पुछल अछि कोनो इच्छा
जेना मधुर खयबाक मोन
नीक कपड़ा पहिरबाक मोन
फल-फूल खयबाक मोन

कोठाक घर बनयबाक इच्छा
पूर्ण भय पायत किछु सालक बादे
कहू कोनो छोट-मोट इच्छा
पूर करब हम ठामे

हौ कहितो लाजे होइत अछि
पछिबारि टोल कोठियाक रस्ता
दुरिगरो रहला उत्तर ओकरे धेलहुँ
जाइत दुर्गास्थान कारण
टोल छल ओ अडवांस्ट

मोनमे लेने ई इच्छा जाइत छी
जे ओहि टोलमे होइत विवाह

कहैत तावत हालत बिगड़ि गेलन्हि
आ ओ बूढ़ स्वर्गवासी भेलाह

मरलोपर मोह संग जाइत अछि
इच्छाक नियंत्रण अछैत

बुच्ची-बाउ



बुच्ची-बाउ
पोथी बेचि कऽ
कमाइत अहाँकेँ देखि
सड़कक चौबटियापर
अपन मैथिली भाषा बजैत
भरि जाइत अछि मोन गर्वसँ सेहो
चोरि तँ नहि कऽ रहल छी
मेहनतिसँ कमा रहल छी
ई मजूरक टोली
राज करत दिल्लीपर

मारीशस आ वेस्ट इन्डीजमे
एहिना हेंजक-हेंज चलैत रहए मजूरक टोली

सभ ठाम अहाँक खिधांश
कारण अहाँ मँगैत छी मात्र काज

नहि मँगैत छी दरमाहा
ई बिहारी सभ रेट कम कए देलक अछि !

एहि खिधांशमे हम देखि रहल छी भय
खेत बेचि बनल सेठ सभमे
बड़का गाड़ीमे शीसा खोलि बाजा बजबैत छथि
जे सभ !

गामक गाम उपटि
माइलक माइल पएरे चलैत
मुदा ओहू कनी सन दरमाहासँ बचा कए
गाम पठेबा लेल मनीऑर्डरक लाइनमे लागल
बेर-बेर फॉर्म अछि भरबैत ओ किरानी
मूरख कहैत
खौँझाइट

ओहि किरानीक खौँझाइट स्वर
छै ओकर हारिक प्रतीक
मात्र एक पीढ़ीक अछि गप
अहाँक पाछाँ राज करत
अगिला पीढ़ी
एहि दिल्लीपर

आकक दूध



मोन पड़ल चोरिक गप
चोरक आँखिमे आकक पात
पातक दूध पड़ला संता चोर
सोचलक आब आँखि गेल छोड़ि

कहलक मोने बुद-बुदाय
करु तेल नहि देब मोर भाय
अर्कक दूधक संग करु तेल
बना देत सूरदासक चेल

गौवाँ केलन्हि बुरबकी एहि बेर
चोरक बुनल जालक छल फेर
तेल द्वारि पठौलन्हि चोरकें गाम

मुदा रसायन भेल विपरीत
चोरक आँखि बचि गेल हे मीत

गौआँक काजक हम लेब नहि पक्ष
मात्र सुनायल रटन्त विद्याक विपक्ष

केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक



केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक
मध्य नील चक्र अछि शोभित
चौबीस कीलक चक्र खचित अछि
अछि हाथ हमर पताका ई,
वन्दन, भारतभूमिक पूजन,
करय छी हम, लए अरिमर्दनक हम प्रण।

अहर्निश जागि करब हम रक्षा
प्राणक बलिदान दए देब अपन
सुख पसरत दुख दूर होएत गए
छी हम देशक ई देश हमर

अपन अपन पथमे लागल सभ
करत धन्य-धान्यक पूर्ति जखन
हाथ त्रिवार्णिक चक्र खचित बिच
बढ़त कीर्तिक संग देश तखन।

करि वन्दन मातृभूमिक पूजन,
छी हम, बढि अरिमर्दनक लए प्रण।

समतल पर्वत तट सगरक
गङ्गा गोदावरी कावेरी ताप्ती,
नर्मदाक पावन धार, सरस्वती,
सिन्धु यमुनाक कातक हम
छी प्रगतिक आकांक्षी

देशक निर्माणक कार्मिक अविचल,
स्वच्छ धारक कातक बासी,
कीर्ति त्रिवार्णिक हाथ लेने छी,
वन्दन करैत माए भारतीयक,
कीर्तिक अभिलाषी,
आन्हीक बिहारिक आकांक्षी।

**ई पद्य समर्पित अछि १६ बलिदानीक नाम जे मुम्बईमे देशक सम्मानक रक्षार्थ अपन प्राणक बलिदान देलन्हि। १. एन.एस.जी. मेजर सन्दीप उन्नीकृष्णन्, २. ए.टी.एस.चीफ हेमंत कड़कडे, ३. अशोक कामटे, ४. इंस्पेक्टर विजय सालस्कर, ५. एन.एस.जी हवलदार गजेन्द्र सिंह "बिष्ट", ६. इंस्पेक्टर शशांक शिन्दे, ७. इंस्पेक्टर ए.आर.चितले, ८. सब इंस्पेक्टर प्रकाश मोरे, ९. कांस्टेबल विजय खांडेकर, १०. ए.एस.आइ. वी.अबाले, ११. बाउ साब दुगुरि, १२. नानासाहब भोसले, १३. कांस्टेबल जयवंत पाटिल, १४. कांस्टेबल शेषोष पाटिल, १५. अम्बादास रामचन्द्र पवार आ १६. एस.सी. चौधरी*

बेसी छुट्टी कम इसकूल



खेली-धूपी आरि-धूरपर
रौद-बसाते घूमी खूब
माए-बाबू बाबी-बाबा
ताकि-थाकि कऽ आबथि घूरि
बेसी छुट्टी कम इसकूल

बाड़ी-झाड़ी कल्लम गाछी
मेला ठेला गामे-गाम
भरि दिन भागी पाछू बाछी
बौका बुधनी संग रसूल
बेसी छुट्टी कम इसकूल।

कनियों-पुतरा बना सजाबी
खर-पात सँ घर बनाबी
बेंतक छड़ी बनाबी घोड़ा
चढ़ी ताड़पर आ दौगाबी

झुट्टे लोक कहैछ उकाठी
देखए धीया-पुता कऽ भूल
बेसी छुट्टी कम इसकूल।

इसकूलमे गलती केने
मास्टर साहेब बड्ड डेराबथि
बेंट पकड़ने छड़ी घुमाबथि
टेबुलपर ओ पटक बजाबथि
सुतलोमे सपनइत छी हम
कतहुँ हुअए नै कोनो भूल
बेसी छुट्टी कम इसकूल।

कनियाँ-पुतरा चलू घुमाबी
बेंतक छड़ी हम किए बनाबी?
घर बनाबी बत्ती-कड़चीसँ
करची कलमसँ लिक्खी खूब
बेसी छुट्टी कम इसकूल

चित्र लीखि टांगी इसकूलमे,
सपन देखी खुब्बे-खूब
बेसी छुट्टी कम इसकूल।

बोनमे बिसरी रस्ता तँ
वनसप्तो घर घुरबै छथि
इसकूलमे बिसरि गेलापर
मास्टर साहेब मारै छथि
बेंट पकड़ने छड़ी घुमाबथि

मास्टर साहेब बड्डु डराबथि
मोन बेकल भय भागल नै
छड़ी-बेंत सपनइत छी जे
छड़ी-बेंत सभ फेकथि दूर
बेसी छुट्टी कम इसकूल

साँझ घूरि घर सूती हम खूब
बेसी छुट्टी कम इसकूल।

कोनो सजाए नै



बदमस्ती हम खूब करी
आ हल्ला घरमे सेहो
बस्तुजात फेकी एम्हर
लोटी गर्दामे फेरो

कादो-कदवा बीच लोटाइ
छप-छप पानिमे भागी
मुदा सजाए कोनो नै भेटए
निअम एहेन बनाबी

रंग लगाबी कपड़ा-लत्तामे
हाथ-पएरमे सेहो
माए-बाबू भागि-भागि
पकड़ए चाहथि नै पकड़ाइ

आस-पड़ोसी करथि शिकाइत

माए-बाबू मानथि नै
खूब सुनाबी खूब बनाबी
मुदा सजाए भेटए नै

पंक्ति तोड़ि नवका पाँतीमे
सभ बच्चा जे जाएत
पुरना पाँतिक छोटका बड़का
अंतर तखन मेटाएत

ई देखत आ देत सजाए
मुदा तखन हे माइ
टूटत पाँति नव बनत कोना
सजाए भेटत जे दाइ

द्वेष मुदा नै राखी ककरोसँ
मुदा करी खूब बदमस्ती
धार जेना बहैए आगू दिस
हमहूँ बढ़िते जाइ

भेक जेना भदबरियामे
टर्-टर् गीत गाबए
हम गाबी भरि साल
मुदा सजाए कोनो नै भेटए

बरखा भीजी



बरखा भीजी नाची झूली
छप-छप पानिपर उड़ी चली
हाथक थाप चलाबी ओइपर
लगा देबै हम उड़ी-बिड़ी

भेल उकासी नाक बहैए
बरखा भीजि बसात सिंहकैए
कुहेसमे जे सूर्य उगैए
गिदर-गिदरनीक बियाह करबैए

बर्खा बुन्नी रोकत किछु नै
अप्पन जिद्द मनाबी
एकटा आर अछार आएल अछि
चलू घूमि कऽ आबी

बरखा गीत



छहोछित्त आम पेने छी,
बरखामे नाचि थाकल छी।
रोइयाँ भुटकै, बसात सिंहकै,
हपसि-हपसि आम खाइत छी।

बरखाक बुन्न मुँहमे लोकी,
सात रंगक धनुख निहारी।
पनिसोखा संग पाँति बनाबी,
गाछक डार धरि हम चढ़ी।

पानि झमझम, आम खसै गाछसँ,
सात-रंगक बुलबुला उड़ैत।
खेतक धार झझा कऽ बहै,
हम कात-कात दौड़ैत।

बीआ-बालि लऽ खेत जाइ छी,

बड़द धीरे-धीरे घूमै।
रस्ता भरि आम बिछल भेटै,
भीजल पएर माटि चूमै।

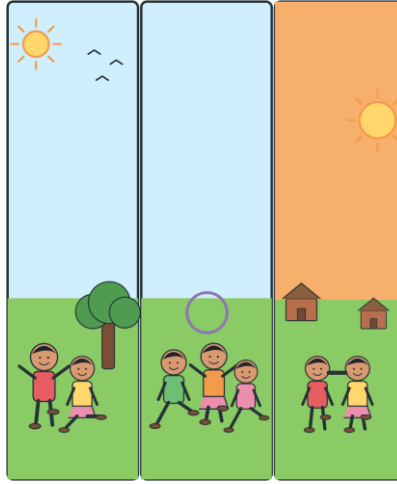
वनफूल सभ मिलि बिछाड़ छी,
रंगबिरंगक कीड़ी देखी।
वनक जीव अपन सहोदर,
छोटो प्राणक रक्षा सीखी।

बरखा मासक अकास गहिर,
उनचासो बसात बहय।
आली-पाली घूमैत हँसैत,
मोनक घोड़ा आगाँ रहय।

तरतड़ा बरखा फेर बरसल,
कियो रोकए, कियो टोकए?
हम तँ भीजल पात सन चमकी,
मोनक गीत के रोकए?

बाबी आँचरमे ओट दैत छथि,
अपनहि भीजि हमरा बचबैत।
कोरे पएर पटकि हम हँसैत,
लोक देखथि, बाबी मुसकैत।

भरि दिन खेली-धूपी



हे कोइली, हे कोइली, ओमक बियाह केम्हर?
बजैत-बजैत दौड़लहुँ सभ पच्छिम भर।
चम्पड़ रौदमे खेली-धूपी, धूरि उड़ाबी,
खेतक आरि, गाछक छाँह, सभठाम दौड़ि जाबी।

आइ कोनो टोका-टोकी खेलक बीच नै,
संगी सभक हँसी सुनि मोनमे रहय क्लेश नै।
कौटंग बनि कखनो नाची, कखनो घुरघुर घूमी,
हँसीक झोंका उठल कि सभ पेट पकड़ि कऽ झूमी।

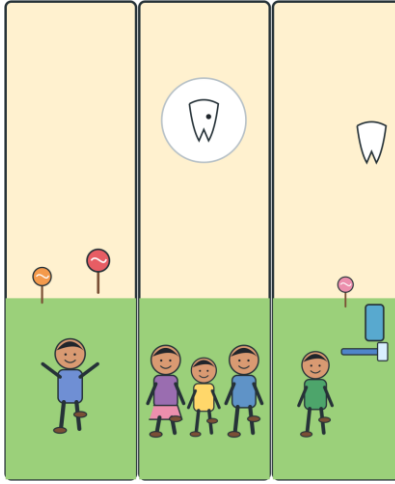
कियो घिरनी घुमबैत अछि, कियो चित्रपतंग उड़ाबय,
कियो माटिक छोट घर दुआरि लग बनाबय।
कियो गाछक पात गिनैत, कियो चिड़ै निहारय,
कियो पानिक छोट धारमे नाडट पएर उतारय।

दुपहरिया ढलि गेल, मुदा खेल कतऽ थमय?

साँस धुकधुक करए, तइयो पएर आगाँ गमय।
आँखिमे चतोचरन लागल, जगत नव देखाइ,
नव-नव बाटक जिज्ञासा मोन भीतर जागाइ।

साँझ परल, गाछक छाह धीरे-धीरे लम्बाइ,
घरक बाटपर हँसैत-हँसैत सभ घूरि आइ।
माए दुआरि ठाढ़ छथि, नेह भरल हुनक आँखि,
भरि दिन खेली-धूपी, आब निन्न देत पाँखि।

लवनचूश चूसी भरि दिन



लवनचूश चूसी भरि दिन,
मुँहमे घुलय मिठास।
कुरकुड़ काटि खाइत चाही,
दाँत कहय—“बस, आब!”

माए-बाउ कहथि, “धीरे खाउ,
बेसि मिठास नीक नहि।”
हम तँ रंग देखिते लोभाइ,
मोन कहए—आर एक चाही!

चूसि-चूसि जखन थाकी,
कुरकुड़ाइले मोन अकुलाय।
भाए-बहिन किचकियथि हमरा,
हमहुँ हुनका खूब हँसाय।

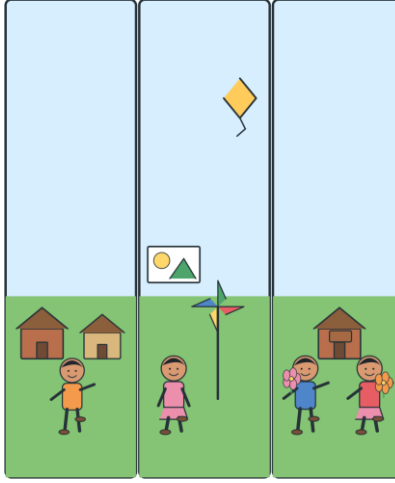
दाँतमे कीड़ी घर ने करए,

माए फेर बुझबैत छथि।
राति सुतए सँ पहिने सभकेँ,
दाँत माँजि देबैत छथि।

एकटा लवनचूश, संग जल,
फेर खेलक आँगन।
मिठास रहय, दाँत रहय नीक,
एहने होय विधान।

लवनचूश चूसी भरि दिन—
सपन एहन आब नै धरब।
स्वादक संग अपन देहक,
रखब हम नीक सुधि।

जे मोन भावै से करब



जे मोन भावै से करब,
हम खेलमे जगत धरब।
माटिक घर हो, बालूक घर,
दुनूमे सपन भरब।

माटिक घरमे गमक रहय,
बालूक घरमे धार।
एकटा टिकय बरखा धरि,
एकटा लहरिक पार।
टुटि गेल तँ फेर बनत,
साहस किएक मरब?
जे मोन भावै से करब,
हम खेलमे जगत धरब।

कागच पर चित्र बनाबी,
रौद पर रेखा खींची।

छाँह जँ सरकि आगाँ जाए,
तकरो संग हम खींची।
सूरुज चलय तँ हमहुँ चलब,
गीतक बाट पकड़ब।
जे मोन भावै से करब,
हम अपन बाट गढ़ब।

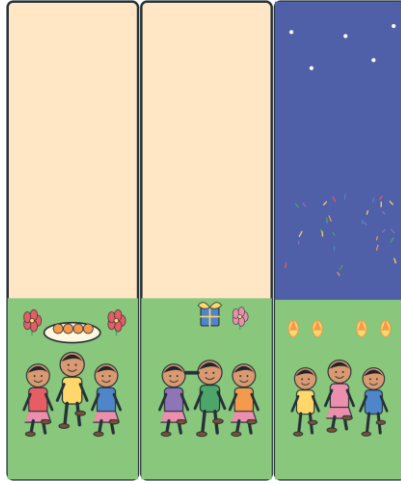
माए कहथि—“नीक केलहुँ”,
माटि लागल हाथ निहारि।
काज छोट हो, काज पैघ हो,
मेहनत देत उजियारि।
घिरनी घूमय, चित्रपतंग,
अकासक अँचरा चढ़ब।
जे मोन भावै से करब,
बान्हल रहि कऽ उड़ब।

कथा पुछय—“के गढ़लक हमरा?”
हम कहब—“सभ मिलि एतऽ।”
कागचक पात खाली, मोन रंगीला,
अक्षर नाचय ततऽ।
माटि, बालू, कागच, रौद,
सभसँ खेल रचब।
जे मोन भावै से करब,
हम अपन कथा गढ़ब।

मुदा मोनक इच्छा मानैत,
आनक मन नहि तोड़ब।

अपन घर बनबैत-बनबैत,
आनक घर नहि फोड़ब।
संगी संग नेहक काजमे,
हाथ मिला कऽ बढ़ब।
जे मोन भावै से करब,
हम नेहसँ जगत धरब।

सभ दिन जनमदिन मनाबी



सभ दिन जनमदिन मनाबी,
हँसीक बाती जराबी।
संगी सभ आबथि,
आँगन फूल सजाबी।

तालीक लय, गीतक धुन,
मखान-चूड़ा, गुड़-मिठाइ।
कोनो पैघ साज ने चाही,
नेह रहय तँ रस उपजाइ।

एक दीप सपन लेल जरय,
दोसर खेलक नाम।
तेसर कहय—सभ संग रहू,
चौठ कहय—बाँटू बिसराम।

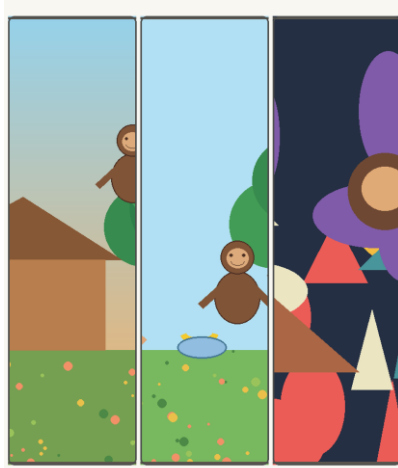
तोहर दिन आ हमर दिन,

सभ दिन सभक होय।
जेकर मोन उदास भेटय,
पहिने ओकरा हँसाय।

ककरो हाथ खाली ने रहय,
ककरो आँखि ने भीजए।
संगी संग बाँटल मिठास,
मोनक दूरी गलि जाइ।

सभ दिन जनमदिन मनाबी,
नेहक चिनगी जराबी।
संगी सभ आबथि,
घर-घर हँसी पसारब।

बानर



छप्पर ऊपर धप-धप करैत,
भोरहि आयल बानर।
खिड़की लग हम चुप्पे ठाढ़,
ओहो ताकय हमर दिस।

बानर हमरा निहारि रुकल,
हम ओकरे दिस ताकी।
क्षण भरि दुनू चुप्पे रहलहुँ,
के पहिने मुसकाए?

गामक कात पुरान पीपर
गत बरख कटि गेल।
डारि बिना ओ केम्हर जाए,
छप्पर ओकर ठाम भेल।

आँगन कात केरा राखल,

लोटांमे निर्मल पानि।
हम कहलहुँ—ई केरा खाउ,
पोथी-पाती नहि खसाउ।

गाछ लगाबी, छाँह बढ़ाबी,
फेर नहि छप्पर चढ़ू।
बानर डारि दिस कूदि गेल,
हमरो डर गेल उड़ि।

भयक पाछाँ बुझलहुँ आखिर,
ओहो खोजय अपन ठाम।
गाछ बचाबी, गाछ लगाबी,
तखन बचत ई गाम।

दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी



दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी,
थैली खरखर बाजय।
संगी सभकेँ देखि कऽ मोन,
बाँटि खाय लेल चाहय।

एकटा कुरकुर, दोसर कुरकुर,
नूनक गमक उड़ि आय।
माए हँसि कऽ बजली—जतेक
पेट सम्हारि सकय, ततेक खाय।

आलू, तेल, नूनक संग
बनल ई चटपट स्वाद।
मँगनी भेटल तँ सभटा नहि,
राखू अपन पेटक सुधि।

आधा हम, आधा संगी,

सभक हथेली भरि।
संग बाँटला स्वाद बढैछ,
हँसी उठै घर भरि।

थैली खाली भेल जखन,
पानि पीबि मुसकायल।
केरा-अमरूद बाँटि बुझलहुँ,
सबसँ मीठ बाँटि खेनाइ।

खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल



खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल,
झिलमिल पटल उघड़य।
कखनो तारा, कखनो नाव,
चित्रक बाट खुलय।

कुंजी दबितहि पात्र दौड़य,
घुमि जाए संसार।
बुद्धिक खेल, पहेली, खोज,
मोन लगय अपार।

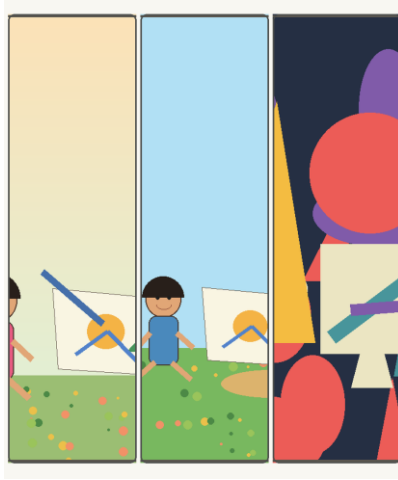
आँखि कहय—आब कनि थामू,
देह कहय—बाहर चलू।
आँगनमे गेंद घुमाबैत,
संगी संग कनि दौड़ू।

एक पहर कमप्यूटरक खेल,

एक पहर खुलल मैदान।
दुनूक लेल ठाम रहय दिनमे,
मोन प्रसन्न, देह सबल।

राति पड़ल तऽ पटल मिझायल,
आँखि पाबय विश्राम।
भोर उठि फेर पोथी, खेल,
नव दिनक नव काज।

नीक चित्र बनाउ छापू



नीक चित्र बनाउ, छापू,
कागत पर रंग नचाउ।
एक रेखा सँ बाट निकालू,
दोसर सँ घर बनाउ।

नील रंग बनि धार बहय,
हरियर बनि गाछ।
पीयर रौद खिड़की पसरय,
लाल फूलक नाच।

कखनो चिड़ै, कखनो बादर,
कखनो गामक बाट।
कखनो वृत्त आ तिकोनामे,
मोनक अनकहल गप।

मोनक भीतर जे लुकल छल,

रंग बनि बाहर आय।
रेखा-रेखामे कथा फूटय,
कागत गीत सुनाय।

नीक चित्र बनाउ, छाप्पू,
संगी सभकेँ देखाउ।
ककरो चित्रसँ होड़ नहि,
अपन रंगमे गाउ।

आउ खेलाउ कनियाँ पुतरा



आउ खेलाउ कनियाँ-पुतरा,
आँगन छोट सजाउ।
पातक थारी, फूलक भात,
हाँसि कऽ भोज कराउ।

माटिक घरक दूटा कोठरी,
खरक छोट छप्पर।
कनियाँ-पुतरा संग बसाबी,
दुआरि लग हरियर गाछ।

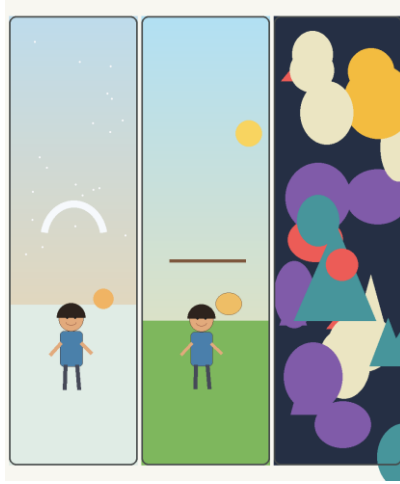
एकटा पुतरा पोथी लय,
एकटा गाछ लगाबय।
एकटा नहि कनियाँ घटमे
आँगन लेल पानि भरय।

सभ मिलि काज करय, ककरो

काज नहि छोट-पैघ।
एक बुहारय, एक सजाबय,
एक बनाबय घर-दुआर।

साँझ पड़ल तऽ पुतरा-पुतरी
कपड़ाक थैलामे सूतय।
भोर भए फेर नव कथा लऽ
आँगनमे सभ जुटय।

बरफ खाउ जाइमे



जाइक भोर, कुहेसाक चादर,
हाथ दुन्नू जेबीमे।
तइयो मोन कहय—बरफ खाउ,
हँसी उठय देहीमे।

ऊनक टोपी, गरम अंगौछा,
पएरमे मोट मोजा।
घामक कात कनि बैसलहुँ,
तइयो बरफक लोभ न जाए।

बरफक टुकड़ी जीहपर राखी,
देह सिहरि उठि जाय।
थोड़ेक स्वाद, फेर गरम दूध,
माए हँसि पियबाय।

जाइक दिनमे खेलो चाही,

रौदमे दौड़ी-धूपी।
बरफ खाउ थोड़ेक-मोड़ेक,
देहक सुधि नहि भूली।

रातिमे अबेर धरि जागू भोर उठू देरीसँ



रातिमे अबेर धरि जागल,
भोर उठल देरिसँ।
आँखि भारी, पएर अलसायल,
दिन चलए अधूरिसँ।

तारा गिनिते-गिनिते राति,
पोथी हाथमे रहि।
शरीर आपहि कहय—आब
निन्नक बाट गहि।

माए कहथि—राति विश्रामक,
भोरक अपन पुकार।
समय सँ सूतू, समय सँ उठू,
तखन दिन उजियार।

भोरक रौद खिड़की चुमए,

चिड़ै देत पुकार।
पूरा निन्न जँ आँखि पाबय,
मोन रहय तैयार।

सुरुज जेकाँ बरहम घूमै छथि



कारी मेघक घोड़ा चढ़ि कऽ,
बरहम घूमै छथि।
लाल धोती, पाग, घनगर मोंछ,
अकास नापै छथि।

पीपर तर हम ठाढ़ निहारू,
मेघ बनय नव रूप।
कखनो घोड़ा, कखनो हाथी,
कखनो पंछीक रूप।

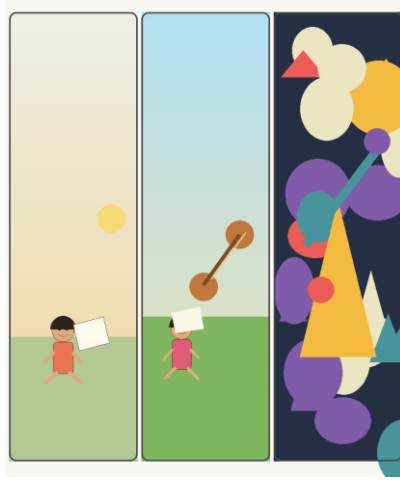
बाबी हँसि कहथि—मेघक भीतर
आँखि कथा रचए।
जे देखय से रूप बनाबय,
अकास चित्र खिचए।

सुरुज बादर बीच सँ झाँकय,

सोनक धार बहाय।
बरहम जेकाँ मेघक छाह,
दूर दिशामे जाय।

साँझ पड़ल तऽ रूप सभ गलि,
अकास भेल निर्मल।
मोनक चित्र रहि गेल भीतर,
सपनमे झलमल।

सरस्वती मेधा



सरस्वती, हृदय निश्छल करू,
वाणीमे मधुर उजास।
वीणा, पोथी, अक्षर-माला,
ज्ञानक खोलू आकाश।

काव्य, नृत्य, सङ्गीत, कला,
मोनक शक्ति जगाउ।
जिज्ञासाक निर्मल धारासँ,
अज्ञानक धूर बहाउ।

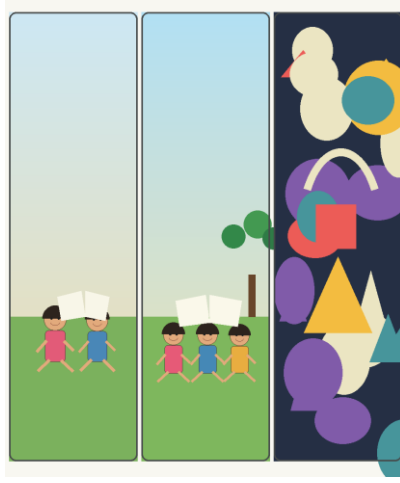
मेधा केवल कंठस्थ नहि,
प्रश्न करबाक नेह।
सोचि-बुझि जे सत्य खोजय,
सेही ज्ञानक गेह।

हाथ लिखय, आँखि पढ़य,

कान सुनय सभ गप।
विनय संग विद्या रहय,
तखने उज्जर बाट।

सरस्वती, हृदय निश्छल करू,
मेहनतिक बल दीअ।
ज्ञान बाँटि कऽ सभ संग बढी,
एहने वरदान दीअ।

बाजू मैथिली



पढ़ू मैथिली, लिखू मैथिली,
घर-आँगनमे बाजू।
मायक बोली, लोकक स्मृति,
मोनक दीप जराउ।

आरोह-अवरोह स्वरक भीतर,
कोमल-कठोर मिठास।
गामक गप, पुरखाक कथा,
गीतमे जियत इतिहास।

पोथी, नाटक, गीत, विज्ञान,
सभमे एकर ठाम।
नव शब्द गढ़ू, पुरान सहेजू,
जगत धरि लिअ नाम।

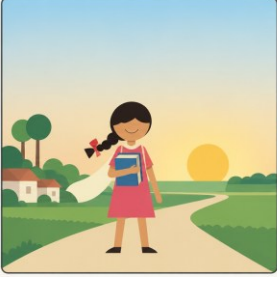
मैथिली बाजब लाज नहि,

एहि मे मोनक मान।
आन भाषा सभक आदर करैत,
राखू अपन भाषाक मान।

घर सँ विद्यालय, मंच सँ जाल,
सभठाम एकर गूँज।
अन्हार गहरमे शब्दक दीप,
नव पीढ़ी लेल पूँज।

संग मिलि काज करू अहर्निश,
नेह बनय आधार।
बाजू मैथिली, लिखू मैथिली,
एहिमे हमर संसार।

हम्मर माए



दूध पियाबथि, रगड़ि नहाबथि
नेह सँ साजि पठाबथि इसकूल
बस-अट्टा धरि संग पहुँचबथि
साइकिल सिखबामे बनथि अनुकूल
पाछू-पाछू सावन-छाँह सन
चिन्ता सभ अपन माथ लए चलथि
कोरा लऽ सड़क पार कराबथि
भीड़-भाड़मे डर कदापि नहि पलथि
बगैचा घुमाबथि, गीत सुनाबथि
दुख लगिते अँचरा मे ढाँकि
दिबरी जरा कऽ पढ़बथि साँझे
माए हमर जीवनक कोमल पाँखि

अमृत पुत्री



हम अमृत पुत्री, अडिग संकल्पित
सत्यक बाट पकड़ि आगाँ बढब
नेहक जोत जगा दसों दिस
श्रमक फुलवारी नित नव गढब
कीर्ति दहोदिश फैलब तखने
जँ मनमे अटल विश्वास रहत
कष्टक सागर भारी कोना
जँ सेवा-शक्ति हमर साँस रहत
स्वीकारल काज नहि छोड़ब
दीन-दुखीक संग रहब सदिखन
लोक-हिते जीवन अर्पब हम
एहने चमकत अमृत-चिन्ह

हे नाह चल आगाँ



चन्द्रक किरण सोझाँ झरैए
आकाश-गंगा बाट देखाबै
उकापतंग सन तेज लऽ
मोन निरन्तर आगाँ धाबै
सागर छूबयक लालस जागै
खेत-पोखरिक हरियर बोल
धरतीक गन्ध सनेस पठाबै
खुलि जाए मनक सभे डोल
ठाढ़ रहू नहि, पएर बढ़ाउ
दूर दिगन्तक दुआर खुलत
हे नाह, चल आगाँ निडर होउ
नव दिन तोहर बाट तकत

ध्येय पथिक साधक



ध्येय-पथक साधक छी हम
कार्य-पथक नेम निभाबी
चन्द्र, तारा, सुरुजक ज्योति सँ
अन्तरमन उजियार बनाबी
कुमार्ग, असत्य, दर्प, गर्व कै
कबहुँ ने देब निकट आबि
दैन्य, शोकक धूसर बादर
साहस-श्वासे देब उड़ाइ
पद दृढ़ राखि आगाँ बढ़ब
देश-धराक हित काज करब
कागज-जहाज, फूलक माला सँ
सपनक सेतु सभ संग धरब
ध्येय-पथक साँच साधक बनि
लोकक हितमे जीवन दऽब

मेघ बरसि गेल



मेघ बरसि गेल, कृषक प्रसन्न
बीआ बाउग, हर जोतए खेत
धरतीक कोरा फेनु रसधारि
बरखाक नेहँ धुलल अतीत
कादो-भिजल पएरक गन्धसँ
उमगि उठल गामक प्राण
रोपनी-गीत हवा मे तैरल
हरियर होमय लागल धान
बड़द चलल, श्रमक नोर झरल
तैयो मनमे आनन्द अपार
बरखाक छींटा पड़िते फेर
जीवन भेटल नव आधार

स्वागतम



बिना भेदक ई आँगन,
सभक लेल खुलल अछि बाट,
ने ककरो दर्प, ने ककरो गर्व,
ने ककरो संग कटु गप।

भोर उठी, मुँह-हाथ धोई,
पोथी खोली पाठ पढ़ी,
खेलक बेर खेती-धूषी,
काजक बेर काज करी।

कुकुर भुकए, कुकुड़ बाजए,
चुनमुनी चहकै डारि,
सभ स्वर मिलि कहए स्वागतम,
आउ, बनाउ नेहक बारी।

धीर बनू, वीर बनू,
शील धरू मन-प्राण,
भीर पड़य तँ हटब नहि,

हाथमे हाथ धऽ चलू आगाँ।

बड़द करैए दाउन ने यौ



हाथी अगत्त, पिछू, थाइत, माइल बिरि
हिर्र-हिर्र सुग्गर चलू संग घर घुरि
ती-ती परबा उड़ि गेल ऊपर
लिह लिह बकरी घास तूँ खो
बड़द करैए दाउन ने यौ

अतू कुकुड़ कुत-कुत डॉगी
कैटी पिसू-पिसू, आएत की?
चेहै-चेहै सुनि पारा दौगल,
भागी छोड़ि बाट हम ताकी
अर्र बकरी घास तूँ खो
बड़द करैए दाउन ने यौ

ढेहै-ढेहै कऽ नहि खौँझाबू
साँढ़ आओत खरिहानमे यौ
आव ठामे रे हे, हौरे हौ
बड़द करैए दाउन ने यौ

अकुलाइत सुर

किशोर गीत-गजल संग्रह



किशोरावस्थाक अकुलाहटि, सपना आ पहिल-पहिल अनुभूतिकें गीत आ गजलक
स्वरमे बान्हल ई संग्रह नव पाठकवर्गक हृदयक भाषा बजैत अछि—मैथिलीक
मिठासमे डूबल, लय आ छंदक संग सजल।

— गजेन्द्र ठाकुर

वि दे ह अन ला इन



www.videha.co.in
मुख्य जालवृत्त



videha-ejournal.github.io/videha
अभिलेखागार (GitHub)